शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 5   1 दिसम्बर, 2016

(मार्गशीर्ष-पौष, विक्रम संवत् 2073)

संरक्षक
मुकुन्द कुलकर्णी
प्रो.के.नरहरि

❖

परामर्श
डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल

❖

सम्पादक
प्रो. सन्तोष पाण्डेय

❖

सह सम्पादक
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी
भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल
प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय
डॉ. नाथू लाल सुमन
डॉ. एस.पी. सिंह
डॉ. ओमप्रकाश पारीक

❖

प्रबन्ध सम्पादक
महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक
बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी
बसन्त जिन्दल
नौरंग सहाय भारतीय
कार्यालय प्रभारी
आलोक चतुर्वेदी : 9782873467

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राज.) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053
दूरभाष : 011-22914799

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/-   वार्षिक शुल्क 200/-
आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक
में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल
का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा ❑ डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा

यह सरस्वती देवी की ही अनुकम्पा है कि आज अनेक विद्यालयों और पाठशालाओं में छात्राओं की संख्या छात्रों से कम नहीं होती। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय स्तर पर भी स्त्रियाँ पुरुषों के समान बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में मंत्री के रूप में सहभागी बनती हैं तथा विदेशों में जाकर भारत का पक्ष विवेकपूर्वक प्रस्तुत करती हैं। नारी-सशक्तिकरण के वर्तमान युग में अब नारी के पिछड़ेपन की बातें करना निराधार है। अब तो पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि नारी-जीवन का भविष्य उज्ज्वल है। सभी उच्च विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में रीडर और प्रोफेसरों के पदों पर नारियाँ छायी हुई हैं।

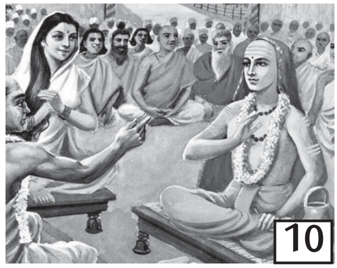

10

अनुक्रम

4.	बालिका शिक्षा : भावी परिवार का सुदृढ़ आधार	- सन्तोष पाण्डेय
6.	वैदिक काल में स्त्री शिक्षा	- प्रो.अल्पना कटेजा
8.	स्वामी विवेकानन्द और नारी-सशक्तिकरण	- प्रो. सीताराम व्यास
12.	समत्वभाव की गंगोत्री : वैदिक नारी	- दीनानाथ बत्रा
14.	ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा	- ममता डी. के.
15.	बालिका शिक्षा से ही सुदृढ़ होंगे - परिवार	- डॉ. रेखा भट्ट
17.	चतुर्दिक क्षेत्रों में बढ़ता महिला प्रभाव	- प्रो. मधुर मोहन रंगा
21.	शिक्षित नारी, परिवार व राष्ट्र की सुख-समृद्धिकारी	- बजरंग प्रसाद मजेजी
24.	परिवार बचा तो राष्ट्र बचेगा	- विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी
26.	परिवार संस्था की सार्थकता	- डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
29.	सदैव आवश्यक महिला शिक्षा	- मोहम्मद शहजाद
34.	बड़े नोटों का विमुद्रीकरण एक साहसिक फैसला	- सन्तोष पाण्डेय
37.	महिमा तेरी अद्भुत जग में..........	- भरत शर्मा 'भारत'
38.	गतिविधि	

Women and Education ❑ Dr. TS Girishkumar

Ancient Bharatiyas did not treat woman as a different category from man, as Plato did in Greece. For us, both woman and man are integral part of complete whole which is exhibited through Bharatiya presentation of "Ardhnariswara". (We have many Ardhnariswara temples through the length and breadth of our nation). For us, knowledge is for all those who are interested and capable of, man or woman does not matter. In our present situation, we have to continuously make serious efforts towards bringing women education at par with men, as women in Bharat were suppressed for over a thousand years.

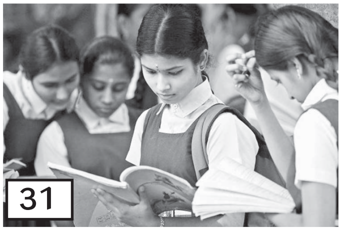

31

संपादकीय

बालिका शिक्षा : भावी परिवार का सुदृढ़ आधार

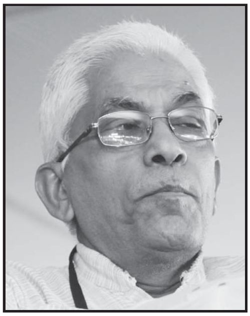

महिला सशक्तीकरण आज भारतीय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सरकार व समाज भी इससे भली भाँति परिचित है। महिला विकास, सुरक्षित मातृत्व व बाल विकास महिला शिक्षा की व्यापक योजनायें लागू की गई है। बालिकाओं को शिक्षा में बनाये रखने के लिये छात्रवृत्ति, छात्रावास आवासीय विद्यालय, अनेक प्रेरणा योजनायें यथा नि:शुल्क पुस्तक वितरण, साइकिल व स्कूटी प्रदान करने की योजना प्रभावी बनाई गई है। हाल ही में प्रभावी बनाई गई 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना का तेजी से असर हो रहा है। इससे विश्वास किया जा सकता है कि निकट भविष्य में ही भारत महिला शिक्षा में अन्य विकसित देशों के समकक्ष होगा। सम्पूर्ण देश लाभान्वित हो सकेंगे।

❑ **सन्तोष पाण्डेय**

शिक्षित महिलाएँ आज के प्रतिस्पर्द्धी युग में भी सुदृढ़, सुख समृद्धि व शांति से परिपूर्ण परिवार की प्रथम आवश्यकता मानी जाती हैं। बाल्यकाल से ही दी गई गुणवत्तापूर्ण व संस्कारवान बनाने वाली शिक्षा में दीक्षित महिलाएँ ही परिवार का आधार बन कर समाज को दिशा प्रदान करने व सुदृढ़ बनाने में योग देती हैं। लैंगिक समानता व महिलाओं को प्रगति के समान अवसर प्रदान करने वाला समाज ही तीव्र गति से गतिशील होता है व प्रगति करता है? भारत में अनादिकाल से ही नारी को परम सम्माननीय माना गया है। उन्हें समाज में समान शिक्षा और प्रगति के समान अवसर प्राप्त थे। वे नैतिक व सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक थी, उन्होंने सामाजिक व सांस्कृतिक उन्नति में महती भूमिका निभायी। शिक्षित/विदुषी महिलाओं की भूमिका परिवार से ही प्रारम्भ हो जाती है। बालक-बालिकाओं की प्रथम शिक्षक के रूप में वह उन्हें परिवार के सदस्यों का प्रथम परिचय कराती, मातृ-भाषा में संवाद की शिक्षा देती और शनै: शनै: उनमें नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश कराती हैं। बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व व स्वभाव की निर्मात्री बनती हैं। परिवारों की प्रतिष्ठा, समाज में स्थान, प्रगति की परम्पराओं का पालन सभी कुछ प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत: महिलाओं पर ही निर्भर रहा। भारतीय गौरवशाली सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक मूल्यों वाली पारिवारिक परम्पराओं से युक्त परिवार व्यवस्था जिसमें महिला की केन्द्रीय भूमिका थी के कारण भारत विश्व का सिरमौर बन सका। परिवारों में महिलाओं की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण आज भी भारत सांस्कृतिक गुरु माना जाता है। भारत आध्यात्मिक व भौतिक प्रगति के सर्वोच्च स्थान पर रहा। परन्तु मध्यकाल में विदेशी आक्रान्ताओं का शिकार बनने व दासता की जकड़न के युग में भारतीय समाज अन्तर्मुखी बन गया। परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में भारी गिरावट आई। स्त्री शिक्षा इसका प्रथम शिकार बनी। महिलाओं व बालिकाओं के सम्मान की रक्षा के लिये महिलाओं की भूमिका बदली। आर्थिक पराभव के कारण परिवार व्यवस्था कमजोर पड़ी। शिक्षा से वंचित महिलाओं की परिवार में केन्द्रीय भूमिका कमजोर हुई। महिलाएँ औपचारिक शिक्षा से वंचित हुई परन्तु आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों का उतना क्षरण नहीं होने के कारण परिवार को सुदृढ़ बनाने में भूमिका महत्त्वपूर्ण बनी रही। दासता की अवधि बढ़ने के साथ ही महिलाओं को घर के अन्दर ही सीमित कर दिया गया। महिला शिक्षा में तीव्र गिरावट के कारण सामाजिक कुरीतियों व अन्धविश्वासों ने परिवारों को कमजोर बनाया। लैंगिक असमानता व अवसरों से वंचित करने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी। महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता घटी। बाल विवाह, सती प्रथा जैसी कुप्रथायें व्यापक रूप से चलन में आयीं। परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर रहने से समाज कमजोर बना, जिससे अन्तत: राष्ट्र भी कमजोर बना। सुदृढ़ आध्यात्मिक-सांस्कृतिक व नैतिक पृष्ठभूमि के कारण राष्ट्रीय एकता खण्ड-खण्ड होने से बची रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत घोर गरीबी, बेरोजगारी, बाल-विवाह, समाज में अशिक्षा के कारण महिलाओं की कमजोर स्थिति, कन्या के बजाय पुत्र प्राप्ति की प्राथमिकता, दहेज प्रथा व अन्य ऐसी ही अनेक कुप्रथाओं के कारण कमजोर परिवार व्यवस्था, समाज-व्यवस्था व राष्ट्र उस समय था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त नये संविधान में लैंगिक समानता के साथ-साथ सभी प्रकार की समानता की व्यवस्था की गई। मौलिक अधिकारों द्वारा इसकी गारंटी दी गई। इस समानता की प्राप्ति शिक्षा के प्रचार व प्रसार द्वारा ही सुनिश्चित की जा सकती थी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार व सुधारों के अनेक कार्यक्रम अपनाये गये। प्रौढ़ शिक्षा व महिला शिक्षा व उत्थान पर विशेष जोर रहा। महिलाओं के उत्थान व सशक्तीकरण के अनेक

विशेष कार्यक्रम प्रारम्भ हुये। देश में पुन: आर्थिक प्रगति के गति पकड़ने से व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का दौर प्रारम्भ हुआ। रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने की दृष्टि से नागरीकरण (urbanisation) की प्रवृत्ति बढ़ी। संयुक्त परिवार व्यवस्था जो सामाजिक सुरक्षा व भावनात्मक एकता का सबसे बड़ा माध्यम थी, शनै: शनै: बिखरने लगी। एकल परिवार (nuclear family) व्यवस्था तेजी से बढ़ी। एकल परिवारों के प्रचलन से संयुक्त परिवारों की तुलना में पति-पत्नी को अधिक स्वतंत्रता मिली, जिसके उपयोग ने अनेक महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों को आगे बढ़ाया। परिवार का आकार छोटा होने लगा, जो आज एक ही बच्चा या एक पुत्र एक पुत्री के मानक में बदल गया है? संयुक्त परिवार के कमजोर पड़ने से सामाजिक व भावनात्मक सुरक्षा कमजोर होने की बड़ी सीमा तक क्षतिपूर्ति छोटे आकार के परिवारों में अपेक्षाकृत आरामदायक जीवन स्तर शिक्षा प्राप्ति के श्रेष्ठ अवसर व बालिका शिक्षा के तेजी से प्रसार के रूप में हो सकी। बालिकाओं के अधिक शिक्षित होने से रोजगार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। महिलाओं को प्राप्त आर्थिक आत्मनिर्भरता ने परिवारों में इनकी भूमिका को पुन: महत्त्वपूर्ण बनाया है।

भारत द्वारा उदारवादी नीति को अपनाने तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने के निर्णय के पश्चात् देश ने आर्थिक-सामाजिक विकास की तीव्र गति पकड़ी है। वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति ने सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को नई दिशा व ऊँचाई दी। शिक्षित-प्रशिक्षित महिलाओं की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। रोजगार में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ी है। आज समाज व अर्थव्यवस्था का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं हो। शिक्षा व प्रशिक्षण के कारण पुन: महिलाएँ परिवार में केन्द्रीय भूमिका में आ रही है, जिससे परिवार सुदृढ़ हो रहे हैं। बच्चों का लालन-पालन व शिक्षा की सुविधा का विस्तार हुआ है। यह भी एक तथ्य है कि जहाँ ये सुखद परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वहीं एकल परिवारों में पति-पत्नी दोनों के रोजगार व व्यवसाय में व्यस्त रहने से जो संस्कार व नैतिक मूल्य एक माँ जो कि प्राय: शिक्षित महिला होती है, देने में वैसी भूमिका नहीं निभा पा रही है। भौतिकतावादी व भोगवादी प्रवृत्ति बढ़ने से कार्य संस्कृति प्रभावित हो रही है, नैतिक व सामाजिक बल शिथिल हो रहा है। इन सबके बावजूद लैंगिक समानता, अवसरों की समानता बढ़ रही है, जो स्वस्थ संकेतक है। रोजगार में बढ़ती महिला भागीदारी निरन्तर सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में सहायक हो रही है। यह सभी कुछ महिलाओं के शिक्षित प्रशिक्षित होने के कारण संभव हो सका है।

भारत आज भी मूलत: गाँवों का ही देश है। आर्थिक विकास के कारण गाँवों में सुविधाओं व आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ है। गरीबी अपेक्षाकृत कम हुई है। शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ है। शिक्षा के अनेकानेक कार्यक्रमों विशेषत: शिक्षा का अधिकार कानून बनने के बाद 6-14 वर्ष के बालक-बालिकाओं के स्कूल जाने का प्रतिशत बढ़ा है और लगभग पूर्णता की ओर अग्रसर है। ग्रामीण समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा के बढ़ते महत्त्व को समझने लगा है। स्कूलों में नामांकन तो बढ़ा है, परन्तु शिक्षा व्यवस्था के दुर्बल ढाँचे व अध्यापकों के अभाव के कारण कुछ समय पश्चात् ही स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति में गिरावट नहीं आ सकी है। बालिकाओं में स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति उच्च प्राथमिक व सैकण्डरी स्तर पर अभी भी बनी हुई है। बालिका विद्यालयों में शौचालयों का अभाव स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति का बड़ा कारण है। आठवीं कक्षा तक किसी को भी अनुत्तीर्ण नहीं करने की नीति के कारण 'सीखने का स्तर' (Learning Levels) अत्यन्त नीचे जा चुका है। ग्रामीण स्कूलों में निजी शिक्षण संस्थाओं के प्रवेश से भी स्थिति में उल्लेखनीय सुधार दिखायी नहीं देता है। कमजोर पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या ने महिलाओं को शिक्षित करने व पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम के अभाव से शिक्षा के प्रसार के प्रभाव से समाज वंचित रहा है। परिवारों में महिलाओं की स्थिति सशक्त बनाने के लिये आवश्यक है कि महिला शिक्षा में पारिवारिक आवश्यकताओं व अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था बनाई जाए व उन्हें कौशल विकास से दक्ष बनाया जाए। ग्रामीण शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो उनके सामाजिक स्थान को ऊँचा बना सके। उन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक व नैतिक गुणों से परिपूर्ण बनाने वाली शिक्षा प्रदान की जाए। ऐसे गुणों से परिपूर्ण शिक्षा व्यवस्था व पाठ्यक्रम यद्यपि सभी के लिये आवश्यक है, परन्तु बालिका शिक्षा में इनकी महती आवश्यकता परिवार में महिलाओं की केन्द्रीय भूमिका के कारण अधिक महत्त्व रखती है। महिला सशक्तीकरण आज भारतीय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सरकार व समाज भी इससे भली भाँति परिचित है। महिला विकास, सुरक्षित मातृत्व व बाल विकास महिला शिक्षा की व्यापक योजनायें लागू की गई है। बालिकाओं को शिक्षा में बनाये रखने के लिये छात्रवृत्ति, छात्रावास आवासीय विद्यालय, अनेक प्रेरणा योजनायें यथा नि:शुल्क पुस्तक वितरण, साइकिल व स्कूटी प्रदान करने की योजना प्रभावी बनाई गई है। हाल ही में प्रभावी बनाई गई 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना का तेजी से असर हो रहा है। इससे विश्वास किया जा सकता है कि निकट भविष्य में ही भारत महिला शिक्षा में अन्य विकसित देशों के समकक्ष होगा। सम्पूर्ण देश लाभान्वित हो सकेंगे।❑

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा

वैदिक काल में शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति उन्नत एवं गौरवपूर्ण थी एवं उन्हें शिक्षा संबंधी अधिकार पूर्णतः प्राप्त थे। विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं का अध्ययन करते समय हम जितना ही प्राचीनकाल की ओर जाते हैं, नारी का समाज में उतना ही असन्तोषजनक स्थान पाते हैं किन्तु हिन्दू सभ्यता इस दृष्टि से अनोखी है क्योंकि इसमें हम जितना ही प्राचीनकाल में जाते हैं, स्त्रियों का स्थान उतना ही महत्त्वपूर्ण पाते हैं। कालान्तर में, सामाजिक व्यवस्था में विकृति तथा पक्षपात एवं एकांगिता की स्थितियाँ उत्पन्न होती गई, तब नारी अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगने लगे। वैदिक युग में नारी की प्रत्येक स्तर पर सहभागिता की स्वाभाविक अभिव्यक्ति धर्मग्रन्थों में स्पष्ट उल्लिखित है।

❑ **प्रो.अल्पना कटेजा**

किसी भी संस्कृति की उच्चता की कसौटी स्त्रियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण होता है। वैदिक युग में स्त्रियों की क्रियाशीलता और ज्ञान के प्रमाण वैदिक साहित्य में भरे पड़े हैं, जिनसे उस युग में स्त्रियों की अत्यन्त उन्नत स्थिति ज्ञात होती है। साहित्य से यह भी स्पष्ट होता है कि उस युग में स्त्री और पुरुष में शिक्षा के विषय में कोई भेद नहीं था। उस कालखण्ड में स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा की अनुपम व्यवस्था थी और वे सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं राजकीय कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती थीं। स्त्रियाँ शैक्षिक जीवन के अतिरिक्त राज्य के चरित्र निर्माण, सुरक्षा एवं युद्धों तक में भाग लेती थीं।

अथर्ववेद में स्त्रियों के ब्रह्मचर्य अर्थात् ज्ञानोपार्जन के लिए गुरुकुल में जाने का उल्लेख है। कन्याएँ ब्रह्मचर्याश्रम में विद्याभ्यास करके विदुषी, मंत्र द्रष्टा एवं प्रखर वक्ता होती थीं। विश्ववारा, अपाला, मैत्रेयी, घोषा, काक्षीवती, वागाम्भृणी, रात्रि, भारद्वाजी, श्रद्धा, कामायनी तथा लोपामुद्रा आदि वैदिक युग की मंत्रद्रष्टा विदुषियों के मंत्र ऋग्वेद में विद्यमान हैं। भारतीय शिक्षित नारियों के इतिहास की एक लम्बी शृंखला है। जहाँ एक ओर महर्षि अत्रि के परिवार की ब्रह्मवादिनी विश्ववारा मन्त्रदृष्टा के रूप में विख्यात थीं, वहीं ऋषि कक्षीवान् की पुत्री घोषा ऋग्वेद के दो मण्डलों तथा अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा दो ऋचाओं की प्रणेत्री थी। राजा असंग की पत्नी रानी शाश्वती तथा ब्रह्मवादिनी अपाला अपने समय की विख्यात दार्शनिक महिला थीं। वैदिक साहित्य में पत्थावत्सि नाम की महिला का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उसे अध्ययन समाप्ति के बाद वाक् की उपाधि से विभूषित किया गया था। कौषीतकी ब्राह्मण तथा ऐतरैय ब्राह्मण में गन्धर्व गृहीता नाम की एक महिला का उल्लेख है, जिसने ज्ञान की एक विशेष शाखा में पाण्डित्य प्राप्त किया था। मिथिला निवासी याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी अपने समय की सर्वश्रेष्ठ दार्शनिकों में एक थीं। घोषा, विश्ववारा, अपाला और रोमशा आदि ऐसी ऋषिकाएँ थीं जिनका वेद पर पूरा अधिकार था। ब्रह्मदेवता के 24वें अध्याय में ब्रह्मवादिनी ऋषिकाओं की चर्चा की गई है-

इन्द्राणीचेन्द्रमाता च सरमा रोमषोर्वषे ।
लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शाश्वती।।
श्रीः लक्ष्मीः सार्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा।
रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्यीरिताः।।

धर्मशास्त्र के परिशीलन से यह ज्ञात होता है कि भारत में अन्य विद्याओं के अतिरिक्त धार्मिक, राजनैतिक, व्यावहारिक शिक्षा के साथ ही ललित

कला आदि की भी शिक्षा नारियों को अनिवार्य रूप से दी जाती थी। कन्या को ब्रह्मचर्य काल में अग्निहोत्र संध्या वन्दन आदि की शिक्षा दी जाती थी– **'यज्ञं दधे सरस्वती।'** वैदिक साहित्य में सामगान सुप्रसिद्ध है। कन्याओं को सामगान अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता था। उत्सवों में नारियों द्वारा सामगान किये जाने का वर्णन वेद में उपलब्ध है–

समुत्वा धीभिरस्वरन् हिन्वतीः सप्त जामयः।
विप्रमाजाविवस्वतः।।

मिथिला के प्रख्यात दार्शनिक मण्डन मिश्र की पत्नी अपने समय की अद्वितीय विदुषी थीं जिन्होंने उस युग के दो शीर्षस्थ दार्शनिकों, शंकराचार्य तथा मण्डनमिश्र के मध्य हुए ऐतिहासिक शास्त्रार्थ की मध्यस्थता निर्णायक के रूप में की थी। आचार्य वात्स्यायन का मत है कि प्रत्येक कन्या को सभी कलाओं की शिक्षा अनिवार्य रूप से देनी चाहिए। साहित्य, संगीत तथा कला विद्याओं में भी दक्ष भारतीय नारियों ने सहस्राब्दियों से अपना महत्त्वपूर्ण स्थान भारतीय समाज में प्राप्त किया था। इन सभी प्रमाणों से यह तथ्य पुष्ट होता है कि भारतीय नारी विधिवत् शिक्षा ग्रहण कर समाज में समुन्नति में अपना योगदान देती थी।

सर्वानुक्रमणिका में उल्लेख मिलता है कि ऋग्वेद के रचयिताओं में बीस महिला ऋषिकाएँ थीं। कतिपय ऋषिकाओं यथा– सुलभा, मैत्रेयी तथा वादवा के लिए नित्य प्रार्थना और दैनिक तर्पण के विधान का उल्लेख भी मिलता है।

विद्यार्जन के अधिकार के आधार पर स्त्रियों को दो श्रेणियों में बाँटा गया है– ब्रह्मवादिनी तथा सद्योवधू। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ जीवनपर्यन्त दर्शन तथा धर्मविज्ञान के अध्ययन में संलग्न रहती थीं, वे वेद अध्ययन के अतिरिक्त मीमांसा जैसे दुरूह विषय का भी अध्ययन करती थीं, जबकि सद्योवधू स्त्रियाँ सिर्फ विवाह तक विद्यार्जन करती थीं।

कात्यायनी, मैत्रेयी, गार्गी, मदालसा, वाचक्नवी जैसी ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ भी इस बात का प्रमाण हैं कि सर्वश्रेष्ठ विद्या के क्षेत्र में तत्कालीन नारियाँ अग्रणी थीं और उन्हें नारियों के बीच अपवाद नहीं, आदर्श माना जाता था।

कात्यायनी च मैत्रेयी गार्गी,
वाचक्नवी तथा।
एवमाह्य विदुर्बह्य तस्मात्
स्त्री स्त्रीग्रविद् भवेत्।

अर्थात् प्रत्येक स्त्री को कात्यायनी, मैत्रेयी, गार्गी, वाचक्नवी की भाँति ब्रह्मवादिनी होना चाहिए। यम–स्मृति में कहा गया है।

यथाधिकारः श्रौतेषु योषितां कर्मसुश्रुतः।
एवमेवानुमन्यस्व ब्रह्माणि ब्रह्मवादिताम्।।

अर्थात् जिस प्रकार श्रुति प्रतिपादित कर्म में स्त्रियों को अधिकार है, वैसे ही ब्रह्मविद्या की प्राप्ति का भी उन्हें अधिकार है। यमस्मृति में स्त्रियों के लिए प्राचीनकाल में मौजीबन्धन, वेदाध्ययन तथा गायत्री उपासना के प्रावधान की बात कही गयी हैः–

पुराकल्पे तु नारीणां मौजीबन्धनमिष्यते।
अध्यायपनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

'वशिष्ठ स्मृति' में भी स्त्रियों द्वारा गायत्री मन्त्र जपे जाने का विधान किया गया है।

ऋग्वेद में स्त्रियों के उपनयन संस्कार का वर्णन उनके शैक्षिक अधिकारों की उद्घोषणा करता है। यद्यपि उनके उपनयन संस्कार के नियम पुरुषों से कुछ सरल थे।

वैदिक काल के पश्चात् नारी उत्कृष्टता का सर्वश्रेष्ठ युग रामायण युग को कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण को विश्व का आदि महाकाव्य कहा जाता है। उसमें भी ऐसे अनेक विवरण हैं, जिनमें कि स्त्रियों द्वारा वेद मन्त्रों का उच्चारण करने, हवन–यज्ञ, सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र आदि करने का उल्लेख मिलता है यथा–

ततः स्वस्तययनं कृत्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी।

अर्थात् तब मंत्रों की ज्ञाता (तारा) ने अपने पति (बालि) की विजय के लिए स्वस्तिवाचक मन्त्रों का पाठ किया।

सीता का नियमित रूप से संध्या पाठ करना, कैकेयी का युद्धस्थल में महाराजा दशरथ की सहायता करना एवं एक क्षत्राणी के समान समय–समय पर आगाह करना इत्यादि प्रसंग उनकी व्यावहारिक बुद्धिमता को इंगित करते हैं। कैकेयी के लिए भी 'मन्त्रज्ञा' शब्द का प्रयोग किया गया है– **'तदा सुमन्त्रं मन्त्रज्ञा कैकयी प्रव्यवाच।'**

महाभारत में दासियों तक को चौसठ कलाओं में निपुण बताया गया है। महाकाव्य के विविध प्रसंगों में गौतमी, शाण्डिली, सुलभा, विदुला, प्रभासभार्या, अरुन्धती आदि विदुषियों को ज्ञान चर्चा में संलग्न दर्शाया गया है।

संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल में शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति उन्नत एवं गौरवपूर्ण थी एवं उन्हें शिक्षा संबंधी अधिकार पूर्णतः प्राप्त थे। विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं का अध्ययन करते समय हम जितना ही प्राचीनकाल की ओर जाते हैं, नारी का समाज में उतना ही असन्तोषजनक स्थान पाते हैं किन्तु हिन्दू सभ्यता इस दृष्टि से अनोखी है क्योंकि इसमें हम जितना ही प्राचीनकाल में जाते हैं, स्त्रियों का स्थान उतना ही महत्त्वपूर्ण पाते हैं। कालान्तर में, सामाजिक व्यवस्था में विकृति तथा पक्षपात एवं एकांगिता की स्थितियाँ उत्पन्न होती गई, तब नारी अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगने लगे। वैदिक युग में नारी की प्रत्येक स्तर पर सहभागिता की स्वाभाविक अभिव्यक्ति धर्मग्रन्थों में स्पष्ट उल्लिखित है। ❑

(प्राचार्या, महारानी कॉलेज,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर)

स्वामी विवेकानन्द और नारी-सशक्तिकरण

❑ प्रो. सीताराम व्यास

समाज को भेद-भाव और रूढ़ियों से मुक्त होकर नारी की स्वतंत्र सत्ता और महत्ता को मुक्त हृदय से स्वीकार करना होगा। तभी समतामूलक, समुन्नत समाज की स्थापना सम्भव होगी। उनका कहना है कि नारी ही परिवार, समाज की केन्द्र-बिन्दु है। पुनः अपनी प्राचीन परम्परा और मूल को मानकर नारी की महिमा को पहचानने की आवश्यकता है। शिक्षा, शील, संस्कार से युक्त नारी जब सशक्त होगी, तब भारत हर क्षेत्र में उन्नत होगा। अब शक्ति और भक्ति का युग आने वाला है, जो विश्व को अखण्ड ऊर्जा प्रदान करेगा। यह नारी ही शक्ति, भक्ति और प्रगति की वाहक बनेगी। ममता-मूर्ति यही शक्ति सब दुराचारों को समाप्त करेगी और हमारे पापों का प्रक्षालन भी करेगी। स्वामीजी का यह नारी चिन्तन ही भारत के भावी समुत्थान की मूल आधारशिला है।

भारत माता के एकनिष्ठ सेवक स्वामी विवेकानन्द ने भारत के अतीत, वर्तमान और भावी समाज का सुन्दर वर्णन अपने व्याख्यानों द्वारा प्रस्तुत किया है। स्वामीजी ने भारत के पुनरुत्थान पर विचार प्रकट करते समय नारी के उत्थान को महत्त्वपूर्ण माना है। उनके विचार भारत की नारी के सम्बन्ध में अब भी प्रासंगिक हैं। भारतीय समाज में आधुनिकता के आग्रह ने खतरनाक स्थिति पैदा कर दी है। आज भारत की परम्परागत परिवार-व्यवस्था और उसके मूल्यों को पिछड़ापन कहा जा रहा है। माँ, बहन को आदरणीय और पवित्र मानने की परम्परा को दकियानूसी बताया जाता है, मर्यादा, शील, सदाचार को छोड़ देने का नाम 'आधुनिकता' है। अब शालीनता लुप्त हो रही है। नग्नता ही आधुनिकता का मापदण्ड बन गया है। हम पश्चिम को कहते थे कि वे नारी को भोग की वस्तु मानते हैं, पर अब हमारा देश इस राह पर उनसे भी आगे बढ़ रहा है। अब स्त्री माँ और बहन नहीं रही; बाजार में बिकने वाली वस्तु है। हमारी परम्परा ने माँ को त्याग और ममता की मूर्ति माना है। मातृत्व ही समाज के रिश्तों को परस्पर जोड़ने वाला पवित्र सूत्र है। लेकिन वह सूत्र भी टूट रहा है। समाज अपनी अस्मिता को खो बैठा है। वेलेन्टाइन-डे मनाओ, गलबहियाँ डालो, खूब पियो-यह 'प्रतिशीलता' है। नैतिकता ढोंग है। एक हवाई कम्पनी ने कलैण्डर पर अर्धनग्न स्त्री की तस्वीर छापी है। यह कम्पनी अपने आपको गौरवशाली अनुभव करती है। पश्चिम की सभ्यता भारत में लिव-इन रिलेशनशिप जैसा अगरिमायुक्त सम्बन्ध लाई। इन सम्बन्धों से बच्चे का भविष्य सुरक्षित नहीं रह सकता है। दिल्ली गैंग-रेप की घटना के पश्चात एक बड़ी बहस चल रही है। ऐसी घटना क्यों होती है? इस पर मौलिक चिन्तन नहीं हुआ है। हमारी त्रासदी यह है कि हमारा सांस्कृतिक पतन हो रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर-संघचालक श्री मोहन भागवत जी ने सही वक्तव्य दिया कि भारत में बलात्कार नहीं होते हैं, इंडिया में होते हैं। श्री मोहन भागवत जी ने मौलिक बात कही, पर मीडिया ने उनके वक्तव्य को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया। भारत वह है, जो नारी को देवी-स्वरूपा मानता है। इंडिया में यह बात नहीं है। जो विचार श्री मोहन भागवत जी ने व्यक्त किये वे ही स्वामीजी के विचार हैं। ऐसी स्थिति में स्वामीजी के भारतीय नारी के सन्दर्भ में विचार उल्लेखनीय ही नहीं वरन् प्रेरणा देने वाले भी हैं। स्वामीजी का कहना कि हम प्राचीन भारत की नारियों को आदर्श मानकर ही नारी का उत्थान और सशक्तिकरण कर सकते हैं। अमेरिका-प्रवास में स्वामीजी ने भारतीय नारी पर अनेक व्याख्यान दिये।

भारत का आदर्श सीता, सावित्री और दमयन्ती आदि नारियाँ हैं। प्रत्येक भारतवासी भगवान् श्री रामचन्द्रजी और माता सीता के जीवन को आदर्श मानता है। भारत की प्रत्येक नारी की आकाँक्षा है कि वह अपने जीवन में सीता के समान पवित्रता, प्रेम और त्याग का अनुसरण करे। भारतीय नारी सहनशीलता, शुचिता, धैर्य आदि आदर्शों की मूर्ति है। भारत की हर कन्या की आकाँक्षा है कि वह सावित्री के समान बने, जिसके सतीत्व ने यमराज पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। स्वामीजी ने कहा कहा कि नारी शक्ति के बिना भारत का उद्धार नहीं हो सकता। भारत में पुनः शक्ति को जगाने के लिए दुर्गा, लक्ष्मी और माँ शारदा का अविर्भाव हुआ है। इनको केन्द्र मानकर हम देश को गार्गी, मैत्रेयी, दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसी नारियाँ दे सकते हैं। देवियों का निरादर भारत का अपमान है। नारी का उत्थान भारत का उत्थान है। स्वामीजी ने भारत के पतन का कारण मातृशक्ति का अपमान और उपेक्षा बताया है। अमेरिका में दिये गये उनके भाषण का अंश नीचे उद्धृत है- ''अमेरिका के पुरुष अपनी स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, इसीलिए ये सुखी, विद्वान, उद्योगी और प्रगतिशील हैं। दूसरी ओर, हम भारत के लोग स्त्री-जाति को अधम, परमहेय तथा अपवित्र कहते हैं। अतः हम लोग पशु, दास, अधम, हीन और दरिद्र हो गये।'' वर्तमान भारत में लिंग-भेद के कारण भ्रूण-हत्याएँ हो रही हैं- यद्यपि इस

कार्य को सरकार ने जघन्य अपराध माना है तथा इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। लड़कियों का अनुपात शीघ्रता से कम हो रहा है। अब लोग लड़कियाँ खरीदकर शादी कर रहे हैं। उनकी दशा चिन्तनीय है। घर से लड़कियों का भागना तथा एक ही गोत्र में शादी करना यह एक विचित्र मानसिकता बन रही है। समाचार पत्रों में प्रतिदिन यौनाचार और यौन-उत्पीड़न की घटनाएँ आती हैं। स्वामीजी ने 19वीं शताब्दी में नारी की दशा का जो उल्लेख किया है, वर्तमान में उसकी उससे भी अधिक दुर्दशा व्याप्त है। उस समय हम पराधीन और रूढ़ियों से जकड़े हुए थे, अब हम छद्म आधुनिकता व आरोपित प्रगतिशीलता से जकड़े हुए हैं। स्वामीजी ने सत्य कहा कि हम भारत के मूल आदर्शों को न छोड़ें। इन आदर्शों की नींव पर ही भारत का सुन्दर भविष्य सम्भव है। प्राचीन भारत की देवियाँ ही आज भी हमारी प्रेरणा स्रोत हैं।

शिक्षा के द्वारा समुन्नति के पथ पर अग्रसर करना ही स्वामी जी के नारी विषयक चिन्तन का सार है। स्वामीजी ने भारत आने पर भगिनी निवेदिता को कन्या-शिक्षा की व्यवस्था का दायित्व सौंपा था। भगिनी निवेदिता द्वारा स्थापित कन्या-विद्यालय अब भी कलकत्ता में विद्यमान है। स्त्रियों को धर्म, शिल्प, विज्ञान, गृहकार्य, स्वास्थ्य, रन्धन, सीना-पिरोना आदि सब विषयों का ज्ञान कराना उचित है। सीता, सावित्री, लीलावती, मीराबाई, के जीवन चरित्र कुमारियों को समझाकर उन्हीं की पद्धति पर अपने जीवन को गढ़ने का उपदेश दिया। साधारण स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार हुए बिना देश की उन्नति नहीं हो सकेगी। स्त्रियों को शिक्षा देकर उन्हीं की स्वेच्छा पर छोड़ देना होगा। इसके बाद वे स्वयं ही सोच-समझकर, जो उचित होगा करेंगी। लड़कियाँ विवाह कर गृहस्थी में लग जाने पर अपने पतियों को उच्च भाव की प्रेरणा और वीर पुत्रों को जन्म देंगी। शिक्षा देने पर स्त्रियाँ स्वयं बतायेंगी कि उनके लिये क्या सुधार जरूरी हैं। भारत की नारी अपनी समस्या का समाधान करने में सक्षम है। भारतीय नारियों के प्रति उन्होंने कहा था ''इस देश की नारियों से वही बात कहूँगा, जो पुरुषों से कहता हूँ। भारत में विश्वास करो और अपने भारतीय धर्म में विश्वास करो। शक्तिमान बनो, आशावान् बनो, संकोच छोड़ो .... भारत के लिए, विशेषकर नारी समाज के लिए पुरुषों की अपेक्षा नारियों में एक सिंहनी की आवश्यकता है।''

आज बुद्ध, महावीर, प्रताप और शिवाजी को जन्म देने वाली माताओं की आवश्यकता है। स्वामीजी का कहना था कि 'पाँच सौ पुरुषों के द्वारा भारत को उज्ज्वल बनाने में पचास वर्ष लग सकते हैं, परन्तु पाँच सौ नारियों के द्वारा यह कार्य कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो सकता है।' अत: नारी-शिक्षा से भारत की समस्याओं का समाधान हो सकता है। स्वामी जी ने स्त्रियों के सशक्तिकरण के सम्बन्ध में मौलिक समाधान दिया है। उन्होंने पुरुष तथा नारी के भेद को स्वीकार्य नहीं माना है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आज नारी-सशक्तिकरण की बात की जा रही हैं। नारी अधिकार की माँग उठ रही है। स्त्रियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए सख्त कानून की चर्चा चल रही है। लोक-सभा में स्त्री-प्रतिनिधित्व के आरक्षण के विषय पर बहस चल रही है। ये सब मुद्दे ठीक हैं। क्या इन कानूनों से समाज में उठ रहे प्रश्नों का समाधान हो सकेगा? वास्तव में, यह सब सत्संस्कारों, शिक्षा और नैतिकता के द्वार ही सम्भव है। स्वामीजी ने नारी-उत्थान के लिए एक सूत्र दिया कि उनको शिक्षा दें, वे समाज की दशा और दिशा को सुधारने में सक्षम हैं। उनमें अन्तर्निहित क्षमता है। दहेज, उत्पीड़न, बलात्कार, भ्रूण-हत्या, यौन-शोषण, इत्यादि कुरीतियाँ समाज के लिए कलंक है। समाज इन सब कुरीतियों, बुराइयों को तभी दूर कर सकता है, जब नारी जाग्रत और सशक्त हो जाये। हमारे यहाँ नारी के स्थान को उच्च बताया गया है-

''जब स्त्रियों का मान नहीं होता, वहाँ सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। जब स्त्रियाँ शोक से पीड़ित रही हैं, तब खानदान नष्ट हो जाता है।'' महाभारत / अनुशासन पर्व 46/6

स्वामीजी ने नारी को भारतीय परम्परा की मूल प्रकृति माना है। ऋग्वेद के सूक्तों की दृष्टा विदुषी स्त्रियाँ हैं। आत्मिक दिव्यता के कारण स्त्री को देवी माना गया है। पुराण-काल में दुर्गा-सप्तशती रची गयी। विश्व की सभी स्त्रियों को शक्तिरूपा माँ दुर्गा-देवी का रूप माना गया है। अब भी देहात में मांगलिक अवसरों पर कन्या-भोज की परम्परा है। नवरात्रों में कन्या पूजन होता है। भोजन कराने के पहले छोटी-छोटी कन्याओं के पैर धोने, प्रणाम करने के अनुष्ठान में बड़े लोग भी शामिल होते हैं। लेकिन सारी परम्परा अब पाखण्ड मानी जाती है। अब यह सिर्फ लड़की है, भोग की वस्तु है। संस्कार के बन्धन टूट गये। समाज की चेतना लुप्त है। उत्पीड़ित लड़की चिल्लाती है, लोग देखकर आगे बढ़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में, भारतीय नारी के उत्थान के लिए स्वामीजी सामाजिक सजगता और दायित्वबोध को विशेष महत्त्वपूर्ण मानते हैं। समाज को भेद-भाव और रूढ़ियों से मुक्त होकर नारी की स्वतंत्र सत्ता और महत्ता को मुक्त हृदय से स्वीकार करना होगा। तभी समतामूलक, समुन्नत समाज की स्थापना सम्भव होगी। उनका कहना है कि नारी ही परिवार, समाज की केन्द्र-बिन्दु है। पुन: अपनी प्राचीन परम्परा और मूल को मानकर नारी की महिमा को पहचानने की आवश्यकता है। शिक्षा, शील, संस्कार से युक्त नारी जब सशक्त होगी, तब भारत हर क्षेत्र में उन्नत होगा। अब शक्ति और भक्ति का युग आने वाला है, जो विश्व को अखण्ड ऊर्जा प्रदान करेगा। यह नारी ही शक्ति, भक्ति और प्रगति की वाहक बनेगी। ममता-मूर्ति यही शक्ति सब दुराचारों को समाप्त करेगी और हमारे पापों का प्रक्षालन भी करेगी। स्वामीजी का यह नारी चिन्तन ही भारत के भावी समुत्थान की मूल आधारशिला है। ❑

(सेवानिवृत्त प्राध्यापक, रोहतक (हरियाणा))

यह सरस्वती देवी की ही अनुकम्पा है कि आज अनेक विद्यालयों और पाठशालाओं में छात्राओं की संख्या छात्रों से कम नहीं होती। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय स्तर पर भी स्त्रियाँ पुरुषों के समान बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में मंत्री के रूप में सहभागी बनती हैं तथा विदेशों में जाकर भारत का पक्ष विवेकपूर्वक प्रस्तुत करती हैं। नारी-शक्तिकरण के वर्तमान युग में अब नारी के पिछड़ेपन की बातें करना निराधार है। अब तो पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि नारी-जीवन का भविष्य उज्ज्वल है। सभी उच्च विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में रीडर और प्रोफेसरों के पदों पर नारियाँ छायी हुई हैं।

प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा

❑ डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा

प्राचीन भारत में विकास के सभी आयाम समतामूलक, सकारात्मक, जनतान्त्रिक वैदिक जीवनदृष्टि पर आधारित रहे हैं। प्राचीन काल से वैदिक चिन्तन की परम्परा भारतीय जीवन को अब तक भी निरन्तर प्रेरित करती चली आ रही है। निरन्तरता भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषता है।

कालान्तर में वैदिक संहिताओं, आरण्यक ग्रन्थों, उपनिषदों, पुराणों आदि के रूप में ऋषियों की दिव्य आर्ष दृष्टि का निरन्तर विकास होता रहा। इक्कीस ऐसी वैदुष्यमूर्ति स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जो पुरुषों के समान दिव्य दृष्टि सम्पन्न थीं। अनेक युवतियाँ स्वयंवर के रूप में अपने वर का वरण स्वयं ही करती थीं। स्वयंवर की यह परम्परा आगे पौराणिक काल तक निरन्तर चलती रही। इन सब समतामूलक परम्पराओं ने पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास के स्वरूप पर अभेद मूलक, समता प्रेरित, जनतान्त्रिक प्रभाव डाला।

वैदिक काल में मुक्त जीवन-दृष्टि के कारण स्त्री-पुरुष में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं था। यह दिव्य दृष्टि स्वाभाविक या नैसर्गिक थी। स्त्रियाँ पुरुषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करती थीं। वे यज्ञोपवीत धारण करती थीं और सुशिक्षित पुरुषों के साथ बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं। विदुषी महिलाओं की गणना ऋषियों में की जाती थी। ऋग्वेद (10,159, 2-3) में शची नामक सुशिक्षित महिला, नारी के गौरव का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। पुस्तकीय शिक्षा के साथ शारीरिक व्यायाम की शिक्षा भी महिलाओं को पुरुषों के साथ दी जाती थी। इस सम्बन्ध में श्री वृन्दावनदास वर्मा का अभिमत भी ध्यातव्य है। वे लिखते हैं ''उनको न केवल उच्च कोटि की आधिभौतिक और आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती थी, वरन् पुरुषों के समान शारीरिक व्यायाम आदि की भी शिक्षा दी जाती थी।'' इससे स्पष्ट है कि वैदिक युग में स्त्री शिक्षा अपने पूर्ण उत्कर्ष पर थी, जो वर्तमान शिक्षाविदों के लिए निश्चय ही अनुसरणीय है।

वैदिक साहित्य में महिला-वैदुष्य के अनूठे उदाहरण मिलते हैं। इसके साथ ही बहुपत्नीत्व और बहुपतित्व की भी पारिवारिक-सामाजिक समता और स्वतन्त्रता का बोध होता है। इसका पुष्ट प्रमाण बृहदारण्यक उपनिषद् में देखने को मिलता है। उक्त उपनिषद् में उल्लेख है कि याज्ञवल्क्य ऋषि के तीन पत्नियाँ थीं। इन तीनों के नाम थे गार्गी, कात्यायिनी और मैत्रेयी। गार्गी अपने पति से 'शक्ति' की उत्पत्ति के विषय में जब प्रश्न पर प्रश्न दागती है, तो सुविज्ञ ऋषि याज्ञवल्क्य गार्गी के समक्ष हतप्रभ दिखायी पड़ते हैं और पत्नी की जय और अपनी पराजय स्वीकार करते हुए अपनी मुक्तहृदयता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं, ''हे गार्गी! इतने अधिक और पाण्डित्यपूर्ण प्रश्न लगातार न करो कि तुम्हारा मस्तिष्क ही विदीर्ण हो जाये। उक्त उपनिषद् में एक स्थल पर वैदुष्यमूर्ति गार्गी अपने पति याज्ञवल्क्य को लक्ष्य करके कहती है, हे याज्ञवल्क्य! जिस प्रकार कोई योद्धा धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर अपने हाथ में दो बाण लेकर प्रहार के लिए खड़ा होता है, उसी प्रकार मैं तुम्हारे समक्ष दो प्रश्न लेकर खड़ी हूँ, मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।'' इसी उपनिषद् में कात्यायिनी और मैत्रेयी का परस्पर शास्त्रार्थ उनके प्रकाण्ड पाण्डित्य का पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। एक संवाद में वेदान्त दर्शन के गम्भीर ज्ञाता याज्ञवल्क्य ऋषि आत्मा के विषय में गम्भीर ज्ञान का सन्देश देते हैं। 'आत्मा' के रूप में यह सूक्ष्म सत्ता ही ब्रह्म है। इस सूक्ष्म सत्ता का साक्षात्कार ही ब्रह्मज्ञान है। आत्मा-परमात्मा का यह अद्वैत ही वैदिक चिन्तन की चरम सीमा है। ज्ञान की अन्तिम सीमा होने के कारण ही इसे 'वेदान्त' कहा जाता है।

ऋग्वेद में इडा, भारती तथा वाग्देवी का उल्लेख तीन प्रमुख यज्ञदेवियों के रूप में मिलता है। आगे कालान्तर में तीनों देवियाँ एकाकार हो गयीं और फिर ब्राह्मण ग्रन्थों तथा पुराणों में वाग्देवी को सरस्वती कहा जाने लगा। वाणी अपनी सृजन-शक्ति के संचार से किसी को भी सृजनकार विधाता बना सकती है। इसीलिए वह ब्रह्मा की सृजन-शक्ति और आत्मजा या पुत्री कही गयी। ब्रह्मा के

मुख से वाग्देवी सरस्वती के उत्पन्न होने की उद्भावना निश्चय ही पौराणिक है। ब्रह्मा के मुख से ही वेद प्रकट हुए। इस प्रकार जो विद्या या ज्ञान का स्रोत है, वही वाणी या सरस्वती का भी स्रोत माना गया है जो सर्वथा युक्तिसंगत है। जिस प्रकार कोई भी रचना रचनाकार की मेधा की उपज होने के कारण उसकी आत्मजा है, उसी प्रकार सरस्वती या वाग्देवी भी ब्रह्मा की मानस-पुत्री अथवा आत्मजा है। जिस प्रकार रचना रचनाकार को महिमामण्डित करती है, उसी प्रकार सरस्वती ने भी ब्रह्मा को अपार महिमा से मण्डित किया है तथा अपने आत्मजा-धर्म का सम्यक पालन किया है। सरस्वती ब्रह्मा की कीर्ति का ही आधार नहीं वरन् उनकी अपार सृजनात्मक शक्ति का भी आधार है।

स्पष्ट है कि सृष्टिकर्त्ता की सृजनक्षमता या अभिव्यक्ति-शक्ति का नाम ही सरस्वती है। व्यक्त होने की क्षमता के कारण ही मानव 'व्यक्ति' कहलाता है। सृजन-क्षमता से युक्त होने के कारण ही सरस्वती-साधक कवि भी अपनी अनूठी अभिव्यक्ति-क्षमता के कारण प्रजापति अथवा ब्रह्मा कहलाता है। इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए अग्निपुराण (339, 10) में कहा गया है- ''अपारे काव्य-संसारे कविरेव प्रजापति। अपनी अद्भुत रचनाधर्मिता के कारण भारत में कुम्भकार (कुम्हार) भी प्रजापति अथवा बोलचाल की भाषा में प्रजापत कहलाता है।''

सरस्वती देवी का स्वरूप भी अत्यन्त प्रेरक, प्रभावशाली और मनोरम है। उनके मनभावन स्वरूप से ही ज्ञात होता है कि वे साहित्य, संगीत और अन्य कलाओं की देवी हैं। निम्नलिखित श्लोक में वीणापाणि सरस्वती के रमणीय रूप की भव्य झाँकी प्रस्तुत की गयी है -

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

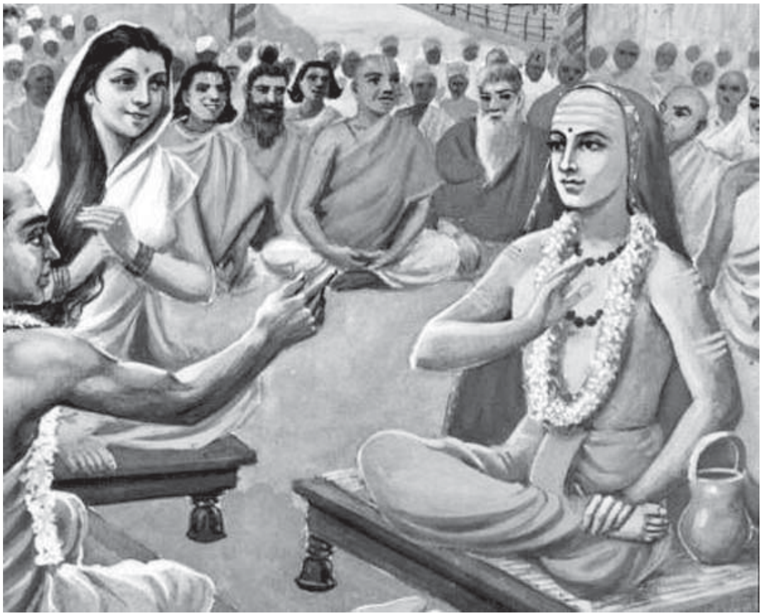

उपर्युक्त श्लोक में सरस्वती देवी स्तुति करते हुए कवि कहता है कि वह भगवती सरस्वती मुझ पर कृपा करें, जो कुन्द के कुसुम, चन्द्रमा और ओस-बिन्दुओं के समान धवल हार धारण करती हैं, जो श्वेत वस्त्रों से सुसज्जित हैं, जो हाथों में वीणा के सुन्दर दण्ड को ग्रहण किये हुए हैं, जिनकी वन्दना ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवगण के द्वारा सदा की जाती है तथा जो सम्पूर्ण जड़ता (अज्ञानता) को दूर भगाने वाली हैं। कुल सरस्वती देवी का पुनीत लक्ष्य है मानव-मन को अज्ञान के घोर अन्धकार से मुक्त करना तथा ज्ञान के शुभ्र आलोक से उद्भासित करना।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिस प्रकार वैदिक काल में महिला-वैदुष्य के अनूठे उदाहरण मिलते हैं, उसी प्रकार पौराणिक काल में वीणापाणि, कमलासना, सरस्वती देवी के रूप में मनुष्यमात्र को ज्ञानलोक से उद्भासित करना माँ सरस्वती देवी के दिव्य अस्तित्व का पुनीत लक्ष्य है। वे नारियों के साथ मनुष्य मात्र को विद्या और ज्ञान के आलोक से उद्भासित और प्रेरित करती हैं। पौराणिक युग की सरस्वती आज भी सम्पूर्ण भारत में एक पावन परम्परा रूप में व्याप्त हैं। वसन्तोत्सव के अवसर पर सरस्वती उत्सव सदैव मनाया जाता है। प्रत्येक साहित्यिक समारोह के प्रारम्भ में दीप जलाकर सरस्वती देवी की पूजा की जाती है।

यह सरस्वती देवी की ही अनुकम्पा है कि आज अनेक विद्यालयों और पाठशालाओं में छात्राओं की संख्या छात्रों से कम नहीं होती। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय स्तर पर भी स्त्रियाँ पुरुषों के समान बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में भाग लेती हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी वे संसद की गतिविधियों में मंत्री के रूप में सहभागी बनती हैं तथा विदेशों में जाकर भारत का पक्ष विवेकपूर्वक प्रस्तुत करती हैं। नारी-शक्तिकरण के वर्तमान युग में अब नारी के पिछड़ेपन की बातें करना निराधार है। अब तो पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि नारी-जीवन का भविष्य उज्ज्वल है। सभी उच्च विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में रीडर और प्रोफेसरों के पदों पर नारियाँ छायी हुई हैं। ❑

(महर्षि दयानन्द वि.वि., रोहतक, हरियाणा)

समत्वभाव की गंगोत्री : वैदिक नारी

❑ दीनानाथ बत्रा

1. पृथ्वी, उषा, निद्रा अदिति, इन्द्राणी, मेधा, श्रद्धा, सरस्वती आदि की महिमा का गुणगान वेदों ने बार-बार किया है।
2. अदिति को देवताओं की माता कहा गया है। अदिति ही भू लोक है, अदिति ही अन्तरिक्ष है, वहीं माता-पिता-पुत्र! सहदेव की अदिति है। अदिति देवताओं को आकार देती है। (ऋग्वेद 1,18,12) में मिलता है।
3. सरस्वती अपने पराक्रम से बड़े जल प्रवाह को गति देती है। वह अखिल बुद्धि की अधिष्ठात्री है। (ऋग्वेद 1.3.12) वह पृथ्वी के अक्ष घोष है।
4. वेदों में महिलाएँ- शब्दार्थ, भावार्थ, ध्वन्यार्थ से नारियों का वर्णन मिलता है।
5. इन्द्राणी कहती है – सहोत्रस्म पुरा नारी। समन बाव गच्छति (यज्ञ अथवा संग्राम में नारी सबसे आगे होती है)
6. मम पुत्राः शत्रुहणोत्था में दुहिता विराट, उताहमस्मि सजंयापत्यौ में श्लाके उत्तमः (ऋग्वेद 10.1.185) मेरा पुत्र शत्रु का नाश करने वाला और तेजस्वी है, मेरी पुत्री अत्यन्त तेजस्वी है। मैं विजयशाली हूँ, पति के नाम से ही मेरी कीर्ति है।''
7. अथ य इच्छेत दुहिता में पण्डिता जायते, (मुझे विद्वान कन्या प्राप्त हो और वह सौ सालों तक जिये)
8. कन्या के जन्म के समय स्त्रियाँ दुन्दुभी, गोमुख आदि वाद्य बजा कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करती थी।

शिक्षा

1. लड़कियों की शिक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता था। उपनयन संस्कार भी होता था। आजीवन ज्ञान साधना का अधिकार भी उन्हें दिया जाता था। सभी विषयों में शिक्षा लेती थी।
2. ''तत्र ब्रह्मवादिनीना अग्निधन, वदेध्ययन च मक्षैयचया'' अग्नि में हवन करना, अध्ययन करना, और ब्रह्मचर्य का पालन करना। यह तीनों नियम महिलाओं पर लागू होते थे।
3. ब्रह्मचर्य का पालन कर, विदुषी बन, सुशिक्षित हो, युवा अवस्था में पहुँचे व्यक्ति से विवाह करे। (अथर्ववेद - 11.8.18)

विवाह

1. ईश्वर ने जिस प्रकार स्त्री की उत्पत्ति की है। उसी प्रकार उसके लिए पति भी उत्पन्न किया है। वही ईश्वर स्त्री-पुरुष को दीर्घायु दे (6, 18, 3 अथर्ववेद)
2. परिवार के लाभ-लड़की के घर पहुँचने वाले हमारे मार्ग सीधे व निष्कंटक हों। भगवान हमें वहाँ ठीक से पहुँचा दें। देवतागण इस जोड़ी को सुखी और समृद्ध करे।'' (ऋग्वेद- 10 मण्डल-85 सूत्र)
3. साम्रश्री श्वसुर भवन, साम्रश्री अश्वाँ भव'' तुम पति के घर की सम्राज्ञी और सब को वश करने वाली बनों-(ऋग्वेद -10 (46)
4. अथर्ववेद के 14 वें मंडल का पहला सुक्त विवाह सम्बन्धी है।''हे प्रिये तुम्हारे ऐश्वर्य रूपी हाथों को मैं ग्रहण करता हूँ। आज से तुम मेरी धर्मपत्नी हो। हमारे घर से सम्बन्धित कार्यों को हम दोनों मिलकर करेंगे। मेरे साथ सौ वर्ष तक सुखी जीवन व्यतीत करो। जैसे शक्तिशाली सागर नदियों पर राज करता है। उसी प्रकार तुम पति के घर जा कर उसकी महारानी बनना।
5. हे स्त्री तुम मुझे अपने अन्तकरण में (अथर्ववेद 14.1.51-53) स्थान दो।
6. हमारे मन सादा मिले रहें (अथर्ववेद 14.2.15)
7. पति पत्नी का नाता अटूट माना जाता था। दो पक्षी जैसे एक ही दिखते हैं वैस ही पति-पत्नी इकट्ठे विचरण करते हैं।

विवाह योग्य आयु

1. विवाह करने की जबरदस्ती नहीं थी। बेटी के परिपक्व होने तक सम्भवतः विवाह नहीं होते थे।
2. विवाह के स्वयंवर पद्धति चलती थी। निर्णय स्वयं लड़की करती थी।
3. जोर जबरदस्ती करना, उदण्डता दिखाने जैसे प्रकार नहीं थे। पुनर्विवाह (अथर्ववेद 18.3.1.2)
1. ऋषि कहते हैं ''हाँ मैंने देखा है, मृत पति से उस जीव को, उस युवती को दूर ले जाया गया और उसका विवाह कर दिया गया- उसके जीवन में घिर गया अन्धेरा मिटकर जीवन पुनः दमक उठा।''

सम्पति का विवाह

1. याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी संवाद में याज्ञवल्क्य तक ने संन्यास लेने से पहले अपनी सम्पति का बँटवारा किया था।
2. उपवर कन्या कहती है ''मुझे पिता के घर अच्छी शिक्षा मिली- सम्पति मिलती थी'' (ऋग्वेद 2.17.)।

ज्ञान सम्पन्न महिलाएँ

इदि ऋषि मन्त्र दृष्टा महिलाओं के नाम आते हैं। विश्ववारा, अपाला, लोपामुद्रा, सूर्या, सावित्री, सुलभा, कात्यायनी

1. विश्ववारा स्त्री पुरोहित के रूप में प्रसिद्ध थी।
2. ब्रह्मवादिनी गार्गी का उदाहरण प्रसिद्ध है। विद्वत् सभा में उसके पूछे 12 प्रश्न-

सृष्टि, वातावरण, आकाश के सदर्भ में
3. मैत्रेयी – याज्ञवल्क्य संवाद
4. वैदिक संहिता में मदालसा, देवहूति, रमेशा
5. स्त्रियों की नृत्य कुशलता।
6. यज्ञ क्रिया में स्त्री पति के साथ आहूति देने वाली को सहधर्मिणी कहा जाता था (ऋग्वेद 8-43-15 /8, 13, 13)
7. यज्ञ कराने वाले स्त्रियों का उल्लेख अथर्ववेद में आता है। यज्ञ में आने का आह्वान किया जाता था।

युद्ध में सहभाग

1. युद्ध में स्त्रियों का सहभाग पुरुषों के जैसा ही सहज, स्वाभाविक माना गया था।
2. विषमता ने स्त्री सेना एकत्रित कर शत्रु का जोरदार सामना किया था।
3. ऋग्वेद में मुदगल पत्नी द्वारा शत्रु से संघर्ष किये जाने का वर्णन है। जब मुरगलानी सारथी बनी तब उसने इन्द्र की सेना को लौटा दिया था। शत्रु को गरज कर ललकारने लगी। जबरदस्त तीरंदाजी की (10-102. 8, ऋग्वेद)

परिवर्तनशीलता

1. वेद ऋचाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्तन में भी स्त्रियों ने नेतृत्व किया।
2. **तरन्तराज की पत्नी राशीपसी** ने अनाज जनता के लिये खोल दिए। असहाय युवकों के लिये शिक्षा का प्रबन्ध किया। (ऋग्वेद 5-61-6) लोभी पुरुषों की तुलना में शीयत जैसी स्त्री श्रेष्ठ है।
3. लोगों उठो ! चेतना आ गयी है। अन्धेरा भाग चुका है, उसका तेज फैल रहा है।
4. स्त्री रूपी उषा में नरवति की प्रथा को समाप्त किया।
5. अश्व प्रतियोगिता में अन्तिम छोर को छूकर विजयी प्रतियोगी की तरह सूर्य कन्या तुम्हारे रथ पर सवार हुई है।
6. गर्भ के रक्षण, मंगल और कल्याण की कामना करता था। इसके लिये प्रार्थना भी होती थी।
7. **अथर्ववेद** – ''18 सूक्त मत्रं 13, 16, 19 जिस राष्ट्र में महिलाओं पर अत्याचार होते हैं वहाँ गर्भपात होते हैं। प्राणियों की असमय ही मृत्यु हो जाती है। वीर पुरुष आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। तालाबों में कमल नहीं खिलते, गाय दूध नहीं देती। बैल काम नहीं करते हैं''।

नारी का शील

1. **अधः पश्यस्व, मोपदि, संतराम पादकौ हट। मा ते कशप्लकौ दृशन, स्त्री हि ब्रह्मा वभूविथ।।**
हे स्त्री, नीचे दृष्टि रख, उपर नहीं। पैरों को सलष्ट रख कर चल। ऐसा वेश पहन कि अंग उधड़े न रहें। तू यज्ञ की ब्रह्मा है। (ऋग्वेद 8 / 33-8)

2. सम्राश्री श्वसुरेभव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राश्री अधिदेवृषु ।।
तुम श्वसुर की दृष्टि में सम्राज्ञी हो। सास की दृष्टि सम्राज्ञी हो। ननद की दृष्टि में सम्राज्ञी हो। देवरों की दृष्टि में सम्राज्ञी हो। (ऋग्वेद 14-2-26)

3. श्वसुर जनों को सुख दे, पति को सुख दे, परिवार को सुख दे, सब प्रज्ञा को सुख दे, सब प्रजा को सुख दे। इन सबकी यथायोग्य सेवा एवं पुष्टि करती रहे) (अथर्ववेद 14.2.26)

- पति-पत्नी, चकवा-चकवी के समान परस्पर प्रेम करें। चक्रवाकेव दम्पति (अथर्ववेद 14.2.64)
- मा. व्यथिष्ठी मया सहप्रजय च धनेन च (अथर्ववेद 14.1.46)
(तुम मेरे साथ रहती हुई संतान और धन किसी भी प्रकार से कष्ट का अनुभव नहीं करोगी।)
- मान आयु प्रमोष्टी को अहं तव (यजुर्वेद 4 (23)
(तुम मेरी आयु का अपहरण मत करना, मैं तुम्हारी आयु का अपहरण नहीं करूँगा।)
- हृदय त्वा मनसे त्वा (यजुर्वेद 6 /25)
(मैं तुम्हें हृदय में बसाने के लिए ग्रहण करता हूँ। मन में बसाने के लिये ग्रहण करता हूँ।)
- तुम ग्रहस्थ आश्रम की पताका, गृहस्थाश्रम रूपी शरीर का मस्तक और शत्रुओं से लौहा लेने वाली वीरांगना हो।
- पृथ्वी, उषा, नदी, गाय बाकी नाम प्रायः नारी के वाचक भी हैं।
- वेदों में कई स्थलों में स्पष्ट कन्या या पुत्री की कामना मिलती है।
''मम पुत्राः शत्रुहणाडे था में दुहिता विराट'' (ऋग्वेद 10/15/3)
- बाल विवाह का निषेध था।
- वर वधु का चुनाव-कन्या और वर के विवाहोचित गुण थे।
- पत्नी के कर्तव्य-घर को शुद्ध तथा संस्कारित रखे।
- पति-पत्नी का व्यवहार-पुरुष स्त्री को प्रसन्न रखे। स्त्री के अप्रसन्न रहने पर सम्पूर्ण कुल में कलह का वास रहता हैं।
- स्त्री शिक्षा- सब मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। जो माता-पिता बच्चों को शिक्षा नहीं देते राज्य की ओर से उन्हें दण्डित करने का अधिकार होना चाहिए।
- स्त्रियाँ अध्यापिका बनें-युद्ध क्षेत्र, राजकाज एवं न्यास विभाग में जायें।
- मातृभाव, पितृभाव, आचार्यवान पुरुषों वदे।
- उषा के सम्मान के रूप में किया गया प्रकाशवती। ❑

(अध्यक्ष, संस्कृति उत्थान न्यास)

ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा

❑ ममता डी. के.

संस्कृत में एक उक्ति प्रसिद्ध है–

नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति
मातृ समोगुरुः

इसका मतलब यह है कि 'इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है।'

आज मैं विद्या और माता इन दोनों से जुड़े हुए कुछ विचारों को लिख रही हूँ। ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा कैसी है? इसके बारे में सभी को सोचना चाहिए। ग्राम्य हो या नगर स्त्री शिक्षा अत्यंत जरूरी है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न ही कुशल माता।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार पुरुषों की प्रभावी साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है। ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा की गति बहुत धीमी गति से चल रही है, इसका कारण नीचे लिखे प्रमुख अंश हो सकते हैं–

- लड़कियों के अभिभावकों के मन में यह प्रश्न है कि लड़कियों को पढ़ाने से हमारे घर को क्या लाभ?
- शिक्षा के महत्त्व के बारे में अधिक जानकारी नहीं है।
- स्थानीय गाँवों में स्कूल नहीं।
- बुनियादी सुविधाओं की अलभ्यता (जैसे शौचालय)।
- घर के काम को लड़कियों को सिखाने में अभिभावक और सीखने में लड़कियाँ तत्पर।
- लड़कियों की सुरक्षा की चिंता।
- किसी न किसी दिन दूसरों के घर उज्ज्वल करेगी अपनी बेटी, यह भावना।

तो अब हम जान चुके हैं कि ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा के लिए क्या समस्याएँ हैं।

किसी भी क्षेत्र या देश के विकास का संकेत उसकी साक्षरता दर से मिलता है, वह भी एक नहीं, दोनों लिंग की साक्षरता दर से। तो हमें अभी स्त्री शिक्षा के दर को उत्तम करने के लिए प्रयत्न कैसे करना चाहिए?

स्वतंत्रता के पूर्व भी स्त्री शिक्षा को सुधारने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम रखे गये। जैसे मा. ईश्वरचंद्र विद्यासागरजी ने बंगाल में कई स्कूल लड़कियों की शिक्षा के लिए खोले। 1848 में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर पुणे में महिलाओं के लिए स्कूल खोली, इस प्रकार सावित्रीबाई भारत की पहली महिला शिक्षिका बनीं।

उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, ओडिसा और भी अन्य राज्यों के प्रत्येक गाँव में स्कूल भी नहीं है। यानी पढ़ने के लिए छात्रों को दूसरे गाँव जाना पड़ता है। इसके कारण माता-पिता अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेज पाते और भारत में ग्रामीण शिक्षा विफल रह जाती है।

ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा को सफल बनाने के लिए नीचे लिखे अंशों के बारे में ध्यान दे सकते हैं।

- अभिभावकों को जाग्रत करना चाहिए।
- शिक्षा से स्त्री अपनी जीवन सुरक्षित रख सकती है, इसके बारे में जानकारी देना।
- शिक्षा से उद्योग पाकर स्त्री अपनी जिंदगी को सशक्त बना सकती है। किसी पर निर्भर होना आवश्यक नहीं होगी।
- देश के कोने-कोने के गाँवों में सुसज्जित शालाएँ खोलना अत्यंत आवश्यक है।
- शाला में लडकियों के लिए बुनियादी सुविधाओं को दिलाना (जैसे प्रत्येक शाला में शौचालय)।
- लड़कियों को अपनी सुरक्षा करने के लिए कराटे जैसे शिक्षा को भी दिलाना।
- अगर लड़की शिक्षा पाती है तो, वह न केवल अपने माता-पिता के घर उज्ज्वल करेगी, अपने पति के घर और अपने बच्चों को भी शिक्षित कर सकती है।
- हमारे भारतीय संस्कृति, सभ्यता को आगे ले जाने का जिम्मेदारी स्त्री पर है। वह तभी यह जिम्मेदारी निभा सकती है, जब वह सुशिक्षित बनें।

कुछ घरों में लड़कियों को केवल प्राथमिक शिक्षा देने तक ही सोचते हैं, अभिभावकों के मन में अपने लड़कियों के जीवन के बारे में एक ध्येय रखना आवश्यक होता है और उसे साधने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है।

स्त्री केवल माता नहीं गुरु भी बनती है, तो गुरु को पैदा करना उसे सँवारना हमारा आद्य कर्तव्य होना आवश्यक है ।

'शिक्षित माता सही विधाता' ❑

(सरकारी प्रौढशाला, अत्तिहल्लि, कनकपुरता, रामनगर जिला, कर्नाटक राज्य)

बालिका शिक्षा से ही सुदृढ़ होंगे - परिवार

❑ डॉ. रेखा भट्ट

भारतीय महिलाओं ने शिक्षा के प्रभाव से घरेलू हिंसा व प्रताड़नाओं से मुक्ति पाकर आत्मसम्मान अर्जित किया है। शिक्षा द्वारा ही उनमें आडम्बरों व अंधविश्वासों की जकड़न से निकल कर सामाजिक चेतना जाग्रत हुई है। शिक्षा द्वारा अर्जित आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास जैसे गुणों ने महिलाओं को मातृत्व के प्रकृति प्रदत्त गुण के साथ-साथ, नेतृत्व क्षमता दिखाने के अवसर प्रदान किये हैं। भावनात्मक रूप से प्रखर होने के कारण परिवार में महिलाओं को निर्णय लेने में सक्षम नही माना जाता किन्तु आधुनिक शोधों से सामने आया है कि महिलाओं के इमोशनल इंटेलिजेंस (E.I.) अधिक होने से वे कार्य को अधिक एकाग्रता से सम्पन्न कर सकती हैं तथा शिक्षित महिलाएँ अपने कार्यों को अधिक प्रभावी बनाती है। मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक संवेदनशीलता शिक्षा के प्रभाव में, सूक्ष्मतर कार्यों को बेहतर समझने की दक्षता प्रदान करती है।

भारत के आर्ष ग्रन्थों में ऋषि मुनियों ने माता को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के रूप में उल्लेखित किया है। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार -

''अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामः मातृमान्
पितृमानाचार्यवान् पुरुष वेदः।''

अर्थात् - ''कोई मनुष्य तभी ज्ञानवान होगा जब उसे तीन उत्तम शिक्षक-माता, पिता व आचार्य उपलब्ध हों।

मनु स्मृति में वर्णन आता है कि- ''दस उपाध्यायों की अपेक्षा एक आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा एक पिता तथा सहस्त्र पिताओं की अपेक्षा एक माता सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।'' याज्ञवलक्य स्मृति में ने भी गुरु, आचार्य, उपाध्याय, व ऋत्विक से माता को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक माना है।

भारत में माता को बालक का श्रेष्ठ शिक्षक मानने के कारण ही प्राचीन काल में बालिकाओं को भी शिक्षित करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। गुरुकुलों में बालकों के साथ ही बालिका शिक्षा का भी समान प्रावधान था। उत्तर रामचरित मानस में ऋषि वाल्मिकी के आश्रम में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के पुत्र लव-कुश के साथ बालिका 'आत्रेयी' के अध्ययन करने का वर्णन है। इसी तरह भवभूति द्वारा रचित ग्रन्थ 'मालती-माधव' में भूरिवसु व देवराट के साथ 'कामन्दकी' के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने का प्रसंग उल्लेखित है। गुरु कन्याओं के अतिरिक्त सभी समाज की कन्याओं को शिक्षा प्राप्त हो सके, इसके लिये हरित ऋषि ने कन्याओं को घर पर ही परिवार के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा शिक्षित किये जाने की व्यवस्था प्रदान की। संगठित बालिका शिक्षा के प्रयास बौद्धकाल में पर्याप्त मात्रा में हुए थे। बौद्ध विहारों में भिक्षुणियों को धर्म और दर्शन की शिक्षा प्रदान की जाने लगी।

12 वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक भारत में मुगल शासन तथा विदेशी आक्रमणों के प्रभाव में सामाजिक स्वरूप बदलता चला गया। संघर्षरत एवं परतंत्र समाज से शिक्षा एवं शैक्षिक मूल्य समाप्त होते गये और भारतीय समाज में कुरीतियाँ पनपने लगीं। सती प्रथा, पर्दा प्रथा जैसी परम्पराओं के साथ धर्मान्धता व अंधविश्वासों के चलते बालिका शिक्षा पूर्णतः उपेक्षित रही। गोपालकृष्ण गोखले ने सन् 1911 में ब्रिटिश सरकार द्वारा तय की गई शिक्षा नीति में बालिका शिक्षा को महत्त्व देने की सिफारिश की। सरकारी सहायता से कई मिशनरीज द्वारा बालिका शिक्षा के लिये विद्यालयों की स्थापना की गई। शिक्षित महिलाएँ धीरे-धीरे संगठित होने लगीं तथा देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किया। कस्तूरबा गाँधी, एनी बिसेन्ट, सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पण्डित, मेडम कामा, सुभद्रा कुमारी चौहान, रानी गाइदिनल्यू एवं इंदिरा गाँधी जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बालिकाओं की बुनियादी शिक्षा में वृद्धि हुई। महाराष्ट्र में सावित्री बाई फूले ने पहला बालिका विद्यालय स्थापित कर

बालिका शिक्षा की अलख जगाई। सन् 1958 में श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में बालिका शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं के निवारण तथा प्रसार के लिये राष्ट्रीय समिति नियुक्त की गई। बालिका शिक्षा के कार्यक्रमों का नियोजन व क्रियान्वयन सुचारू रूप से करने के लिये सन् 1960 में राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना की गई। बालिका शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रगति होने से महिलाएँ शोषण व अत्याचारों के विरुद्ध खड़ी हुई और अपने अधिकारों को लेकर उनमें सामाजिक चेतना जाग्रत हुई। शिक्षा द्वारा रोजगार प्राप्त होने से महिलाओं का दूसरों पर आर्थिक अवलम्बन समाप्त हो गया। आर्थिक स्वावलम्बिता से उनमें स्वयं के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की क्षमता विकसित हुई है। इसके साथ ही महिलाओं की सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में भी सुधार संभव हो सका है। भारतीय महिलाओं ने शिक्षा के प्रभाव से घरेलू हिंसा व प्रताड़नाओं से मुक्ति पाकर आत्मसम्मान अर्जित किया है। शिक्षा द्वारा ही उनमें आडम्बरों व अंधविश्वासों की जकड़न से निकल कर सामाजिक चेतना जाग्रत हुई है। शिक्षा द्वारा अर्जित आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास जैसे गुणों ने महिलाओं को मातृत्व के प्रकृति प्रदत्त गुण के साथ-साथ, नेतृत्व क्षमता दिखाने के अवसर प्रदान किये हैं। भावनात्मक रूप से प्रखर होने के कारण परिवार में महिलाओं को निर्णय लेने में सक्षम नही माना जाता किन्तु आधुनिक शोधों से सामने आया है कि महिलाओं के इमोशनल इंटेलिजेंस (E.I.) अधिक होने से वे कार्य को अधिक एकाग्रता से सम्पन्न कर सकती हैं तथा शिक्षित महिलाएँ अपने कार्यों को अधिक प्रभावी बनाती है। मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक संवेदनशीलता शिक्षा के प्रभाव में, सूक्ष्मतर कार्यों को बेहतर समझने की दक्षता प्रदान करती है।

शिक्षा महिलाओं की स्वाभाविक कल्पनाशीलता को विकसित कर स्वंय को तथा बच्चों को लेखन आदि रचनात्मक कार्यों के लिये प्रेरित करती है। महिलाओं में समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुलझाने की क्षमता को अधिक उत्कृष्ट बनाती है - शिक्षा। यही कारण है कि महिलाएँ परिवार को विकट परिस्थितियों से भी बाहर निकाल पाने में सफल होती है। शिक्षा द्वारा कानून व नियमों की जानकारी उन्हें अपने अधिकारों व परिवार की सुरक्षा के प्रति सावचेत करती है।

कृषि आधारित कार्यों, व्यवसायों व उद्योगों में शिक्षित महिलाओं की सहभागिता परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाती है। शिक्षा द्वारा महिलाओं में मल्टीटास्किंग विकसित होती है, वे घर परिवार के कई सारे कार्यों को एक साथ सहज रूप से करने में निपुण होती है। महिलाओं के नैसर्गिक गुणों जैसे करुणा, दया, क्षमा, त्याग का शिक्षा द्वारा संवर्धन होता है जो उन्हें परिवार में वृद्धों एवं बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। उनके प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने में शिक्षा प्रेरणा देती है और वे परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखती है। महिलाओं में आस्था व परोपकार जैसे मानवीय गुणों को शिक्षा सशक्त बनाती है। अत: वे धार्मिक कार्यों से जुड़ी रहती है तथा परिवार में तीज-त्योहारों, उत्सवों तथा आयोजनों में भारतीय परम्पराओं को जीवंत बनाये रखती हैं। महिलाएँ परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण का संचार करती हैं। महिलाएँ सभी सामाजिक कार्यों में परिवार का प्रतिनिधित्व तत्परता से करती हैं। शिक्षित एवं प्रशिक्षित महिलाओं का वास्तुकला ज्ञान, हस्त कला की जानकारी व अन्य कला-कौशल उनके घर-परिवार की व्यवस्था में परिलक्षित होती है।

शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ इन स्वत: स्फूर्त गुणों को आने वाली पीढ़ी में हस्तांतरित करती है और जीवन को सफल बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। बाल्यकाल से ही महिलाओं को शिक्षा से वंचित करना उनके विकास में बाधक होता है। वर्तमान बालिका शिक्षा को अधिक सुगम एवं व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है। बालिका शिक्षा में हस्तकला व कौशल द्वारा रचनात्मक व कलात्मकता प्रशिक्षण को जोड़ने से आधुनिकता के नाम पर वर्तमान में नष्ट होती लोक विधाओं को पुनर्जीवित किया जा सकेगा। इससे बालिकाएँ जीविका प्राप्त कर सकेगी। वर्तमान में भी ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों द्वारा बालिकाओं को शिक्षित नही करने के दृष्टिकोण में बदलाव होगा। बालिका शिक्षा में नवाचार व उद्यमिता को बड़े पैमाने पर जोड़ना आवश्यक है। जिससे महिलाओं को स्वरोजगार की प्रेरणा मिलेगी। इस महत्त्वपूर्ण कार्य हेतु रोजगार प्रकोष्ठ की स्थापना द्वारा उद्योगों में भी उनके लिए आजीविका के अवसर सुनिश्चित हो सकेंगे। सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीकी प्रशिक्षण को भी बालिका शिक्षा में आवश्यक रूप से सम्मिलित करने के लिये सभी महत्वपूर्ण संसाधन व प्रशिक्षक उपलब्ध करवाने होंगे।

वर्तमान में शिक्षित महिला घर और घर के बाहर जाकर अर्थोपार्जन करते हुए दोहरी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में सक्षम हुई है। महिलाओं ने कार्यक्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए पारिवारिक दायित्वों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया है। शिक्षित महिलाओं ने परिवार में भारतीय संस्कृति व परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा द्वारा बालिकाओं का स्वयं का विकास होने पर ही वे परिवार का विकास करने में सक्षम होंगी, परिणामस्वरूप उन्नत समाज का निर्माण हो सकेगा। देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में देश की आधी आबादी- महिलाएँ, अपना बराबरी का योगदान दे सकेंगी।

भारत में आज भी परिवार एक सशक्त सामाजिक इकाई है। शिक्षित महिला द्वारा स्वस्थ सुसंस्कृत परिवार का निर्माण ही प्रगतिशील राष्ट्र की आधार शिला है। बालिका शिक्षा प्रसार-प्रोत्साहन द्वारा बालिकाओं के मानसिक विकास से उनमें नैसर्गिक गुणों का विकास होगा। जो आने वाली पीढ़ियों को स्वतंत्र वातावरण तथा सही मार्गदर्शन प्रदान कर सुखद भविष्य की ओर अग्रसर करेंगी। ❑

(व्याख्याता रसायन विज्ञान,
मीरां गर्ल्स कॉलेज, उदयपुर)

महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान के कारण सामाजिक बदलाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यह महिला उद्यमिता के कारण आया है। क्योंकि महिलाएँ अब अकेली संघर्ष करने के बजाय सामूहिक होकर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। इसी कारण परिवार आर्थिक सम्पन्नता की ओर कदम रख रहा है। केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से प्रत्येक क्षेत्र में महलिाओं की सहभागिता बढ़ रही है। विश्व बैंक के अनुसार भारत में केवल 30 प्रतिशत स्त्रियों के पास रोजगार है, परन्तु सरकारी योजनाओं के कारण इसमें वृद्धि होगी व पुरुषों को भी व्यवसाय में महिलाओं को सहयोग करना होगा। भारत में लोकसभा अध्यक्ष से लेकर चारों दिशाओं में महिला मुख्यमंत्री राज्यों में शासन चला रही है साथ ही चतुर्दिक क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति व सहभागिता है, यही महिला सशक्तिकरण व सामाजिक अभियांत्रिकी का सार्थक परिणाम है।

चतुर्दिक क्षेत्रों में बढ़ता महिला प्रभाव

❑ **प्रो. मधुर मोहन रंगा**

भारतीय जीवन दृष्टि में आदिकाल से ही परिवार को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है, परिवार का स्नेह रूपी तानाबाना मानवीय संवेदनाओं के आदर्श-धागे में पिरोकर बनाया गया है, इसी कारण परिवार-भाव का बोध होता है व आपसी सामंजस्य से परिवार समृद्धि व स्थायित्व की ओर अग्रसर होता है। परिवार के सदस्यों के मध्य सम्पर्क, सहयोग व समन्वय बना रहता है तभी सबल व सक्षम परिवार जीवन्तता प्राप्त करता है। परिवार के सदस्यों में त्याग व समर्पण की भावना का उदय भी अग्रजों के व्यवहार से आने वाली संतति में सम्प्रेषित होता हैं, क्योंकि विकसित होते छोटे बालक का मन व मस्तिष्क यह सब देखता रहता है, उसके मस्तिष्क में इन सब घटनाओं का अध्यकंन (Imprenting) होता रहता है, यही अधिगम उसके भावी व्यक्तित्व का आधार होता है, इसी कारण वह भी मन में परिवार भाव लेकर बड़ा होता है व उसी के अनुरूप अपनी सामर्थ्य के अनुसार परिवार की सेवा करता है। परन्तु उस परिवार की वास्तविक धुरी तो महिला ही है, जो परिवार का प्रबन्धन सुचारु रूप से संचालित करती है व परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रकृति का उपहार मानती है। कामकाजी महिलाएँ भी घर व नौकरी के बीच भरपूर संतुलन बनाकर चलती हैं। इसलिए महिलाओं की तरक्की में ही सम्पूर्ण समाज की तरक्की है। कुछ माह पूर्व मैकिन्से ग्लोबल इन्सटीट्यूट व अन्य शोधों में बताया गया है कि महिलाओं के नौकरी करने व उच्च पद प्राप्त करने से कई देशों के सकल घरेलू उत्पाद पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा जिसमें भारत भी शामिल है। महिलाओं के अर्थोपार्जन से समाज व राष्ट्र का आर्थिक विकास होता है।

''ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इकोनॉमिक को-ऑपरेशन एण्ड डवलपमेन्ट'' की रिपोर्ट में 26

अलग-अलग देशों के महिला-पुरुषों पर शोध किया गया व बताया गया कि राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। ''ग्लोबल डेवलपमेंट इंडेक्स'' (Global Development Index) या ''संयुक्त राष्ट्र जेंडर इंडेक्स'' के अनुसार जहाँ-जहाँ रोजगार सृजन व रोजगार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, वहाँ-वहाँ आर्थिक विकास हुआ है।

आज यद्यपि पूँजीवादी सोच परिवार-संस्था को कमजोर करने का प्रयास कर रही है फिर भी भारतीय महिलाओं में शक्ति व सामर्थ्य है इसी कारण उच्च पदस्थ महिलाएँ परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएँ अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रही हैं जैसे- साहित्य, विज्ञान, कला, वाणिज्य, खेल, बैंक, उद्यमिता, राजनीति, टेक्नोलॉजी, माइक्रो-फाइनेंस से व्यवसाय, पत्रकारिता, मीडिया आदि क्षेत्रों में रोजगार सृजन के साथ-साथ उच्च पदों को भी सुशोभित किया है। विश्वस्तरीय निकायों या संगठनों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा कर, वैश्विक स्तर पर भारत का मान बढ़ाया। समाज की सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु विभिन्न सामाजिक कार्यों को दिशा प्रदान की। प्रस्तुत आलेख में उद्योग, वाणिज्य व सामाजिक कार्यों से जुड़ी महिलाओं के योगदान का वर्णन किया गया है।

अक्टूबर-नवम्बर 2013 में भारत में लगभग आधे बैंक, वित्त व निजी उद्योग विभागों की अध्यक्षता महिलाओं के हाथ में थी। भारत के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की अध्यक्ष अरुंधति भट्टाचार्य, एक्सिस बैंक की शिखा शर्मा, इलाहाबाद बैंक ऑफ इंडिया की शुभलक्ष्मी पणसे, बैंक ऑफ इण्डिया की विजयलक्ष्मी अय्यर, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया की अर्चना भार्गव आदि बैंक प्रबन्धक के क्षेत्रों में शीर्ष पदों पर आसीन हैं। उषा सागवान भारत की सबसे बड़ी जीवन बीमा कम्पनी भारतीय जीवन बीमा निगम की प्रबन्ध निदेशक नियुक्त हुई है। इनके अतिरिक्त भारतीय रिजर्व बैंक के केन्द्रीय निदेशक बोर्ड में भी इला भट्ट व इंदिरा राजारमन सदस्य है। एक तथ्य के अनुसार 30 प्रतिशत महिलाएँ देश में वरिष्ठ प्रबंधकीय पदों पर कार्यरत हैं, यह वैश्विक औसत से 6 प्रतिशत अधिक है। यह भारत में उच्च पदस्थ महिलाओं की स्थिति को तो स्पष्ट करता ही है, साथ ही महिलाओं के शैक्षिक स्तर को भी इंगित करता है। उद्यमिता के क्षेत्र में भी भारतीय महिलाओं की स्थिति निराशाजनक नहीं है यहाँ करीब 10 प्रतिशत महिलाएँ प्रसिद्ध भारतीय उद्यमियों में जगह बनाये हुए हैं।

वह उद्यम जिसमें महिला या महिलाओं का समूह व्यावसायिक उद्यम प्रारंभ कर, उसे संगठन प्रदान कर, सभी के सहयोग से गति प्रदान करता है, उसे महिला उद्यमी कहते हैं। भारत सरकार ने महिला उद्यमी को परिभाषित करते हुए लिखा है कि वह ''उद्यम जिसका नियंत्रण व स्वामित्व महिलाओं के हाथ में हो, व जिससे पूँजी का 51 प्रतिशत वित्तीय ऋण हो व 51 प्रतिशत रोजगार महिलाओं के पास हों।'' वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय महिलाओं की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बन गई है। वे घरेलू कार्य के साथ साथ नवीन व्यावसायिक उद्यम संचालित करने में सक्षम हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण महिला उद्यमियों का वर्णन करना, यहाँ प्रासंगिक होगा। डॉ. किरण मजूमदार शाह, बॉयकान लि. की प्रबन्ध निदेशक व अध्यक्ष हैं। वे 2004 से भारत की सबसे धनवान महिला की श्रेणी में थीं, उन्होंने अपनी कम्पनी को गैराज में दस हजार की लागत से प्रारम्भ किया। यह कम्पनी पपीते से एक एंजाइम निकालती थी। उन्हें बैंकों ने ऋण इसलिए नहीं दिया क्योंकि इनके पास सम्पत्ति का अभाव था व जैव प्रौद्योगिकी उद्योग व वाणिज्य जगत में नया नाम था। आज इनकी कम्पनी जैव-औषधि के क्षेत्र में सबसे बड़ी कम्पनी है। एकता कपूर, भारतीय दूरदर्शन पर प्रसिद्ध नाम वर्ष 2006 में जिन्हें टेली पुरस्कार मिला क्योंकि 'सास

भी कभी बहू थी' इनका साहसिक धारावाहिक था। नीलम दीवान, माइक्रोसोफ्ट इंडिया की प्रबन्ध निदेशक हैं इन्हें महिला होने के नाते हिन्दुस्तान यूनीलीवर व एशियन पेन्ट्स में मार्केटिंग व सेल्स में नौकरी नहीं दी गई। आज आप इस कम्पनी का कुशल नेतृत्व कर रही हैं। नैना लाल किदवई, पहली भारतीय महिला है जिन्होंने हारवर्ड बिजनेस स्कूल से स्नातक किया है। फॉर्चून पत्रिका (Fortune Magazine) ने इन्हें वर्ष 2000 से 2003 तक विश्व के 50 कार्पोरेट महिला में चुना। इकोनोमिक्स टाइम्स के अनुसार ये पहली भारतीय महिला हैं जो भारत स्थित विदेशी बैंक (Hongkong and Shanghai Banking Cooperation) की मुखिया रही। यह बैक 14 अगस्त 1866 में स्थापित हुआ था। बहुआयामी प्रतिभा की धनी, इन्दु जैन टाइम्स समूह की अध्यक्षा हैं, यह भारत का सबसे बड़ी मीडिया फर्म है। शिक्षाविद् के साथ-साथ ये आध्यात्मिक, मानवतावादी व प्रसिद्ध सफलतम उद्यमी हैं। पार्क होटल की अध्यक्ष हैं प्रिया पाल, जो वेलेस्लेय महाविद्यालय, अमेरिका से अर्थशास्त्र में स्नातक डिग्री प्राप्त कर परिवार के व्यवसाय में कार्य करने लगी। टाटा मिल्स की सहायक कम्पनी को सौन्दर्य प्रसाधन की ट्रेडमार्क, लेक्मे (Lakme) में रूपान्तरित करने का श्रेय सिमोने टाटा को जाता है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से इस उत्पाद को ख्याति दिलाई। वर्तमान में ट्रेन्ट लिमिटेड की अध्यक्ष हैं। वर्ष 2006 में व्यावसायिक महिला का सम्मान प्राप्त करने वाली महिला हैं, मल्लिका श्रीनिवासन यह सम्मान उन्हें इकानोमिक टाइम्स ने प्रदान किया।

इन्होंने वर्ष 1986 में ट्रेक्टर्स एण्ड फार्म इक्वीपमेन्ट (TAFE) में कार्यभार संभाला, इस समय कम्पनी का टर्नओवर 85 करोड़ था परन्तु आज इनके कठिन परिश्रम से वह 2900 करोड़ है। इनकी कार्य कुशलता व कुशल प्रबन्धन ही इसके लिए जिम्मेदार है। प्रीति रेड्डी, अपोलो हॉस्पीटल्स की प्रबन्ध निदेशक हैं चैन्नई स्थित स्वास्थ्य देखभाल का यह भारत में सबसे बड़ा व्यापारिक निगम (Conglomerate) है। स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करने वाली ये पहली महिला है, इनके अथक प्रयासों से आज स्वास्थ्य देखभाल ने एक बड़े उद्योग का रूप ले लिया। राष्ट्रीय कृषि व विकास बैंक (National Bank of Agricultire and Rural Develobment, Nabard) की अध्यक्ष के रूप में देश को उत्तम सेवाएँ देने के पश्चात रंजनकुमार को सरकार ने प्रबन्ध निदेशक व अध्यक्ष इंडियन बैंक का बनाया। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के सर्वोच्च पद को सुशोभित करने वाली आप पहली भारतीय महिला है। जब इन्होंने बैंक का कार्यभार संभाला, उस समय बैंक की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, इनके नेतृत्व में बैंक ने उल्लेखनीय प्रगति की जिसका श्रेय इन्हें जाता है, एक कुशल प्रबन्धक, प्रशासक व मानवीय गुणों के परिपूर्ण नेतृत्व ने बैंक को शिखर पर पहुँचाया। भारतीय उद्यमी महिलाओं ने इस कठिन क्षेत्र में ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। उससे सभी भारतीयों को प्रेरणा मिलती है। ये महिलाएँ समाज को मार्गदर्शन प्रदान करती हैं इसलिये उन्हें आदर्श के रूप में देखा जाना चाहिए। सभी की लगन आत्म-विश्वास, कर्त्तव्यनिष्ठ समर्पण को समाज का प्रत्येक वर्ग अपना कर, भारत को उन्नति के पथ पर यथायोग्य सहयोग प्रदान करेंगे।

आर्थिक स्तर पर महिलाओं ने स्वयं उद्यमी बनकर राष्ट्रीय विकास करते हुए अपनी जगत व्यापी पहचान बनाई है। सौन्दर्य जगत में शहनाज हुसैन ने भारत के कोने-कोने में मौजूद जड़ी-बूटियों को लेकर छोटा-सा व्यवसाय प्रारम्भ किया और सफलता के शीर्ष पर सौन्दर्य जगत में कीर्तिमान स्थापित किया। फैंशन की दुनिया पर देदीप्यमान आशीनालीना सिंह ने एक सिलाई मशीन से कपड़े सिलने की शुरुआत कर फैशन की

दुनिया में तहलका मचा दिया। महिलाएं नौकरी और स्वरोजगार कर आर्थिक विकास में योगदान देती हैं, इसी सोच के कारण भारत सरकार ने महिलाओं द्वारा शुरु किए गए ''स्टार्ट अप्स'' को शुरुआती तीन वर्षों के लिए पूर्णत: कर-मुक्त कर दिया है। इससे महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन मिलेगा। कल्पना सरोज एक प्रख्यात महिला उद्यमी हैं वर्ष 2013 में पद्मश्री से सम्मानित हैं, वर्तमान में भारतीय महिला बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की सदस्य है। स्वयं का गैर-सरकारी संगठन भी चलाती हैं। उल्लेखनीय है कि इनकी भी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी। अत: लड़कियों को उच्च शिक्षा के साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण लेना चाहिए ताकि वे रोजगार के नये अवसर तलाश सकें। एजुकेशन भास्कर की रिपोर्ट के अनुसार होटल मैनेजमेंट ग्रेजुएट्स के हायरेबल कैंडिडेट में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। सिर्फ 10 प्रतिशत फ्रेश पुरुष ग्रेजुएट हायरेबल है जबकि महिलाओं के मामले से यह 18 प्रतिशत है। अलग-अलग डोमेन नॉलेज में भी महिलाएं पुरुषों से आगे हैं। यह महिला उद्यमिता की दृष्टि से उत्तम प्रारम्भ है। नेहा खरे, चेयरमैन यंग आंत्रप्रन्योर विंग व सदस्य, महाराष्ट्र चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स इण्डस्ट्री एण्ड एग्रीकल्चर के अनुसार महिला उद्यमिता के जरिये सामाजिक परिवर्तन हुआ है। बचत व स्वयं सहायता समूहों को विश्व बैंक से आर्थिक सहायता मिलने से इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। अम्बिका धीरज, डाटा एनालिटिक्स फर्म क्यू सिग्मा की मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। वह न्यूनतम 1 अरब डॉलर का वैल्यूएशन रखने वाली किसी भारतीय टेक्नोलॉजी कम्पनी की पहली महिला मुखिया है। 208 वर्ष पुराने भारत के सबस बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक की पहली महिला प्रमुख अरुंधति भट्टाचार्य हैं। उन्होंने 38 साल के सेवा काल में बैंकिंग के विभिन्न क्षेत्रों फॉरेन एक्सचेंज, ट्रेजरी रिटेल ऑपरेशन, इन्वेस्टमेंट बैंकिंग कॉर्पोरेट डेवलपमेन्ट आदि में कार्य किया। फोर्ब्स पत्रिका ने इन्हें 2015 में दुनिया की 100 ताकतवर महिलाओं में शामिल किया। उनकी प्रतिभा के कारण हाल ही में उन्हें भारतीय प्रबन्ध संस्थान, सम्बलपुर का अध्यक्ष चुना गया है। श्रीमती किरण बेदी, पहली महिला भारतीय पुलिस सेवा की अधिकारी रही व यूनाइटेड नेशन्स की पुलिस एडवाइजर भी रही। वर्तमान में पॉन्डिचेरी में राज्यपाल के पद पर आसीन है। इंदिरा विजन फाउन्डेशन नामक गैर-सरकारी सगंठन की संस्थापक व मैग्सेसे पुरस्कार, यूनाइटेड नेशन्स मेडल व प्रेसिडेन्ट पुलिस पुरस्कार से अंलकृत भारतीय महिला जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आदर्शों के साथ व्यतीत किया व नैतिक मूल्यों को प्रतिस्थापित किया। आज हमारे देश में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर होकर अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वहन कर रही है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कारण सोशल सेक्टर में विभिन्न नये क्षेत्रों का उदय होने लगा है। क्या कभी किसी ने सोचा था कि ब्लॉगिंग या चिट्ठाकारी भी कभी शोहरत और दौलत दिला सकती है। केवल एक ब्लॉग आपको ब्लॉगिंग किंग या क्वीन बना सकता है। ब्लागिंग में जहाँ पुरुष सक्रिय है वहाँ महिला भी शिखर पर पहुँच रही हैं। इंटीरियर डिजायन व आर्किटेक्चरल रेस्टोरेशन में पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त करने वाली सुनीता कोहली 1992 में महिला शिरोमणि पुरस्कार से भी सम्मानित हैं वह सत्यज्ञान संस्था के माध्यम से बच्चों व महिलाओं में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करती हैं। उन्होंने इंटीरियर डिजाइनिंग में औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया, सिर्फ स्वयं की मेहनत व लगन से इस क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की।

उपरोक्त विवरण से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय महिलाएँ परिवार के साथ सामंजस्य बिठाकर अपनी कार्य कुशलता का परिचय देती हैं। क्योंकि कार्य को निष्ठा से सम्पादन की उनमें अंतर्निहित क्षमता है, इसी कारण वे एक से अधिक कार्य कर सकती हैं। जब महिला सीमित आय में घर का कुशल प्रबन्धन कर सकती है तो उनकी जन्मजात प्रतिभा साकार होने लगती है। इसी कारण भारतीय परिवारों में कहा जाता है कि महिलाओं के हाथ में ''यश'' है। महिलाओं में मार्केटिंग की कला जन्मजात होती है क्योंकि घर का आर्थिक प्रबन्ध उन्हें ही करना होता है। आज के युग में वे अपनी इस गुण का उपयोग व्यावसायिक तरक्की के लिए कर रही हैं। आज शिक्षा के प्रचार-प्रसार व सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कारण वैचारिक स्वतंत्रता सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर हो रही है। जिसके परिणामस्वरूप समाज में पीढ़ीगत परिवर्तन आने लगे हैं। महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान के कारण सामाजिक बदलाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यह महिला उद्यमिता के कारण आया है। क्योंकि महिलाएँ अब अकेली संघर्ष करने के बजाय सामूहिक होकर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। इसी कारण परिवार आर्थिक सम्पन्नता की ओर कदम रख रहा है। केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से प्रत्येक क्षेत्र में महलिाओं की सहभागिता बढ़ रही है। विश्व बैंक के अनुसार भारत में केवल 30 प्रतिशत स्त्रियों के पास रोजगार है, परन्तु सरकारी योजनाओं के कारण इसमें वृद्धि होगी व पुरुषों को भी व्यवसाय में महिलाओं को सहयोग करना होगा। भारत में लोकसभा अध्यक्ष से लेकर चारों दिशाओं में महिला मुख्यमंत्री राज्यों में शासन चला रही है साथ ही चतुर्दिक क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति व सहभागिता है, यही महिला सशक्तिकरण व सामाजिक अभियांत्रिकी का सार्थक परिणाम है। ❑

विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग, सरगुजा विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़)

महात्मा गाँधी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''अहिंसा पर आधारित समाज में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान भविष्य निर्माण के अवसर उनकी मौलिक स्थिति, अधिकार तथा बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए। आज के बदले हुए समाज में पुरुष को चाहिए कि वह स्त्री को अपना मित्र या साथी माने।'' देश की स्वतंत्रता के पश्चात् गठित आयोगों ने बालिका शिक्षा के उन्नयन हेतु सृजनात्मक सुझावों में पारिवारिक दृष्टि, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक प्रगति की ओर देश को अग्रसर होने के लिए बालिका शिक्षा को आवश्यक माना है। आज महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की अपेक्षा कम है लेकिन यह भी स्वीकारने वाले तथ्य हैं कि शिक्षा से ही महिलाओं में आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव आया है।

शिक्षित नारी, परिवार व राष्ट्र की सुख-समृद्धिकारी

❑ **बजरंग प्रसाद मजेजी**

समग्र राष्ट्र ही नहीं वरन विश्व के उत्थान में शिक्षित नारी का अपना विशिष्ट एवं निश्चित योगदान होता है। ''विश्व की प्रगति में तब तक उल्लेखनीय सुधार नहीं हो सकता, जब तक महिलाओं की स्थिति को बढ़ावा नहीं मिलेगा तथा उनकी महान् आध्यात्मिक प्रकृति को सुरक्षित नहीं रखा जा सकेगा अगर ऐसा हुआ तो भारतीय नारी सम्पूर्ण विश्व की आदर्श नारी होगी।'' - स्वामी विवेकानन्द

भारतीय नारी-देवी स्वरूपा

भारत की नारी पवित्रता एवं त्याग की मूर्ति है क्योंकि उसके पास भक्ति और शक्ति है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में सर्वस्व समर्पण करने से प्राप्त होती है। प्रसिद्ध कवियत्री महादेवी वर्मा ने कहा है कि ''आदिकाल से वर्तमान तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, जीवंत यात्रा को सरल बनाकर उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शान्ति भरकर मानव ने जिस व्यक्तित्व और चेतना का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है। नारी केवल माँस पिण्ड की संज्ञा नहीं है अपितु नारी ज्ञान एवं ममता की मूर्ति है।'' सदियों से स्त्री तथा पुरुष दोनों ने कंधा से कंधा मिलाकर इस धरती पर मानव सभ्यता एवं समाज के विकास तथा उत्थान में अपरिमित योगदान दिया है। संसार की जितनी भी सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ हुई हैं, उनमें नारी के त्याग और बलिदान की अमिट गाथाएँ हैं। इसीलिए कहा जाता है कि भारत संस्कृति तथा संस्कारों का एवं गौरवशाली परम्पराओं का देश रहा है। मातृशक्ति ने अपने संकल्प एवं क्षमता से समाज, राष्ट्र एवं विश्व के अनेक आयामों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, अस्तु मनु ने कहा है- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' स्वामी विवेकानन्द ने बताया कि- ''माता ही है जो अपनी संतान को संसार में सत्य-असत्य, उचित-अनुचित, अच्छे-बुरे का भान कराती

है। सैंकड़ों शिक्षण संस्थानों में जाइये, लाखों पुस्तकों का अध्ययन कर लीजिए, सर्वाधिक शिक्षित लोगों की संगत में रहिए ये सभी मानव को बाद में संस्कारित करते हैं। माँ ही एक ऐसी शिक्षिका है जो जन्म से ही संस्कारित करती है। यही कारण है कि माता सर्वाधिक पूजनीय होती है। वह स्वयं को तपाती है, शुद्ध करती है, तब बालक को संस्कारित करती है।''

राष्ट्र की उन्नति का पर्याय महिला शिक्षा

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम मापक है वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें महिलाओं को ऐसी स्थिति में पहुँचाना चाहिए जहाँ से वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं वरन् उनका सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य नारियों के समान अपनी समस्या सुलझाने की क्षमता रखती है, आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर प्रदान करने की। इसी आधार पर भारत की उज्जवल संभावनाएँ सन्निहित हैं।

भारतीय संस्कृति के अनुसार महिलाओं को पुरुषों के समान धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त होने के कारण ही पारिवारिक कार्य में समान रूप से भाग लेती आई हैं। एक दूसरे की सहायता एवं विश्वास से ही जीवन की पूर्णता सम्भव है। यह भी सिद्ध हो गया है कि मानसिक शक्ति की दृष्टि से महिला पुरुष से कम नहीं होती है तभी तो वर्तमान में जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र महिलाओं से अछूता नहीं है चाहे खेल का मैदान हो, विज्ञान-अनुसंधान का क्षेत्र हो, इंजीनियर, चिकित्सा, उद्योग-व्यवसाय, सरकारी या निजी उद्यमों, सीमा-सुरक्षा बल, राजनयिक जैसे पदों पर बराबरी और बखूबी से अपनी भागीदारी का निर्वहन कर रही हैं। शिक्षित नारी अपनी बौद्धिक विकास और भौतिक व्यक्तित्त्व का निर्माण करने में सक्षम रहती है। वे अच्छे संस्कारों को अपनाती हैं, स्वावलम्बी बनकर परिवार का दायित्त्व निर्वाह करती हैं। वे अपनी संतान में वीरता, त्याग, कर्मठता, सदाचार, अनुशासन, की सीख देती हैं। महिला शिक्षित होने पर ही अपने परिवार, समाज को सुशिक्षित-सुसंस्कृत कर सकती है। इसीलिए महात्मा गाँधी ने कहा है कि ''एक बालक शिक्षित होने पर एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को शिक्षित करने पर एक परिवार शिक्षित होता है।'' रविन्द्रनाथ ठाकुर ने भी कहा है कि ''एक योग्य व सुशिक्षित महिला ही भविष्य में स्वस्थ एवं शिक्षित समाज की संरचना में भागीदार हो सकती है। किसी भी समाज की उन्नति महिला शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है।'' डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि ''शिक्षित महिला के बिना पुरुष शिक्षित हो ही नहीं सकता है।'' महिला के शिक्षित होने पर बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या, कुप्रथाओं का निराकरण व अंधविश्वासों से मुक्ति मिल सकती है।

वर्तमान में महिलाओं की स्थिति

प्राचीन भारत में महिलाओं का इतिहास भले ही गौरवशाली रहा हो, संविधान में भले ही पुरुषों के समान इन्हें अधिकार दिये हों, लेकिन व्यावहारिक धरातल पर आम भारतीय महिलाओं की स्थिति एक ऐसे प्राणी की तरह है जिसके शरीर में दिमाग और दृष्टि तो है लेकिन उस पर नियंत्रण किसी और का ही है। संविधान में उल्लिखित नारी और व्यावहारिक पृष्ठभूमि वाले समाज की महिला के बीच का जो अन्तर है उसे इस वैश्विक समय में भी पाटा नहीं जा पा रहा है। यद्यपि वर्तमान में महिलाओं ने अपनी प्रगति और मुक्ति, स्वतंत्र व्यवसाय के रास्ते तलाशे हैं तथापि ऐसी संख्या अभी न्यून है। पुरुष प्रधान संस्कृति की विद्रूप मानसिकता के कारण बेटी से बेटे को ज्यादा महत्त्व देना आज भारी पड़ रहा है। जिस समाज में कन्या भ्रूण हत्या जैसा जघन्य अपराध करने वाले नर पिशाच हों तथा ऐसे लालची लोग हों जो पराये धन को अर्जित करने की चाह में अपनी इन्सानियत पर ही प्रश्न-चिह्न लगाकर बेटी को बेच देते हैं, बेटी का गला घोंट कर मार देते हैं, बहू, बेटी, पराई स्त्री को बुरी नजर से देखते हैं, बलात्कार, रिश्तों की मर्यादाओं को तोड़कर वीभत्स कर्म करने जैसी शर्मनाक घटनाएँ हो रही हैं, ऐसे व्यक्ति भी किसी माँ के बेटे, किसी बहिन के भाई ही होंगे। तलाक के नाम पर बच्चों सहित नारी को जीवन को दोराहे पर छोड़ना, निश्चय ही असंवैधानिक कृत्य है। नारी शाला, वृद्धाश्रम की घटनाओं से हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। महिलाओं की उन्नति में ये ऐसे बाधक तत्त्व हैं जिनके कारण महिलाओं की स्थिति शोचनीय हो गई है। इसके प्रमुख कारण हैं-

सामाजिक ढाँचे में लड़की के प्रति भेदभाव की भावना, अज्ञानता, शोषण, दहेज प्रथा, दो से अधिक संतान होना, कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण बच्चों को रखने या मवेशियों की देखभाल के कारण बालिका को विद्यालय न भेजना।

महिला शिक्षा की आवश्यकता

'माँ' ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है, जो बच्चे में सद्‌गुणों का विकास करती है, जिससे सभ्य समाज की नींव पड़ती है। परिवार, समाज, राष्ट्र नारी की सहभागिता के बिना अपूर्ण है। कवि वर्डस वर्थ ने लिखा है कि- 'द हेण्ड देट रॉक्स द क्रेडल, वीव्स् द नेशन' जो हाथ पालना झुलाते हैं, वे ही राष्ट्र का ताना-बाना भी बुनते हैं। महात्मा गाँधी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''अहिंसा पर आधारित समाज में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान भविष्य निर्माण के अवसर उनकी मौलिक स्थिति, अधिकार तथा बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए। आज के बदले हुए समाज में पुरुष को चाहिए कि वह स्त्री को अपना मित्र या साथी माने।'' देश की स्वतंत्रता के पश्चात् गठित आयोगों ने बालिका शिक्षा के उन्नयन हेतु सृजनात्मक सुझावों में पारिवारिक दृष्टि, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक प्रगति की ओर देश को अग्रसर होने के लिए बालिका शिक्षा को आवश्यक माना है। आज महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की अपेक्षा कम है लेकिन यह भी स्वीकारने वाले तथ्य हैं कि शिक्षा से ही महिलाओं में आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव आया है। महिलाओं में ज्ञान का विकास आत्म निर्भरता, स्वतंत्रता से स्वावलम्बन में पुरुष के बराबर भागीदारी की ओर शिक्षित महिलाएँ अग्रसर हो रही हैं। केन्द्र और राज्य सरकारें बालिका शिक्षा के प्रति गंभीर हैं। वे यह भलीभाँति जानते हैं कि यदि महिला को शिक्षित नहीं किया गया तो सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण नहीं हो सकता है। बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु शिक्षण शुल्क माफ करना छात्रवृत्ति, नि:शुल्क पुस्तकें, साईकिल, स्कूटी, लेपटॉप देकर सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा दे रही है। महिला शिक्षा से लाभ-

1. महिलाएँ स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनेंगी, 2. अपने अधिकारों के प्रति सजग रहेंगी, 3. पारिवारिक जीवन स्तर ऊँचा करेंगी, 4. आर्थिक सहयोग देकर परिवार, राष्ट्र की उन्नति में सहायक होंगी, 5. संस्कारित पीढ़ी का निर्माण करेंगी, 6. निर्भीकता, क्षमता एवं नेतृत्त्व शक्ति का विकास होगा, 7. राष्ट्र विकासोन्मुख कार्यों के प्रति सकारात्मक एवं सहयोगात्मक व्यवहार होगा, 8. पारिवारिक समस्याओं का सदाशयता से निवारण कर सकेंगी, 9. सहिष्णु, साहसी, कर्त्तव्यपरायणता की भावना का संचार होगा, 10. आत्मसुरक्षा, शिष्टाचार, सामाजिक दृष्टिकोण में परिपक्वता आयेगी।

आज भारतीय बालिकाएँ शिक्षित हो कर अपने बुद्धि-वैभव से भारत जैसे विकासशील देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में अहम् भूमिका का निर्वाह कर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी ही पहचान बना रही हैं। ❑

(शिक्षाविद्, स्वतन्त्र लेखक)

परिवार बचा तो राष्ट्र बचेगा

आज समाज में जिन विकृतियों का प्रसार हो रहा है उनकी तह में जाए तो कारण परिवार संस्था का कमजोर होना है। परिवार व्यक्ति को जैसा आर्थिक एवं सामाजिक सम्बल प्रदान करता है वैसा बीमा कंपनी या अन्य संस्थाएँ नहीं कर सकती। यही कारण है कि सुविधाएँ बढ़ रही है मगर प्रसन्नता व्यक्ति से दूर होती जा रही है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अच्छा परिवार ही उसकी खुशी का आधार हो सकता है। मानव समाज में खुशी बढ़ाने के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास किए जा रहे हैं। खुशी बढ़ाने के प्रयास तभी सफल होंगे जब परिवार सबल होंगे। उपभोगवादी संस्कृति का प्रसार परिवार को कमजोर कर रहा है। बच्चों को सुविधाभोगी बनने के स्थान पर परिवार में रहने के संस्कार देने होंगे। यह कार्य स्त्रियाँ अच्छी तरह कर सकती हैं, अत: स्त्री शिक्षा को इस दृष्टि से सक्षम करने की बहुत आवश्यकता है।

❑ **विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी**

हमारा शरीर व व्यवहार दोनों ही प्रकृति की देन है। हमारी कोशिकाओं में उपस्थित डीएनए ही हमारी शारीरिक संरचना व हमारे व्यवहार का निर्धारण करता है। परिवार हमारा व्यावहारिक पक्ष है अत: यह जानना रुचिकर होगा कि प्रकृति इस विषय में क्या कहती है? क्या परिवार मानव समाज की देन है या सजीव जगत् में परिवार पहले से ही उपस्थित है? क्या परिवार चलाना मादा जीव का ही दायित्व है या नर की भी जिम्मेदारी बनती है? परिवार संचालन में स्त्री शिक्षा का क्या महत्त्व है?

जीन का स्वार्थीपन

निर्जीव पदार्थों से जीवन की उत्पत्ति का कार्य प्रकृति में सम्भवत: एक बार हुआ है, पृथ्वी के अतिरिक्त विशाल अन्तरिक्ष में कहीं कोई जीव अभी तक नहीं मिला है। पृथ्वी पर जितने भी जीव पाये जाते हैं वे सभी एक प्रथम जीव की संतानें हैं। जीव का अस्तित्व जीन (डीएनए) के कारण है। कहते हैं कि जीन अपने अस्तित्व को बनाए रखने के विषय में बहुत लालची होती है। अवसर मिलते ही अपनी प्रतिकृति तैयार करने अर्थात जनन द्वारा संतान उत्पन्न करने की ताक में रहती है। कीटों द्वारा लाखों अण्डे या पौधों द्वारा एक ही बार में लाखों बीज उत्पन्न करना जीन के अस्तित्व बनाए रखने का प्रयास ही है। जीन का स्वार्थीपन संतानोत्पति पर ही समाप्त नहीं होता। सक्षम होने तक संतान की रक्षा करने का प्रयास भी जीन करती है। इस प्रयास को जीव वैज्ञानिक पैतृक-रक्षण कहते हैं। प्रकृति में परिवार संस्था की उत्पति जीवों के पैतृक-रक्षण गुण के कारण ही हुई है।

नर भी पालते हैं शिशु

कीट वर्ग से लेकर स्तनधारियों तक पैतृक-रक्षण के कई रूप देखने को मिलते हैं। कहीं नर, कहीं मादा तो कहीं दोनों मिलकर बच्चों का पालन करते हैं। संतान को स्वतन्त्र जीवन जीने योग्य बनाने में मदद करते हैं। समुद्री-घोड़ा नामक मछली में अण्डों के देखभाल की संपूर्ण जिम्मेदारी

नर की होती है। प्रकृति ने नर समुद्री-घोड़े की मदद हेतु उसके शरीर पर एक थैली बनाई जिसमें मादा द्वारा दिए अण्डे सुरक्षित रहते हैं। मोर जैसे दिखने वाले पक्षी 'कास्सोवारी' में अण्डे सेने व शिशुओं की देखभाल करने तक सभी कार्य नर पक्षी करता है। गोरैया पक्षी में नर व मादा जीवनभर साथ रहकर शिशुओं के पालन की जिम्मेदारी निभाते हैं। कोयल जैसे कुछ परजीवी पक्षियों को बच्चा पालना बिल्कुल पसंद नहीं। कोयल अपने अण्डों को कौए के घौंसले में रख कर भारमुक्त हो जाती है। सामाजिकता निभाते हुए कौआ खुशी-खुशी अपने बच्चों के साथ कोयल के बच्चों को भी पालते हैं।

स्तनधारियों में पैतृक-रक्षण का गुण कम होने का कारण यह है कि वे पूर्ण विकसित संतान उत्पन्न करते हैं। जैवविकास की दृष्टि से मानव अन्य जीवों से एकदम भिन्न प्रजाति है। मानव में पैतृक-रक्षण का सर्वोच्च स्वरूप देखने को मिलता है। पैतृक-रक्षण के वशीभूत माता-पिता के सन्तानों के साथ रहने से परिवार संस्था अस्तित्व में आई होगी। माँ-बाप व बच्चों के छोटे परिवार को विस्तृत कर इसमें रक्त संबन्धियों को सम्मिलित करने में स्वार्थी जीन की भूमिका रही है। समान पूर्वजों की संतान होने के कारण रिश्तेदारों में कुछ अंशों तक समान जीनें उपस्थित होती है। समान जीनों के संरक्षण की भावना से सामाजिकता की उत्पति हुई है। कीटों की कई प्रजातियों में अच्छी समाज व्यवस्था देखने को मिलती है।

मानव में विवेक होने के कारण उसने प्रकृति से मिले उपहार में अपनी ओर से भी बहुत कुछ जोड़ा है। उदाहरण के लिए भारतीय संस्कृति में परिवार व समाज को स्थायित्व देने के लिए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष जैसे पुरुषार्थ। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास जैसे आश्रम, वर्ण व जाति व्यवस्था। सुस्पष्ट विवाह संस्था, सोलह संस्कार आदि अनेक सुस्थापित सूत्र पाये जाते हैं। रिश्तों के जितने नाम भी भारतीय संस्कृति में हैं उतने शायद ही कहीं मिले। इन रिश्तों के कारण ही भारत में परिवार एक सुदृढ़ आर्थिक व सामाजिक इकाई बन पाया। मजबूत परिवार से मजबूत समाज और मजबूत समाज से ऐसा मजबूत सांस्कृतिक राष्ट्र बना कि सैंकड़ों वर्षों का विदेशी शासन भी उसे तोड़ नहीं पाया।

महिला और परिवार

जीन को संरक्षित रखने में नर से अधिक भूमिका मादा की होती है अत: प्रकृति ने स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में अधिक सक्षम बनाया है। पुरुषों के वाई गुणसूत्र की तुलना में स्त्रियों का एक्स गुणसूत्र बहुत अधिक प्रभावी होता है। एक्स गुणसूत्र स्त्रियों को अनेक आनुवंशिक रोगों से दूर रखता है। अनुसंधान बताते हैं कि शिक्षा ग्रहण करने में महिला पुरुष में अन्तर वैसे ही हैं जैसे एक पुरुष और दूसरे पुरुष में या महिला में होते हैं। विभिन्न उच्च पदों पर पहुँचकर महिलाओं ने सिद्ध किया है कि अवसर मिलने पर किसी भी भूमिका को सहजता से निभा सकती हैं।

औसत शारीरिक क्षमता पुरुषों में महिलाओं से कुछ अधिक होती है तो परिवार चलाने के लिए सामाजिक समझ महिलाओं में अधिक पाई गई है। महिलाओं को शिक्षित होने व विभिन्न पदों पर कार्य करने के समान अवसर दिए जाएँ तो परिवार व समाज को बहुत लाभ हो सकता है। भारतीय समाज में लड़कियों की स्थिति, पूर्व की तुलना में, कुछ सुधरी है मगर पक्षपात अभी भी जारी है। अनेक परिवारों में लड़कों को लड़की की तुलना में अधिक लाभ दिया जा रहा है। बेटी का हक मारकर बेटे पर अधिक खर्च किया जा रहा है।

परिवार बचे तो राष्ट्र बचेगा

आज समाज में जिन विकृतियों का प्रसार हो रहा है उनकी तह में जाए तो कारण परिवार संस्था का कमजोर होना है। परिवार व्यक्ति को जैसा आर्थिक एवं सामाजिक सम्बल प्रदान करता है वैसा बीमा कंपनी या अन्य संस्थाएँ नहीं कर सकती। यही कारण है कि सुविधाएँ बढ़ रही है मगर प्रसन्नता व्यक्ति से दूर होती जा रही है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अच्छा परिवार ही उसकी खुशी का आधार हो सकता है। मानव समाज में खुशी बढ़ाने के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास किए जा रहे हैं। खुशी बढ़ाने के प्रयास तभी सफल होंगे जब परिवार सबल होंगे। उपभोगवादी संस्कृति का प्रसार परिवार को कमजोर कर रहा है। बच्चों को सुविधाभोगी बनने के स्थान पर परिवार में रहने के संस्कार देने होंगे। यह कार्य स्त्रियाँ अच्छी तरह कर सकती हैं, अत: स्त्री शिक्षा को इस दृष्टि से सक्षम करने की बहुत आवश्यकता है।

विज्ञान बताता है कि तनाव की स्थिति, व्यक्ति के वर्तमान को ही नहीं, उसकी भावी पीढ़िओं को भी प्रभावित करती है। व्यक्ति की आनुवांशिकता तो अप्रभावित रहती है मगर एपिजीनोम परिवर्तित होने से कई पीढ़ियों तक प्रभाव दिखाई देता हैं। विशेषज्ञ इस बात से चिन्तित है कि मानव समाज की वर्तमान स्थितियाँ भावी समाज के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़े बताते हैं कि अवसाद तेजी से फैल रहा है। हम जानते हैं कि अवसाद अनेक रोगों का जनक है। अवसाद का प्रभाव वर्तमान को ही नहीं भविष्य को प्रभावित करेगा। अत: बुद्धिमानी इसी में है कि स्त्री शिक्षा को मजबूत कर परिवार को बचाने का प्रयास करें। परिवार बचा तो राष्ट्र बचेगा। ❑

(बाल एवं विज्ञान विषयक लेखक)

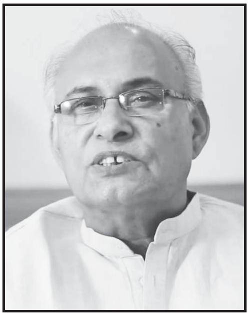

परिवार व समाज न तो स्त्री प्रधान होना चाहिए, न पुरुष प्रधान। वह गृहस्थ प्रधान होना चाहिए। हमारे यहाँ जरूरत पड़ने पर ऐसा होता है भी रहा है, ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब पिता ने अपनी संतानों को माँ तथा बाप दोनों की भूमिकाओं के साथ पाला । ऐसी माताएँ भी है, जिन्होंने अपनी संतानों को पिता के अभाव का अहसास नहीं होने दिया। हम परिवारों के टूटने की चिंता करते हैं, हमें उन कारणों को समझना चाहिये, जिनके कारण यह तथाकथित टूटन आयी है। क्या परिवार के लिए जरूरी है कि वे एक छत के नीचे ही रहें? चार भाई पृथक-पृथक मकानों में रहकर भी एकात्म रह सकते हैं। हमें ऐसी विधियों का अनुसंधान एवं सृजन करना होगा। बीजभूत पारिवारिकता समागमों के अवसरों एवं प्रकारों के बारे में भी चिंतन, अध्ययन करना होगा।

परिवार संस्था की सार्थकता

❑ डॉ. महेशचन्द्र शर्मा

आज भी विश्व में भारत की विवाह पद्धति एवं परिवार संस्था सबसे सुदृढ़, सक्रिय एवं सार्थक है। वह 'थी' नहीं आज भी है। हर युग स्थापित व्यवस्थाओं को चुनौती देता है। युग में परिवर्तन होता है, तब एक मध्यवर्ती 'संक्राति काल' आता है। हम उसी संक्राति काल से गुजर रहे हैं। इसीलिए आज हमें परिवार संस्था टूटती-बिखरती दिखाई दे रही है । इस तथाकथित टूटन एवं बिखरन को समझने की आवश्यकता है, इसके लिए सांगोपांग अनुसंधान की भी जरूरत है। हम लोग भरे पूरे परिवार के हिमायती रहे हैं, लेकिन आज जब हम बेटी का विवाह करते हैं तब कैसा घर चुनते हैं? जहाँ देवरानियों-जेठानियों व ननदों का बाहुल्य हो, क्या वे घर हमको अपनी बेटी के लिए वरीय लगते हैं? नहीं आज ऐसा नहीं है । क्योंकि हम जानते हैं कि हर बड़ा परिवार कलहग्रस्त भी होता है । सहकार एवं स्नेह की अपेक्षा होती है, लेकिन वहाँ स्पर्धा व द्वेष भी होता है। परिवार में पारिवारिकता बनी रहे, इसके लिए कुछ तपस्यायें भी करनी पड़ती हैं। वे तपस्यायें कल क्या थीं, आज क्या हों? पुनः इसके लिए अध्ययन एवं अनुसंधान की आवश्यकता है। अन्यथा पारिवारिक ढाँचे के चरमराने की चिंता व्यक्त करने की कोई सार्थकता नहीं रहेगी।

आजकल एक विषय की बड़ी चर्चा होती है, हालांकि इस विषय की वैज्ञानिकता एवं तार्किकता पर्याप्त संदेहस्पद है। वह विषय है स्त्री एवं पुरुषों की समानता या असमानता । इस विषय का संदर्भ पाश्चात्य है, लेकिन भारतवर्ष में इस विषय की स्थिति क्या है ? परिवार संस्था में महिला की सकारात्मक भूमिका पर प्रभूत साहित्य उपलब्ध है। इस तथ्य पर भी कोई विवाद नहीं है कि भारत की विवाह एवं पारिवारिक संस्था की सफलता में महिला की भूमिका निर्णायक है। निर्णायकता की भूमिका अदा करके इस महिला की स्थिति क्या है? जिन परिवर्तनों की आज माँग हो रही है, उन परिर्वतनों का आकांक्षी कौन है? क्या भारत की महिलाओं में आर्थिक स्वालम्बन की आकांक्षा पनप रही है? ऐसा क्यों है? गोस्वामी तुलसीदास जी ने पार्वती के विवाह के संदर्भ में कहा है ' केहि विधि सृजी नारि जग मांही'। परमात्मा से शिकायत की जा रही है कि हे परमेश्वर! तूने क्या सोच कर इसे रचा? आज चाहे पाश्चात्य प्रभाव से ही क्यों न हो, यह सवाल पूछा जा रहा है कि ठीक है, परिवार संस्था अच्छी है, अच्छी रहनी भी चाहिए, लेकिन इस अच्छी संस्था के लिए सारा त्याग नारी ही क्यों करें? भारत में तो कहा गया है कि स्त्री और पुरुष गृहस्थीरथ के दो चक्के हैं, क्या इन चक्कों की समता अब भंग हो चुकी है, क्या परिवार गृहणी केन्द्र ही होना चाहिए। गृहस्थ एवं गृहणी

की एकात्मता का युगभाष्य क्या है? जब हम लोग चर्चा करते हैं तो अपने सीमित परिवेश के अनुभव के आधार पर चर्चा करते हैं। सामान्यत: यहाँ हम जो लोग बैठे हैं, वे नगरीय संस्कृति के लोग हैं। गाँवों में जाते हैं तो हम देखते हैं खेती में महिलाएँ पुरुषों से कम काम नहीं करती हैं, घर भी सँभालती है। परिवार का स्वरूप सारे देश में एक सा नहीं है। क्षेत्र का, समुदायों का एवं जाति-पंथ का भी इस स्वरूप में फर्क है। परिवार संस्था का एक आधारभूत तत्त्व है 'रक्त संबंधों के कारण उत्पन्न हुई 'एकात्मकता' इस परिवार के अनेक रूप हम समाज में देखते हैं । आज बिल्कुल यह सोचने का विषय है कि परिवार संचालन में गृहिणी एंव गृहस्थ की भूमिका को परस्पर पूरक कैसे बनाया जाये। प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं है, पर सम्पूरकता की आवश्यकता है।

आज जो सामाजिक मानसिकता है, उसे हम पुरुष प्रधान भी कह सकते हैं। मान लीजिए मैं घर में हूँ, छुट्टी का दिन है, मैं कपड़े धो रहा हूँ, उनमें मेरी पत्नी के कपड़े भी हैं। उसी समय कोई घर में आ गया और उसने देखा कि मैं अपनी पत्नी के कपड़े धो रहा हूँ, उसे क्या लगेगा? ये कैसा आदमी है, अपनी बीबी के कपड़े धो रहा है, ये जोरू का गुलाम है। वही आदमी आया और मेरी पत्नी कपड़े धो रही है, उसे क्या लगेगा? ठीक है, यह औरत अपना कर्त्तव्य निभा रही है। यह स्थिति रहनी चाहिए क्या? इस स्थिति को कैसे दुरुस्त करें?

विद्यार्थी परिषद् में श्री यशवंत राव केलकर हम लोगों के मार्गदर्शक थे, उनके घर हम जाते थे। हम देखते थे, वे सब्जी काटते हुए हम से बातचीत कर रहे हैं, क्या यह हमारे अपने परिवारों का सामान्य व्यवहार है ? यह सामान्य नहीं है। अपने गृहस्थाश्रम को हम गृहिणी -गृहस्थ समन्वित कैसे बनायें? गृहिणी को दोयम दर्जे की पारिवारिकता से कैसे मुक्त करें? हम चाहे, न चाहे, अब हम इस स्थिति को नहीं उलट सकते कि कल तक जो काम केवल पुरुषों के माने जाते थे वे स्त्रियाँ भी करने लगी हैं। स्त्री व पुरुष के कार्यों का वैसा बँटवारा जो विगत काल में था, अब नहीं चल सकता। यदि हमने इसे बदलने का प्रयत्न भी किया तो वह व्यर्थ जायेगा। परिवार के कार्यों की महत्ता को समझना होगा। रसोई भी महत्वपूर्ण है। वस्त्र प्रक्षालन भी महत्वपूर्ण है। यदि ये कार्य पुरुष भी करें तो उनका कद घट नहीं जायेगा। यह बात हमें शैक्षणिक पाठ्यक्रम के माध्यम से सिखानी होगी। संतानोत्पत्ति एव संतान पालन का कार्य फैक्टरी को चलाने या प्रशासन करने से छोटा नहीं है, इसे गृहस्थ समझें इसकी जरूरत है। आज इसको समझाने वाला कोई तंत्र नहीं है। परिवार व समाज न तो स्त्री प्रधान होना चाहिए, न पुरुष प्रधान। वह गृहस्थ प्रधान होना चाहिए। हमारे यहाँ जरूरत पड़ने पर ऐसा होता है भी रहा है, ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब पिता ने अपनी संतानों को माँ तथा बाप दोनों की भूमिकाओं के साथ पाला । ऐसी माताएँ भी है, जिन्होंने अपनी संतानों को पिता के अभाव का अहसास नहीं होने दिया। हम परिवारों के टूटने की चिंता करते हैं, हमें उन कारणों को समझना चाहिये, जिनके कारण यह तथाकथित टूटन आयी है। क्या परिवार के लिए जरूरी है कि वे एक छत के नीचे ही रहें? चार भाई पृथक-पृथक मकानों में रहकर भी एकात्म रह सकते हैं। हमें ऐसी विधियों का अनुसंधान एवं सृजन करना होगा। बीजभूत पारिवारिकता समागमों के अवसरों एवं प्रकारों के बारे में भी चिंतन, अध्ययन करना होगा। बीजभूत पारिवारिकता को पुष्ट करने वाली विधियाँ खोजनी होंगी। कलह मूलक पारिवारिकता को कोई भी गले नहीं लगाना चाहेगा, यह हम सबको समझना चाहिए।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जो अच्छी थीं, लेकिन आज कालबाह्य हो गयीं। जैसे परिवार होता है तो परिवार की कुछ परम्पराएं होती हैं। वंश एवं गोत्र परम्परा होती है। यहाँ आकर हमारी प्रक्रिया रुक जाती है। इस प्रक्रिया के रुकने के जो दुष्परिणाम हो रहे हैं। उन्हीं को लक्षित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सर-संघचालक बाबा साहब देवरस को कहना पड़ा 'हिन्दू समाजव्यापी रोटी-बेटी व्यवहार होना चाहिए।' यह आसान नहीं मुश्किल कार्य है। जब हम अन्तर्जातीय विवाहों को देखते हैं तो ध्यान में आता है, एक सामान्य गृहस्थ की तुलना में उन्हें कुछ अतिरिक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन समस्याओं का अनुसंधान करना तथा इनके समाधान का लिखित साहित्य तैयार करना युग की आवश्यकता है। हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि कल तक विवाह एक पारिवारिक अनुष्ठान था, लोग अपने खून के रिश्तों वाले परिजनों को आमंत्रित करते थे। आज स्थिति बदल गयी है। विवाह एक सामाजिक अनुष्ठान बनता जा रहा है। अब समारोह में रक्त- सम्बंधों के मेहमानों की संख्या कम और अपने संबंधों के सामाजिक सम्पर्क वाले मेहमानों की संख्या ज्यादा रहती है। क्या इस स्थिति में विवाह का स्वरूप वही रह सकता है, जो पहले रहा करता था? परिवर्तन निश्चित है यह परिवर्तन कैसा हो तथा वांछित परिर्वतन को कैसे प्राप्त किया जाये, इसके लिए अध्ययन की आवश्यकता है। इन बड़े-बड़े विवाह समारोह में कौन-कौन सी बातें हैं, जो हमारे संस्कारों के अनुकूल नहीं हैं? ऐसी कौन-कौन सी बातें हो सकती हैं, जिन्हें संस्कारों के अनुकूल बनाने के लिए इनमें जोड़ देना चाहिए? इसके लिए अनुसंधान जरूरी है, इन्हें अनुसंधानपूर्वक लिखने की आवश्यकता है, बजाय यह शिकायत करने के कि पश्चिम का अंधानुकरण कर रहे हैं। देखो, कौन सा गीत बज रहा है? बच्चे कैसे नाच रहे हैं, उन्हें आनंद की यह विधि मालूम है। यदि आपके पास विकल्प है तो जरूर दीजिये। विकल्प नहीं दे सकते तो शांत रहिये। उनको नाचने दीजिए।

आज हमारे देश में जिस प्रकार के आकार ग्रहण करते जा रहे हैं, उनको जानना चाहिए, सारे देश में उनका स्वरूप एक सा नहीं है। शहरी जीवन में उसका जो स्वरूप उभर रहा है,उससे ज्यादा हम परिचित हैं। गाँवों में विवाह अभी भी एक पारिवारिक उपक्रम है। हमारी जो जन-जातियाँ हैं, उनमें विवाह की भिन्न-भिन्न विद्याएँ हैं। हिमाचल

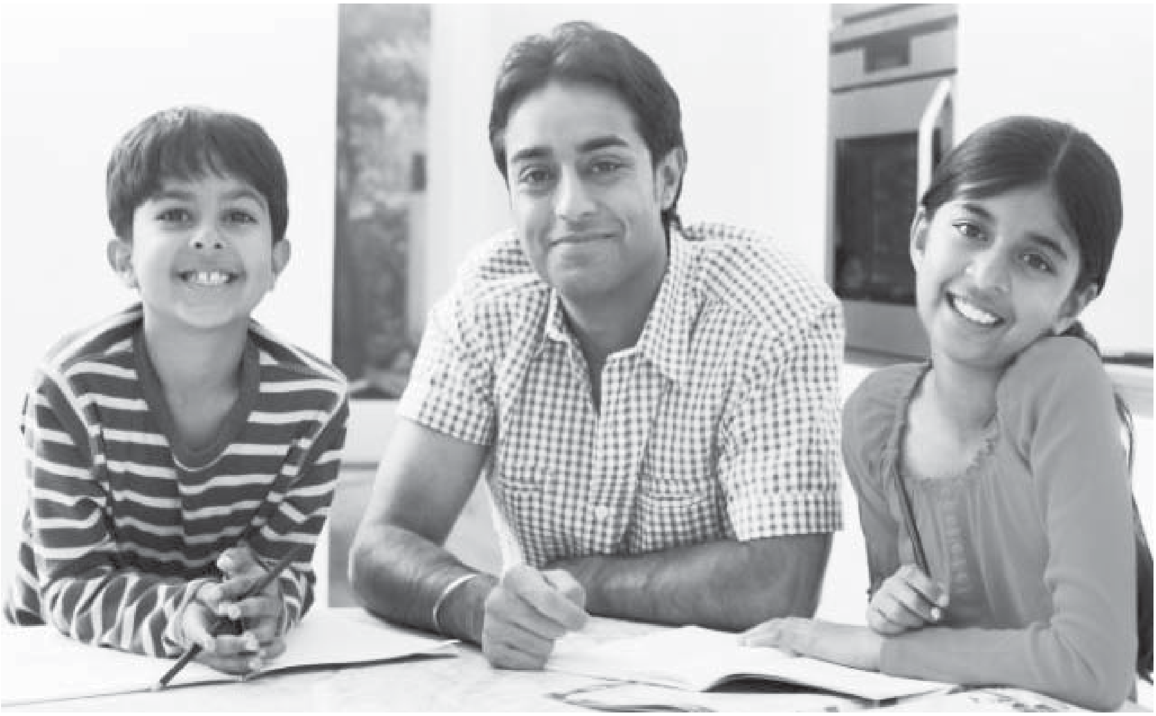

प्रदेश के लाहोलस्फीती में आज भी द्रौपदी प्रथा है। जो बाहर से आते हैं, उन्हें यह अजीब लगता है, वहाँ यह सामान्य है सहज है। अत: हमें आपस में संवाद की जरुरत है। यदि हमें ऐसा लगता है कि इससे कुछ निकलने वाला है, जो कालांतर में समाज के लिए घातक होगा, तो हमें शिक्षा के माध्यम से वहाँ जाकर उन्हें बताना होगा, बातें उनकी भाषा एवं मुहावरे में ही कहनी होगी। हमारा जिन शहरों में संबंध है, वहाँ पढ़ने-लिखने के कारण महिलाएँ घर से बाहर निकलने लगी हैं, लेकिन पूर्वांचल में ऐसा नहीं है, वहाँ तो सब दुकानों में महिलाएँ बैठी हुई हैं। वहाँ की गृहस्थी क्या पश्चिमांचल भारत से भिन्न प्रकार की है? तो उसकी क्या स्थिति है? अभी अकादमिक तौर पर परिवार संस्था का पूरा अध्ययन नहीं हुआ, अन्वेषण नहीं हुआ। अत: भारतीय परिवार संस्था की सुनिश्चित समस्या क्या है, हम नहीं जानते। जानते ही नहीं तो समाधान क्या बतायेंगे?

ऐसा लगता है जो गृहस्थ विद्यापीठ बनने जा रहा है, यह एक पायनियर वर्क है। यह एक ऐसा कार्य है, जो कई युगों के बाद भारत में प्रारंभ हो रहा है। हम सनातनी परिवार के विवाह संस्कारों को अच्छा मानते हैं। जो उन श्लोकों के अर्थ होते हैं, वे सारगर्भित हैं। लेकिन वे श्लोक आज मात्र कर्मकाण्ड बन गये हैं। कर्मकाण्ड बनने के भी कारण हैं। क्यों बने कर्मकाण्ड? ये कर्मकांड धर्माचार बनें, इसके लिए हमें किसी विधि का निर्माण करना होगा। उन श्लोकों को कागज पर छापें, उनका हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करें। विवाह के पूर्व वर को तथा वधू को पढ़ने के लिए दिये जायें, विचार करने के लिए दिये जायें, फिर माता-पिता और वर -वधू की सामूहिक चर्चा हो। उसका अच्छा फ्रेम बनाकर वर-वधू को भेंट करें। वर ने जो वधू को वचन दिये हैं, उनको अलग निकाल कर वधू को दिया जायें। उनकी गृहस्थी में कोई समस्या आये तो माता-पिता और पंडित प्रवर उसमें दखल करें। यह विधि है, ऐसा नहीं, यह केवल उदाहरणार्थ है, वस्तुत: ऐसी किसी संगत विधि का अनुसंधान होना चाहिए। भारत की विवाह संस्था को सजीव बनाने में ऐसे अनुसंधान का बड़ा योगदान होगा।

संघर्ष

जब पांडव अपने वनवास काल में प्रभाव क्षेत्र में तपस्या करने पहुंचे तो श्रीकृष्ण और बलराम उनसे मिलने आए। बलराम ने कहा, 'इधर युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा वन में अपार कष्ट उठा रहे हैं, उधर दुष्ट दुर्योधन शासन का सुख उठा रहा है। इसे देखकर तो लोग यही समझेंगे कि धर्माचरण से श्रेष्ठ तो अधर्म का आचरण है। 'यह कहकर बलराम रो पड़े। युधिष्ठिर ने बलराम को समझाते हुए कहा, 'हमारे कष्ट देखकर आप विचलित न हों। अंतिम विजय धर्म की ही होती है। श्रीकृष्ण समय आने पर पराक्रम और नीति के बल पर अधर्म पर धर्म की विजय दिलाने में सक्षम हैं। ' श्रीकृष्ण ने कहा, पांडवों की इस दशा से साधारण मनुष्य को यह संदेह मिलेगा कि जीवन में कोई भी बड़ी उपलब्धि संघर्ष से ही प्राप्त होती है और विजय के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। ❑

(अध्यक्ष, एकात्म मानववाद दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, पूर्व अध्यक्ष भाजपा, राजस्थान)

सदैव आवश्यक महिला शिक्षा

देखने में आया है कि पढ़ी लिखी माँ अपने बच्चों का स्वास्थ्य और शिक्षा और प्रशिक्षण की बेहतर रूप-रेखा तैयार कर सकती हैं और उनका बेहतर खयाल कर सकती हैं जिसकी वजह से उनके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में जल्दी विकास कर सकते हैं। इसके विपरीत अनपढ़ या कम पढ़ी लिखी महिलाएँ अपने बच्चों की उस तरह परवरिश नहीं कर पाती हैं जिस तरह से परवरिश करनी चाहिए साथ ही उसके बच्चे भी बीमारियों का शिकार रहते हैं, क्योंकि वह स्वास्थ्य नियमों के अनुसार अपने बच्चों की परवरिश नहीं कर पाती हैं। जबकि पढ़ी लिखी माँ बच्चे की शुरू दिन से ही बेहतरीन ख्याल रखती हैं भोजन उचित देने के कारण वह स्वस्थ रहते हैं।

❑ **मोहम्मद शहजाद**

शिक्षा एक ऐसी चीज है जो हर इंसान के लिए इस तरह महत्त्वपूर्ण है जिस तरह ऑक्सीजन जीवन के लिए जरूरी है। शिक्षा के बिना मनुष्य बिल्कुल जानवर की तरह है यही शिक्षा है जो इंसान को बुद्धि और चेतना के धन से मालामाल करती है और जीवन की हकीकतों से अवगत कराती है बिना ज्ञान मनुष्य कभी भी सीधी राह पर नहीं चल सकता है। ज्ञान ही मनुष्य को अधिकार की राह की ओर ले जाता है। शिक्षा के महत्त्व के बारे में लगभग सभी लोग परिचित हैं और इसी कारण कई लोग अपने जीवन को ज्ञान की प्राप्ति के लिए निछावर कर देते हैं और यही वजह है की सभी धर्मों में ज्ञान प्राप्त करने पर काफी जोर दिया गया है।

आज के विकसित दौर में जो भी देश का निर्माण व विकास चाहता है वह अपनी विकास यात्रा में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी भी चाहता है क्योंकि किसी भी देश का विकास व उन्नति में पुरुषों के साथ महिलाओं की भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण है और जो महिलायें इस भूमिका में हिस्सा ले रही हैं उनका महत्व बिल्कुल इंकार नहीं किया जा सकता है। महिलाएँ भी पुरुषों की तरह विभिन्न विभाग और सेवाओं में हिस्सा लेकर देश की सेवा कर रही हैं और उनके बा-मुकाम काम कर रही है और यह केवल इसलिए संभव हुआ है कि वे शिक्षा के गहने से सुसज्जित हैं।

वैसे तो शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करना हर मर्द और औरत का अधिकार है लेकिन पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्ति ज्यादा जरूरी है क्योंकि उन्हें आगे आने वाली पीढ़ी की अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण जो करना है। आगे आने वाली पीढ़ी की अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण में एक पढ़ी-लिखी माँ ही बेहतर हिस्सा ले सकती है। इसलिए उनका शिक्षित होना जरूरी है ताकि वह देश की खुशहाली और स्थिरता में अपनी भूमिका निभा सकें। देखने में आया है कि पढ़ी लिखी माँ अपने

बच्चों का स्वास्थ्य और शिक्षा और प्रशिक्षण की बेहतर रूप-रेखा तैयार कर सकती हैं और उनका बेहतर खयाल कर सकती हैं जिसकी वजह से उनके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में जल्दी विकास कर सकते हैं। इसके विपरीत अनपढ़ या कम पढ़ी लिखी महिलाएँ अपने बच्चों की उस तरह परवरिश नहीं कर पाती हैं जिस तरह से परवरिश करनी चाहिए साथ ही उसके बच्चे भी बीमारियों का शिकार रहते हैं, क्योंकि वह स्वास्थ्य नियमों के अनुसार अपने बच्चों की परवरिश नहीं कर पाती हैं। जबकि पढ़ी लिखी माँ बाल्यकाल से ही उनका बेहतरीन ख्याल रखती हैं भोजन उचित देने के कारण वे स्वस्थ रहते हैं।

जब माँ अच्छी परवरिश देकर बच्चों को अच्छी दिशा देंगी तो हमारा राष्ट्र भी अच्छा राष्ट्र बनेगा जिससे यह बात साबित होती है कि सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र तब बनता है जब माँ पढ़ी-लिखी, जागरूक और समझदार होती हैं आज जब हर तरफ मीडिया अपने प्रभाव लोगों पर डाल रहा है इंटरनेट, केबल और वीडियो गेम भी बच्चों के चरित्र को बिगाड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में एक पढ़ी लिखी और जागरूक माँ ही अपने बच्चों को उनके प्रभाव से सुरक्षित रख सकती है और समय की आवश्यकताओं के अनुसार अपने बच्चों का प्रशिक्षण सही रूप से कर सकती है। क्योंकि शिक्षित होने की वजह से वह अच्छे बुरे की तमीज बेहतर कर सकती है जो कि बच्चों को एक अच्छा इंसान और उपयोगी नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होता है हिन्दुस्तान के दूरदराज और पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर अफसोसजनक हद तक कम है, लेकिन इसकी वजह यह नहीं है कि वहाँ पर शिक्षण संस्थानों का अभाव है। वहाँ पर शैक्षणिक संस्थान तो हैं मगर वहाँ के घर के मुखियाओं में महिलाओं को शिक्षा दिलाने का रुझान नहीं है। घर के मुखियाओं के अनुसार शिक्षा पाने के बाद वह अपने अधिकारों की माँग करने लगती हैं और पढ़ लिख कर परिवार की बदनामी का कारण बनेंगी। इन क्षेत्रों की महिलाएँ पूर्ण रूप से शिक्षा और समाज की जानकारी चाहती हैं, लेकिन सामाजिक प्रथा व रिवाज और पर्दे के कारण पढ़ाई नहीं कर पा रही हैं और इसके साथ ही घर वाले भी लड़कियों की पढ़ाई पर अधिक ध्यान नहीं देते जो एक चिंतनीय विषय है अब यह सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह हर हाल में इस पर विचार करें ताकि यह महिलाएँ भी शिक्षित हो कर आने वाले भविष्य की पीढ़ी को विकसित कर पाए तथा अपनी योग्यताओं को भी प्रयोग में ला सकें।

पिछले कुछ सालों से हिन्दुस्तान की महिलाओं में शिक्षा पाने की चेतना जाग्रत हुई है। जिसकी वजह से अब पहले की तुलना में काफी संख्या में महिलाएँ विभिन्न क्षेत्र में पढ़ाई कर रही हैं और अलग-अलग विभाग में नौकरी कर देश की सेवा के साथ साथ घरवालों का प्रयोजन पूर्ण कर रही हैं और देखने में यह भी आया है की घर के प्रमुख के ना रहने की स्थिति में या घर का प्रमुख कामकाज के योग्य ना-रहने की वजह से घर प्रणाली चलाने की जिम्मेदारी भी महिलाएँ बा-खूबी संभाल लेती हैं इसके अलावा आज के इस दौर में जब मँहगाई की मार हर जगह पड़ रही है कमाने वाला एक और खाने वाले दस हो तो यह जरूरी हो जाता है कि आर्थिक रूप से मजबूत होने के लिए महिलाएँ भी पुरुषों के साथ काम करें और यह तभी संभव होता है जब वह शिक्षा के गहने से सुसज्जित हैं क्योंकि बिना शिक्षा के वह किसी भी प्रकार की उत्कृष्ट नौकरी नहीं कर सकती हैं इसलिए हर महिला को जितनी भी हो सके शिक्षा के मैदान में आगे आना चाहिए ताकि कल को किसी भी अप्रिय स्थिति में अपने पाँव पर खुद खड़ी हो सकें और किसी पर बोझ न बनें। ❑

Ancient Bharatiyas did not treat woman as a different category from man, as Plato did in Greece. For us, both woman and man are integral part of complete whole which is exhibited through Bharatiya presentation of "Ardhnariswara". (We have many Ardhnariswara temples through the length and breadth of our nation). For us, knowledge is for all those who are interested and capable of, man or woman does not matter. In our present situation, we have to continuously make serious efforts towards bringing women education at par with men, as women in Bharat were suppressed for over a thousand years.

Women and Education

❑ **Dr. TS Girishkumar**

Ancient Greece is from where European knowledge tradition takes its roots, and one of the most important personalities for them is Plato.Plato has a ladder of beings, in which on top is The Idea of Good, then Demiurge, then gods and goddesses, then Heroes, then Man and then comes women and animals. One knows that in Greek democracy, women and slaves did not have the right to cast votes; slaves obviously were prisoners of wars, but women? A step further, can we not look at ancient Greece to know what used to be the actual living status of women there? Well, this philosophy is what later becomes the foundation for almost everything in European perspective to women.

The Romans who neutralised Greek Hellenistic religion carried much from the Greeks, including Hellenism in disguise. They also carried the perspective to women as something below, inferior. Christianity carried forward patriarchy inherited from Old Testament, and in papacy, women continued to be unattended to. What is seen in today's Sharia is nothing but a repetition of what used to be with medieval Christianity. And the status of women in these laws, need not be explained.

Movements of feminism

In modern Europe, with their liberation from the jail like situation of mediaeval papacy, as they 'found' religion (Christianity) as the root cause of all miseries, they broke away to science, scientificity, positive philosophy, where religion is implied as negative, superstition and the like. Freedom to women from domination of men in various forms in a male dominated society became important to some women, where some men also got involved. This movement became feminism subsequently, and developed into many newer patterns and directions.

Nonetheless, feministic movements had no conspicuous impact on religion, both Christianity and Islam. Even today, we hear the Pope saying that there shall not be any women priests, because he is aware that such movement shall lead Christianity to theological contradictions. Their religions simply refuse to treat women at par with men. I need not speak about Islam, the case of which is a miserably known fact. Some of us must also have seen videos in internet, of stoning to death of women under the sharia law of Islam.

The only solace to feminists came from the communists and anarchists. The communists and anarchists stayed away from the mainstream society on a regular term, (most likely because the main stream society did not accept them) and their efforts whatever, did not matter to any one seriously. As a matter of fact such people were never included in the mainstream by societies all over the world because of their extreme negative perspectives. In utter desperation, as they were getting rejected, the communists directly went for another disguise in the name of critical theories, and found some space among the academics and intellectuals. The very conception of 'intellectuals' was generated for them, by them, and to their purpose, which really 'payed' them indirectly at least, though with no lasting impact.

The headways they could make were for short terms, but they did make headways in universities, in the media and also in the world of publications. From this, we see those making caucuses, maintaining a closed fortress and trying hard to prevent others from entering universities, entering media and entering into publishing. Obviously, this is also not lasting, though they do maintain their "hegemony" wherever and whenever they get opportunities.

Epistemological situation in ancient Bharat

Women in ancient Bharat used to enjoy special status. It was beyond a distant dream for Bharatiya knowledge tradition to discriminate women. Fundamentally, women simply remain the mother principle, and what mother is to Bharatiya Sanskriti, need not be spelt out.

With the Sankhya, creation is understood through two principles of Prakriti and Purusha. In modern terminology, Prakriti could be called matter and Purusha consciousness. When it comes to 'Yogavasistam', (5:23) Purusha and Prakriti becomes Siva and Sakti, where Siva is termed 'the un-manifested' and Sakti 'the manifested'. If one takes a leap into modern physics, this becomes even more interesting, as one looks at the two laws of physics, 'the law of conservation of energy' and the 'law of conservation of matter'. Both energy and matter are neither created, nor destroyed, both in their pure form can't be comprehended, both can only be known through one or the other of their forms and every form is constantly shifting and changing forms, as no form is permanent. It shall be that formless, both energy and matter, which shall be termed 'reality' and the forms available to us, illusory or 'Maya' (borrowing from Sankaracharya)

The world, the cosmos, the 'everything' of our perception is innumerable permutations and combinations of this energy and matter to physics. Yogavasistam substitutes energy with Siva and matter with Sakti and says that the entire cosmos is innumerable permutation and combination of Siva and Sakti. Siva is the un-manifested and Sakti the manifested, actually going much beyond physics to explain phenomenal world. Permit me to say, transcending physical knowledge from physics. (I should implore forgiveness from Maharishi Vasishta for going to Yogavasistam from physics, actually, it should have been the other way round)

Now Sakti is the mother principle, womanhood in Bharatiya knowledge tradition. Right at the level of philosophy, there is no question of not being equal, on the contrary, we are shown that they both are having distinct and unique qualities and one cannot be separated from the other, and at the same time, one also cannot replace the other. Such becomes the understanding of feminine principle in Bharat.

Moving more towards mundane from philosophical and Dharmic discussions, let us look at the role women play in Bharatiya society. Bharatiya homes are woman centred and not man centred, do I have to explain this? The woman at home

is also the mother of children, and in reality, she runs the home, and without her, there is no home. This is how we see woman, in society, in homes and also in education. We have ample examples of woman scholars, and also women rulers. These things are well known to all of us. It is also a matter of great pride to people of Bharat that we had such impeccable system of education in the past, such great tradition of knowledge, we respected everything in the nature and we also respected our women.

The last thousand years of alien rule in Bharat

After Prithviraj Chauhan of Delhi, Bharat was predominantly under the clutches of outsiders. Alexander, son of Phillip of Macedonia was the first official invader on Bharat, and then came the first ever and most brutal Muslim invader, Qasim who invaded the Sindh and made the Sindhis Muslims. Then came invasions from other Muslims and finally they came to settle and rule.

Aliens brought their ways of living and perceptions, and also imposed their ways on us, and they were the political rulers then. For them women used to be an entirely different concept as compared with our knowledge radition. How they looked at and understood women need not be discussed, we know well such things. The Semitic ways, be it Christian or be it Islam, were drastically different from the Bharatiya ways of viewing women.

Bharatiya Mahila, who used to be free and safe in the society suddenly became oppressed and pushed indoors. In Hindu society, women's vanity and pride used to be the self-respect of the entire society, but with the aliens entering our society, it had all become very different. Bharatiya Nari started jumping into hugely lit fire to become Sati to save their vanity and respect. They had to 'cover themselves' to escape demeaning looks from the men. With the presence of aliens in Bharat, there evolved women as a distinct category from men.

Obviously, women became inferior to men in the imported value system. The routine assignments of women in families also started getting viewed as inferior workload. The sanctity attached to upbringing of children, the future society had got lost, and the sanctity to food preparation also got lost. Though women in Bharat did not get lowered to the level of objects of prudence like in the Semitic societies, their respect got considerably damaged and nearly lost.

The alien rule had made our women hide behind curtains; withdraw to kitchen and not to involve in any public life seriously. Of course, the period of alien rule was indeed a period of oppression and subjugation, our wealth was looted, property was looted, temples were destroyed and looted and kingdoms were brought down.

Educating our women

Ancient Bharatiyas did not treat woman as a different category from man, as Plato did in Greece. For us, both woman and man are integral part of complete whole which is exhibited through Bharatiya presentation of "Ardhnariswara". (We have many Ardhnariswara temples through the length and breadth of our nation). For us, knowledge is for all those who are interested and capable of, man or woman does not matter. In our present situation, we have to continuously make serious efforts towards bringing women education at par with men, as women in Bharat were suppressed for over a thousand years.

This should be not a very difficult task for us, given Bharatiya Sanskriti. When it becomes possible for us to see woman through Bharatiya Sanskriti, woman automatically shall become empowered. The more one becomes Bharatiya, the more empowerment of woman becomes automatic. But till such time, there must be special attention, efforts and all kinds of support towards educating our women, so that they shall be in the forefront of nation building. With our tradition of great queens and scholarly women, this has to be a simple and natural phenomenon. But we have to work to expedite the 'de-estranging' process of our women, as in archtype, Bharatiya women are neither alienated, suppressed, nor side-lined. I am sure that as India is marching forward to becoming Bharat; women in India shall also be marching forward to becoming Bharatiya Nari. Let us say, Jai Mata di. ❑

(Professor of Philosophy, The Maharaja Sayajirao University of Baroda)

बड़े नोटों का विमुद्रीकरण एक साहसिक फैसला

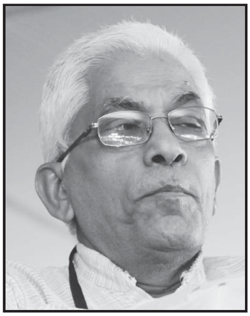

❑ सन्तोष पाण्डेय

देश हित को सदैव सर्वोपरि रखने वाले भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने काली मुद्रा व काले धन की समाप्ति की दृष्टि से 8 नवम्बर, 2016 की मध्यरात्रि से 500 व 1000 रुपये के नोटों के चलन को बन्द करने की घोषणा की। यह काले धन की समाप्ति के साथ-साथ देश में प्रचलित जाली मुद्रा, भ्रष्टाचार व आतंकवादी गतिविधियों के लिए धन की व्यवस्था को रोकने में कारगर होगी। यह ऐतिहासिक, क्रांतिकारी व साहसिक कदम है जो प्रधानमंत्री द्वारा 2014 में जनता से किये गये वादे कि वे कालेधन की समाप्ति के लिये निर्णायक कदम उठायेंगे के प्रति प्रतिबद्धता व समर्पण को व्यक्त करता है। कुछ समय के लिये जब तक कि नई मुद्रा यथोचित मात्रा में चलन में नहीं आ पाती है, सामान्यजन को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु उज्ज्वल भविष्य व दीर्घकालीन लाभों और अर्थव्यवस्था को स्वच्छ व ईमानदारी से परिपूर्ण बनाने के दीर्घकालीन लक्ष्य को प्राप्त किया जाना संभव होगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में सर्वाधिक गति से बढ़ने वाली, अर्थव्यवस्था है। इसकी आवश्यकताओं के अनुरूप मौद्रिक आपूर्ति तेजी से बढ़ती गई है। सकल घरेलू उत्पाद में तीव्र वृद्धि के अनुरूप मौद्रिक आपूर्ति तो बढ़ाई गई, परन्तु देखा गया कि इस आपूर्ति के अनुरूप जितने लेन-देन होने चाहिये, उसकी तुलना में वास्तविक लेन-देन बहुत अधिक थे जो कि प्रकटत: कालेधन की समानान्तर अर्थव्यवस्था के परिचायक थे। नोट बंदी के निर्णय के समय देश में 17 लाख करोड़ से अधिक के नोट चलन में थे, जिनमें 86 प्रतिशत नोट 500 व 1000 रुपये के थे। इनकी कुल राशि 14 लाख करोड़ से अधिक की थी। रिजर्व बैंक ने नोटों की निगरानी व्यवस्था के दौरान यह पाया कि 500 व 1000 के नोटों की अनेक सीरीज में कुछ सीरीज जिनकी अनुमानित राशि 6 लाख करोड़ आँकी गई वे चलन में अधिक सक्रिय नहीं है। स्वाभाविक है कि ये नोट काला बाजारियों व मुनाफाखोरों द्वारा संचित कर लिये गये थे जो चलन में आने पर अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित कर सकते थे। इतनी बड़ी राशि चलन से बाहर होने के कारण बैंकिंग व्यवस्था को सुदृढ़ता मिलनी चाहिये, वह उद्देश्य पूरा नहीं हो पा रहा था। यहाँ काली मुद्रा व कालेधन का अन्तर स्पष्ट करना उपयोगी होगा। काली मुद्रा सामान्य बोल चाल में काला धन वह राशि है, जो बाजिब कर चुकाये बिना और बिना हिसाब के संचित की जाती है। काली मुद्रा वह है, जो चलन की मुद्रा के रूप में लेन-देन (Transations) में काम आती है। इस काली मुद्रा से जब मकान, जमीन, जायदाद, खेत, सोना, चाँदी, हीरे जवाहरात जैसी बहुमूल्य चीजें खरीदी जाती है, तो यह काला धन बन जाती है। धन व सम्पत्ति का उपयोग वस्तुओं की गैर कानूनी जमाखोरी व मुनाफा वसूली का साधारण जनता की ईमानदारी से कमाई गई आय कालाधन व काली मुद्रा धारकों को हस्तान्तरित हो जाती है। गैर कानूनी गतिविधियों को हस्तान्तरित हो जाती है। गैरकानूनी गतिविधियों से कीमतों पर दबाव बढ़ता है और मँहगाई बढ़ती है। नकली मुद्रा के साथ मिलकर यह भ्रष्टाचार व आतंकवाद व समाजविरोधी गतिविधियों को बढ़ाती है व अनावश्यक, अतिदिखावे वाले उपभोग को बढ़ावा देती है। काली मुद्रा व कालेधन की मात्रा गत 70 वर्षों में निरन्तर बढ़ती गई है। इसे नियंत्रित करने के ईमानदार प्रयासों के प्रति दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव रहा। यह कैंसर रूपी रोग अर्थव्यवस्था रूपी शरीर के सभी अंगों को नष्ट कर रहा था। इसलिये प्रधानमंत्री द्वारा उठाया गया कदम साहसिक, ऐतिहासिक एवं ईमानदारी से जनता से किये गये वादों को पूरा करने की दृढ़ राजनीतिक इच्छा को व्यक्त करता है। यही कारण है कि जनसाधारण जो सामान्य जीवन में संतुष्ट

नोटबंदी का कदम सरकार की कोई एकाकी नीति का उदाहरण नहीं है। वास्तव में आर्थिक सुधारों की एकीकृत सोच व योजना प्रधानमंत्री के ध्यान में है व उसी के अनुरूप एक के बाद एक कदम उठाये जा रहे हैं। सरकारी सहायता में लीकेज रोकने के लिये वित्तीय समावेशन के लिये जन-धन खाते, आधार कार्ड पर बल, व्यापार करने की दशाओं को उदार बनाना, भूमि संशोधन वस्तु व सेवाकर (GST), कालेधन का उन्मूलन, उदार कराधान नीति व कर सुधार, दिवालिया कानून में संशोधन, बेनामी सम्पत्ति कानून व ऐसे ही अनेकों कदम आर्थिक सुधारों की एकीकृत योजना का भाग है। ऐसा नहीं है कि सरकार ने काला धन धारकों चाहे यह धन देश में हो या विदेश में, अनेक मौके दिये व बारम्बार याद दिलाया 30 सितम्बर 2016 से पूर्व छिपी आय व धन की स्वैच्छिक घोषणा करें, अन्यथा परिणाम के लिये तैयार रहे।

रहता व ईमानदारी से कानून संगत व्यवहार करता है, अनेक प्रकार के कष्ट व असुविधा उठाकर भी नोट बंदी का समर्थन कर रहा है। जन साधारण पहली बार अनुभव कर रहा है, बेईमानों, भ्रष्टाचारियों, जमाखोरों, मुनाफाखोरों, आतंकवादियों, कानून से खिलवाड़ करने वालों, धन बल से राजनीतिक व आर्थिक निर्णयों को प्रभावित कर अपने पक्ष में करने वालों को राज्य व कानून की शक्ति से परिचित कराया गया। इनको दण्डित होते देख वह एक प्रकार से अपने ईमानदार होने पर गर्व कर रहा है। गरीबों को विश्वास हुआ है, उन्हें बेईमानी से उनके श्रम के उचित प्रतिफल से वंचित किया गया। वह प्रक्रिया अब समाप्त होगी व उसे उसकी मेहनत का बाजिब हिस्सा मिल सकेगा।

नोट बंदी के अनेक अल्पकालिक व दीर्घकालिक प्रभाव होंगे। अल्पकाल में अर्थात् तीन माह, छह माह व वर्ष भर में अनेक चिन्ताजनक स्थितियाँ आ सकती है। देश की चलन मुद्रा के 86 प्रतिशत भाग को एकाएक चलन से बाहर कर देने से जनसाधारण को दिन प्रतिदिन के लेन-देन में नोटों का संकट रहेगा। नये नोट पूर्ण स्वाभाविक हैं, फिर भी योजनानुसार जनता के लिये नई मुद्रा चलन में लाई जा रही है व पुराने नोट बिना जनता की अधिक असुविधा के वापस लिये जा रहे हैं। नकद निकालने की सीमा निर्धारण, पुराने नोटों को जमाओं के अतिरिक्त अन्य जरियों यथा पेट्रोल पम्प, बिलों के भुगतान इत्यादि के माध्यम से वापस लेना इसके ही उदाहरण हैं। निश्चित ही अपने ही धन व जमाओं के प्रयोग से वंचित करना कष्टप्रद है। बैंक से पैसा निकालने के लिये बैंक व एटीएम के आगे लम्बी लाइनों में घंटों प्रतीक्षा कराना जनता का बड़ा कष्ट है। वैवाहिक कार्यों, बीमारों के इलाज, अन्य अतिआवश्यक एवं अनपेक्षित कार्यों के लिये नकद सुलभ न होना बहुत बड़े कष्ट का कारण है। परन्तु इस देश की धैर्यवान जनता इन कष्टों को उठाकर भी राष्ट्रहित, देशहित व समाज हित में उठाये गये कदम का स्वागत कर रही है। इन कष्टों व असुविधाओं के अतिरिक्त साल या छह माह तक नोट बंदी के अनेक अन्य प्रभाव प्रकट होना संभावित है जो अर्थव्यवस्था के लिये एक झटका सिद्ध हो सकते हैं। नकदी के अभाव में जनसाधारण मात्र आवश्यक खर्चों के लिये व्यवस्था कर पा रहा है जिससे बाजार में माँग का अभाव है। माँग के अभाव में छोटे व्यवसाइयों, परचूनी विक्रेता, लघु व मध्यम आकार के उद्यमों के समक्ष संकट खड़ा हुआ है। आर्थिक गतिविधियों में कमी से रोजगार प्रभावित हो रहा है। दिहाड़ी पर काम करने वाले व गरीबों के समक्ष भारी संकट आ खड़ा हुआ है। परन्तु कुछ लाभ के संकेत भी हैं। माँग की कमी से कीमतों में गिरावट आयी है। निकट भविष्य में ब्याज दरों में नरमी आ सकती है। ब्याज दरों में नरमी से निवेशकों को नये निवेश के आकर्षण हो सकेंगे। यह अनुमान है, बैंकों के पास जमाये तेजी से बढ़ेंगे। 30 नवम्बर तक बैंकों के 8.5 लाख करोड़ की जमा आयी हैं, जिसका उपयोग वे सस्ते ऋण उपलब्ध करा सकेंगे। जनसाधारण को सस्ते गृहऋण उपलब्ध कराने पर ही सस्ते व आकर्षक शर्तों पर आवास उपलब्ध हो सकेंगे। 2022 तक सभी परिवारों को 'वहन करने योग्य' कीमत (Affordable Housing) पर आवास का लक्ष्य पूरा हो सकेगा। जमीनों की कीमतों में कमी का प्रभाव आधारभूत अन्त: सरंचना (Infra-structure) की लागतों पर पड़ेगा, जिससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे वरन औद्योगिक विकास को बल मिलेगा, सेवा

क्षेत्र का विस्तार होगा व यह सस्ता व सुलभ होगा।

इस वर्ष सन्तोषजनक वर्षा से अपेक्षा थी की कृषि उत्पादन गति पकड़ेगा, परन्तु नोटबंदी के कारण किसानों के समक्ष भी खाद-बीज इत्यादि के लिये समय पर साधन जुटाने में कठिनाई आ रही है, परन्तु सरकार इसके प्रति सजग है व कृषि को नोटबंदी से कठिनाई नहीं आये के लिये समुचित कदम उठा रही है। नोटबंदी का प्रभाव विदेशी व्यापार व विनिमय दर पर भी पड़ेगा। रुपये की कीमत में कमी से निर्यात जो अनेक माह से कम हो रहे हैं, पुनः गति पकड़ेंगे जिसे उत्पादकों को प्रेरणा व कामगारों को रोजगार मिलेगा। आयातों में कमी आने से स्वदेशी उत्पादन का प्रयोग बढ़ेगा और एक बार पुनः रुपया अपनी पुरानी विनिमय दर प्राप्त कर सकेगा। 'कालाधन' पर पाबंदी से भारत में विकास की दर में 20 प्रतिशत की वृद्धि संभावित है। यद्यपि अल्पकाल में अर्थात् 2016-17 में जीडीपी में वृद्धि दर में 7.6 प्रतिशत से गिरकर 7.2 प्रतिशत रह सकती है। परन्तु सस्ते ऋण से औद्योगिक कृषि व सेवा क्षेत्र में निवेश में वृद्धि से रोजगार के अवसरों में तीव्र वृद्धि प्रभावी माँग के बढ़ने व कम कीमतों के कारण जनसाधारण का जीवन सुधार सकेगा। आशा तो यह है कि 500 व 1000 के नोट बंद होने से लगभग 10-11 लाख करोड़ के पुराने नोट ही नये नोटों में बदले जायेंगे जो बैंकों में जमाओं के रूप में आयेंगे। शेष 3 या 3.5 लाख करोड़ नोट जो 'काली मुद्रा' का भण्डार है, बैंकों में वापस नहीं आने के कारण कागज के टुकड़े रह जायेंगे। अन्ततः यह राशि केन्द्र सरकार को ही प्राप्त होगी। इस राशि का उपयोग बजट घाटे को पूरा करने, अथवा सार्वजनिक निवेश (Public Investment) में लगाया जा सकता है, जिससे आर्थिक परिदृश्य बदलेगा। आयकर में राहत दी जा सकती है। इस राशि का उपयोग सरकार शून्य शेष वाले 20 करोड़ से अधिक जन-धन खातों में 10-10 या 15-15 हजार रुपये डालकर अर्थव्यवस्था में प्रभावी माँग को प्रेरित किया जा सकता है। इनमें कोई उपाय काम में लिया जाए यह उच्च विकास दर, रोजगार के अवसरों के सृजन, बढ़ते उत्पादन व अनुकूल विदेशी व्यापार के रूप में प्रकट होगा। ये सभी दीर्घकालीन लाभ आवश्यक अल्पकालीन कष्टों, असुविधाओं की तुलना में बहुत बड़े होंगे।

देश में केवल काली मुद्रा व काले धन को नियंत्रित करना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिये, वरन् ऐसी परिस्थितियाँ बनायी जानी चाहिये कि भविष्य में इनका निर्माण ही संभव न हो। यह तभी संभव है, जबकि ब्याजदरें नीची रहें, कर की दरें नीची रहें, भ्रष्टाचार इंस्पेक्टर राज, लाइसेंस व्यवस्था, अनुमति व्यवस्था समाप्त हो, जिससे सामान्य जन अपने सभी दायित्वों यथा कर भुगतान, व्यवसाय, व्यवस्था आदि आसानी से पूरे कर सके। ऐसा होने पर सामान्यतः दो नम्बर के कार्य के लिये प्रेरणा नहीं रहेगी। कालेधन का सृजन देश में इसलिये संभव हो पाया है, क्योंकि देश में 94 प्रतिशत लेन-देन नकद में किये जाते हैं, जिनसे सामाजिक दृष्टि हिसाब-किताब रखना लगभग असंभव है। यदि यही लेन-देन बैंक व्यवस्था के माध्यम से हों तो इनकी निगरानी रखी जा सकती है। यही कारण है कि सरकार बड़ा विशेष जोर डिजिटाइजेशन पर है। यदि सभी भुगतान डेबिट कार्डो, जैसे माध्यमों से किये जाते हैं, तो संपूर्ण जीडीपी का हिसाब रखना व योजना बनाना संभव होगा। एतदर्थ नोटबंदी के दौर नकदी के बजाय अन्य भुगतान माध्यमों को उपयोग होने से डिजिटल पेमेंट बढ़कर 20 प्रतिशत भी हो जाता है, तो यह भी एक उपलब्धि होगी।

नोटबंदी का कदम सरकार की कोई एकाकी नीति का उदाहरण नहीं है। वास्तव में आर्थिक सुधारों की एकीकृत सोच व योजना प्रधानमंत्री के ध्यान में है व उसी के अनुरूप एक के बाद एक कदम उठाये जा रहे हैं। सरकारी सहायता में लीकेज रोकने के लिये वित्तीय समावेशन के लिये जन-धन खाते, आधार कार्ड पर बल, व्यापार करने की दशाओं को उदार बनाना, भूमि संशोधन वस्तु व सेवाकर (GST), कालेधन का उन्मूलन, उदार कराधान नीति व कर सुधार, दिवालिया कानून में संशोधन, बेनामी सम्पत्ति कानून व ऐसे ही अनेकों कदम आर्थिक सुधारों की एकीकृत योजना का भाग है। ऐसा नहीं है कि सरकार ने काला धन धारकों चाहे यह धन देश में हो या विदेश में, अनेक मौके दिये व बारम्बार याद दिलाया 30 सितम्बर 2016 से पूर्व छिपी आय व धन की स्वैच्छिक घोषणा करें, अन्यथा परिणाम के लिये तैयार रहे। यह सरकार की उदारता ही है कि नोटबंदी के बावजूद एक मौका और दिया है कि 50 प्रतिशत कर चुकाकर अपने धन को प्रकट करें। सरकार द्वार पकड़े जाने पर 85 प्रतिशत कर चुकाना होगा। यह कालेधन के उन्मूलन दिशा में अन्तिम कदम नहीं है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कहा है कि जनवरी में अगले कदम की घोषणा होगी। विश्वास तो यह है नोट बंदी के बाद कालाधन जो जमीन-जायदाद व अन्य रूपों में छिपाया गया है, उसके खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

प्रधानमंत्री द्वारा अपने वादों के अनुसार कार्यवाही करने से जनसाधारण ने यह संदेश गया है कि सरकार है, उसके कदमों की उपेक्षा दोषियों के लिये घातक होगी। कानून के शासन प्रतिष्ठा बढ़ेगी व पहली बार ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ देश प्रेमी नागरिक भारतीय होने पर गर्व कर सकेंगे। ❑

(आर्थिक विश्लेषक)

महिमा तेरी अद्भुत जग में..........

❑ भरत शर्मा 'भारत'

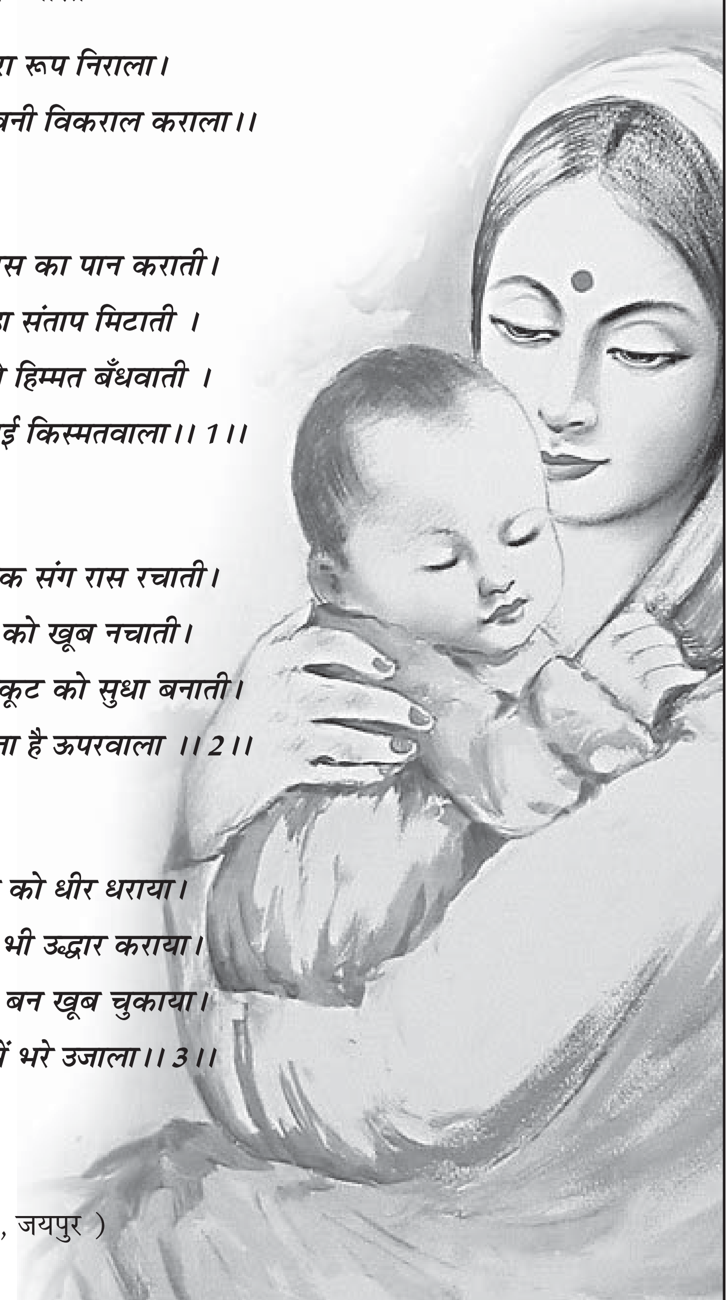

महिमा तेरी अद्भुत जग में, नारी तेरा रूप निराला।
कभी चाँदनी कभी रागिनी, कभी बनी विकराल कराला।।
महिमा तेरी.................

बचपन में तुम लोरी गाकर, जीवनरस का पान कराती।
भरी जवानी में गीतों संग, दुख पीड़ा संताप मिटाती ।
शेष बुढ़ापे की साथिन बन, हारे को हिम्मत बँधवाती ।
अनुकम्पा जीवन भर तेरी, पाता कोई किस्मतवाला।। 1।।
महिमा तेरी.................

प्रीत रीत में राधा बनकर, जग पालक संग रास रचाती।
छाछ बहाने बृज की छोरी, बनवारी को खूब नचाती।
साँवरिया की बावरिया बन , कालकूट को सुधा बनाती।
तेरी निष्ठा के सम्मुख तो, झुक जाता है ऊपरवाला ।। 2।।
महिमा तेरी.................

कठिन परीक्षा में तूने ही, जनकसुता को धीर धराया।
पत्थर बनी अहल्या शापित, उसका भी उद्धार कराया।
चीर हरण का बदला तूने, पांचाली बन खूब चुकाया।
तेरा साहस शील समर्पण, अंतर्मन में भरे उजाला।। 3।।
महिमा तेरी.................

(व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. माणक चौक, जयपुर)

राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठी

'भारतीय भाषायें व हिन्दी शिक्षण' पर आगरा में सम्पन्न

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 19-20 नवंबर, 2016 को भारतीय भाषाएँ एवं हिंदी शिक्षण विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य संस्थान के निदेशक प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय ने कहा कि सन् 2003 के बाद से भारतीय भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वालों के अनुपात में लगातार गिरावट हो रही है तथा अंग्रेजी में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। भारत में अंग्रेजी के बढ़ने का मूल कारण हमारा अपनी भाषाओं के प्रति लगाव का कम होना है। उन्होंने आगे कहा अन्य विदेशी भाषाएँ हमारी सहायक हो सकती हैं लेकिन हमारी भाषाओं की उद्धारक नहीं हो सकती।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा, अध्यक्ष दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने कहा कि पाश्चात्य देशों में बड़ी भाषाओं के प्रभाव से छोटी भाषाएँ विलुप्त हो जाती है जबकि भारत में ऐसा नहीं है। भारत में हिंदी के विकास से भारतीय भाषाओं का उन्मूलन नहीं बल्कि विकास ही होता है। डॉ. शर्मा के अनुसार किसी भाषा के विकास के तीन प्रमुख कारण राजनीतिक और सैन्य शक्ति की दृष्टि से, वैज्ञानिक विकास की दृष्टि से तथा वाङ्मय की दृष्टि से माने जा सकते हैं। आगे उन्होंने कहा कि हमारा ऐतिहासिक बोध खो जाए, हम अपहृत हो जाएँ उससे पहले हमें जागने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो. जे.पी. सिंघल, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का कहना है कि राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी हिंदी के विकास में बाधा रही है। राष्ट्रभाषा के मुद्दे पर हिंदी को उस रूप में स्वीकार नहीं किया गया जिस रूप में किया जाना चाहिए था। अपनी भाषा के प्रति हीन भावना के कारण ही आज प्रांतीय भाषाओं की स्थिति अंग्रेजी की तुलना में खराब है। दासता की इस ग्रंथि को आज दूर किये जाने की आवश्यकता है। हिंदी को सरल बनाने की प्रक्रिया के तहत आज अंग्रेजी के शब्दों की बहुलता के कारण भविष्य में हिंदी नष्ट हो जाएगी, यह रुकना चाहिए।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यदि सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी हो जाए तो संभव है कि हम उन भाषाओं के शब्दों को भी सीख सकेंगे। भाषा व्यवहार से आती है, व्यवहार में लाने से भाषा का प्रसार होता है। हिंदी के प्रति हममें जो स्वाभिमान की कमी है, उसी के कारण आज यह स्थिति शोचनीय है। हमारी भाषा के प्रति हमारा स्वाभिमान बना रहना चाहिए। देश जागरण के लिए शिक्षा का माध्यम प्रांतीय भाषाएँ हों यह प्रयास किया जाना चाहिए।

संगोष्ठी के प्रथम/द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. मनोज सिन्हा, प्राचार्य, आर्यभट्ट कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. संतोष पाण्डेय, संपादक शैक्षिक मंथन, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य स्वयं के ग्रीस प्रवास का उल्लेख किया व बताया कि प्रवास के दौरान उन्होंने पाया कि पर्यावरण विषय से संबंधित जिस अनुसंधान के लिए वे आये हैं उस विषय की मूलभूत बातें हमारे वेदों से ली गई हैं। यह हमारी सांस्कृतिक व भाषाई संपन्नता को सिद्ध करता है।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. संतोष पाण्डेय, संपादक शैक्षिक मंथन, जयपुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय संस्कृति, धरोहर एवं मूल्यों का विकास अपनी मातृभाषा द्वारा ही संभव है। अपनी भावना, परिवेश का चित्रण सिर्फ मातृभाषा से ही संभव है। संगोष्ठी के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में डॉ. विवेकानन्द उपाध्याय, डॉ. विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी, डॉ. सुरेन्द्र सोनी व श्री भरत शर्मा ने आलेख वाचन किया।

धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के कुलसचिव डॉ. चंद्रकांत त्रिपाठी ने किया तथा उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. बीना शर्मा ने तथा प्रथम एवं द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. सपना गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री ओमपाल सिंह, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री तथा मुख्य अतिथि प्रो. शैलेष मिश्र, वाराणसी रहे।

इस सत्र में भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा का प्रश्न तथा शिक्षक संघों का दायित्व विषय पर केंद्रित रहा। मुख्य अतिथि प्रो. शैलेष मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि आजादी से पहले संपर्क भाषा की समस्या नहीं थी अंग्रेजी के आने के बाद यह समस्या विकराल रूप लेती गई। यदि आज हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना है तो हमें पहल करते हुए पहले दक्षिण भारतीय भाषाएँ सीखनी होंगी तभी संदेह के बादल हटेंगे और हिंदी के प्रति अविश्वास की भावना समाप्त होगी।

श्री ओमपाल सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय भाषाओं में कहीं कोई टकराव नहीं है, सभी बोलियों में सह-अस्तित्व है। जो विषमताएँ या टकराव है यह सब अंग्रेजी के कारण हुआ है। यदि हम आग्रहपूर्वक अपने व्यवहार और संस्कारों में अपनी भाषा का प्रयोग करेंगे तभी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। हमारी संकल्प शक्ति, इच्छाशक्ति के प्रभाव से समस्या दूर होगी। ग्रंथों के रूप में जो हमारी विरासत थी वह हमने खो दी है। हमें अपनी जमीन और जड़ों को पहचानना होगा।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में डॉ. अनुराग मिश्र, दिल्ली, डॉ. ओमप्रकाश पारीक, जयपुर, डॉ. अनिल कुमार दाधीच, अजमेर एवं डॉ. चंद्रकांत कोठे, केंद्रीय हिंदी संस्थान, ☛

अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

उच्च शिक्षा संवर्ग के प्रतिनिधि मंडल की यूजीसी वेतनमान समिति से भेंट

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के उच्च शिक्षा संवर्ग का पाँच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल आज सवेरे मंत्रालय में विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों के लिए सातवें वेतन आयोग समिति से मिला। इस प्रतिनिधिमंडल में श्री महेंद्र कपूर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, डॉ. निर्मला यादव, प्रो. प्रग्नेश शाह, डॉ. मनोज सिन्हा और डॉ. अनुराग मिश्रा (दिल्ली राज्य संयोजक) शामिल थे। इस भेंटवार्ता में शिक्षकों से जुड़े निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई।

1 छठे वेतन आयोग की विसंगतियों को सबसे पहले दूर करना होगा। इन विसंगतियों में एपीआई-पीबीएएस को खत्म करने तथा पुराने सभी मामलों में इस स्कीम से छूट दिए जाने तथा सभी प्रकार की वेतनिक विसंगतिया दूर करने की बात कही है।

2 यह माँग की गई है कि सातवें वेतन आयोग द्वारा जो वेतनमान दिए जाएँ, वह सेवा शर्तों से नहीं जोड़े जाने चाहिए। समयबद्ध पदोन्नति रहना चाहिए। एक सही पदोन्नति नीति की बनानी चाहिए।

3 शिक्षकों को दिए जाने वाले वेतनमान सरकारी कर्मचारियों की तुलना में एक सीढ़ी ऊपर होना चाहिए। शिक्षकों का वेतनमान पुरानी स्कीम के अकादमिक ग्रेड पे 7000/- के बराबर फिक्स किया जाना चाहिए।

4 शिक्षकों को कम से कम चार पदोन्नति मिलनी चाहिए। असिस्टेंट प्रोफेसर (नियुक्ति पर) के उपरांत, असिस्टेंट प्रोफेसर (सीनियर स्केल-I), असिस्टेंट प्रोफेसर (सीनियर स्केल-II), एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में शिक्षकों की पदोन्नति होना चाहिए।

5 हर विश्वविद्यालय के स्तर पर रिसर्च और इनोवेशन क्लस्टरों की स्थापना की जाए जिससे कि स्थानीय स्तर पर शिक्षकों को इसकी सुविधा दी जा सके।

6 यूजीसी द्वारा राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों को स्टेट हायर एजुकेशन कॉउन्सिल बनाये जाने का निर्देश दिया जाये।

7 शिक्षकों के लिए ग्रीवांस रेड्रेसल यूनिट विश्वविद्यालय और कॉलेज स्तर पर बनाई जाए।

8 जिन शिक्षकों ने एमफिल / एलएलएम / एमटेक / पीएचडी की योग्यता हासिल की है उन्हें 3 / 5 अतिरिक्त वेतनवृद्धि की सुविधा दी जाए।

9 शिक्षकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ, रिहायशी सुविधाएँ, मेडिकल ग्रुप इंश्योरेंस, लाइफ इंश्योरेंस, अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए सस्ते लोन की सुविधा, एलटीसी / एचटीसी सार्क देशों में, ग्रैच्यूटी में वृद्धि, इनकम टैक्स में छूट आदि दी जानी चाहिए।

10 एपीआई-पीबीएएस प्रमोशन स्कीम से छूट कम से कम 31.12.2015 तक दी जाए।

11 वेतन के एरियर एकमुश्त और जल्दी दिए जाएँ।

12 एडहॉक शिक्षकों की स्थाई प्रक्रिया तुरंत शुरु की जाए।

☛ आगरा ने आलेख वाचन किया। सत्र का संचालन डॉ. चंद्रकांत कोठे, असिस्टेंट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने किया।

समापन सत्र के विशिष्टि अतिथि श्री महेंद्र कपूर ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का परिचय देते हुए बताया कि वर्तमान में आठ लाख शिक्षक संगठन से जुड़े हुए हैं। देश में कुल 85 लाख शिक्षक हैं। यदि देश में किसी भी स्तर पर कोई बदलाव करना है तो वह शिक्षकों के माध्यम से होगा। यह संगठन मात्र शिक्षकों के वेतन भत्ते या अन्य आर्थिक पक्षों को लेकर संघर्ष नहीं करता बल्कि यह संगठन शिक्षत्व को लेकर भी संघर्ष करता है।

द्वितीय विशिष्ठ अतिथि प्रो. एम.एल. छीपा, कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत को उसका वैभवशाली गौरव पुनः प्रदान करना हो तो शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। जब तक हिंदी प्रत्येक विषय की भाषा नहीं बनेगी तब तक हिंदी का कल्याण नहीं होगा।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. सुरेंद्र दुबे, कुलपति, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, भाषा संस्कृति की वाहक है जिसमें हम रहते हैं वह सभ्यता है, जो हममें रहती है वह संस्कृति है। जो हमारे भीतर है वह किसी और भाषा में प्रकट नहीं हो सकता। इस लिए संस्कृति को बचाने के लिए मातृभाषा को बचाना होगा। हिंदी की प्रकृति समावेशी है। प्रांतीय भाषाओं से जुड़ी रहकर ही हिंदी की शक्ति बनी हुई है। इन्हें काटकर हम कहीं खड़े नहीं रह सकते।

प्रो. कमल किशोर गोयनका, उपाध्यक्ष केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि अंग्रेजी ने हिंदी का अस्तित्व और उसका स्वत्व हमसे छीन लिया। जिन संकल्पों से हमने आजादी की लड़ाई लड़ी वे संकल्प धूल-धूसरित हो गये। ज्ञान को विकसित करने के लिए हमें खुद ज्ञानवान होना पड़ेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रकाशित हो रही विश्व की नवीनतम पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद करें। हमें अपने छात्रों को ज्ञान के नवीनतम रूप से परिचित कराना चाहिए।

समापन सत्र का आभार निवेदन डॉ. मनोज सिन्हा, प्राचार्य, आर्यभट्ट महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन डॉ. सपना गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर ने किया।

पदनाम को लेकर रुक्टा (राष्ट्रीय) ने किया जयपुर में प्रदर्शन

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) से जुड़े उच्च शिक्षा में कार्यरत प्रदेश भर के शिक्षकों ने 7 नवम्बर, 2016 को पदनाम परिवर्तन की माँग को लेकर ज्योति नगर टी पॉइंट (विधानसभा) से लेकर सहकार भवन होते हुए सिविल लाइन फाटक (मुख्यमंत्री निवास) के सामने विशाल प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर प्रदेश के 207 राजकीय, निजी महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के लगभग 4 हजार शिक्षकों ने भाग लिया। शिक्षकों ने अपनी माँगों के समर्थन में प्लेकार्ड, बैनर और पुरजोर स्वर में नारों के माध्यम से अपनी माँग रखी।

रुक्टा (राष्ट्रीय) के महामंत्री डॉ. नारायण लाल गुप्ता ने बताया कि उच्च शिक्षा में व्याख्याता के स्थान पर पदनाम-सहायक प्रोफेसर, सह प्रोफेसर व प्रोफेसर करने तथा पीटीआई के स्थान पर शारीरिक शिक्षा निदेशक करने की हमारी वर्षों पुरानी माँग रही है। यूजीसी व एमएचआरडी द्वारा अंततः रेगुलेशन 2010 द्वारा उच्च शिक्षा में इसे पूरे देश में लागू करना अनिवार्य कर दिया गया परन्तु पिछली कांग्रेस सरकार ने अज्ञात कारणों से यूजीसी रेगुलेशन को अंशतः लागू करते हुए महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम को व्याख्याता ही रखे जाने का आदेश जारी कर दिया। यूजीसी व एमएचआरडी ने हमारी जिस माँग को अनिवार्य बनाकर संवैधानिक रूप में अधिकार प्रदान किया उसे कांग्रेस सरकार ने समस्या बनाकर हमें संघर्ष के रास्ते पर मोड़ दिया। पूर्व सरकार ने केन्द्र को एक बड़ा झूठ बोलकर कि यूजीसी रेगुलेशन के अनुरूप सेवा शर्तें, पदनाम, नियम बदल दिए गए है, लगभग 400 करोड़ रूपये यूजीसी से प्राप्त कर लिए। यह विषय आयुक्तालय व सचिवालय के गलियारों में उस समय पदस्थापित शिक्षक अधिकारियों द्वारा इतनी गोपनीयता से निपटाया गया कि यह झूठ रुक्टा (राष्ट्रीय) की जानकारी में यूजीसी से सूचना के अधिकार में सूचना प्राप्ति के बाद ही आ सका।

मुख्यमंत्री के अस्वस्थ एवं मुख्यालय से बाहर होने के कारण रुक्टा (राष्ट्रीय) की इस विशाल रैली के प्रतिनिधि मंडल के रूप में अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय सिंह शेखावत के साथ महामंत्री डॉ. नारायण लाल गुप्ता, संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसी लाल जाट, महिला उपाध्यक्ष डॉ. सरस्वती मितल व डॉ. सुशील बिस्सू ने मुख्यमंत्री आवास पर सीएम द्वारा अधिकृत अधिकरियों से भेंट की। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ, अतिरिक्त मुख्य सचिव उच्च शिक्षा एवं अन्य अधिकारियों से हुई वार्ता में उच्च शिक्षा मंत्री ने प्रतिनिधि मंडल को बताया कि मुख्यमंत्री का इस विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण है। मुख्यमंत्री ने स्वस्थ होने के बाद शीघ्र ही स्वयं की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय बैठक आयोजित कर इस विषय में निर्णय लेने का मंतव्य व्यक्त किया।

कॉलेज शिक्षकों की इस विशाल रैली को रुक्टा (राष्ट्रीय) के अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय सिंह शेखावत, महामंत्री डॉ. नारायण लाल गुप्ता, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर व रुक्टा(राष्ट्रीय) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संतोष पाण्डेय, ने संबोधित किया।

शिक्षा में स्वायत्तता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी अजमेर में सम्पन्न

रुक्टा (राष्ट्रीय) के अजमेर विभाग व शैक्षिक मंथन संस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय गर्ल्स कॉलेज, अजमेर के ऑडिटोरियम में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. शिव सिंह राठौड़ ने सत्तर साल की स्वतंत्रता के बावजूद देश से अंग्रेजी मोह खत्म नहीं होने को चिंताजनक बताया।

उन्होंने मौजूदा शिक्षण पद्धति और इससे संबंधित प्रशासनिक नियंत्रण पर निशाना साधते हुए मौजूदा शिक्षा प्रणाली को शासन की जंजीरों में जकड़ा बताया। उन्होंने इस वातावरण में सुधार कर शैक्षिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, शिक्षा को स्वायत्त बनाने के साथ ही मर्यादित रखने, सियासत तथा नौकरशाही से मुक्त रखने की जरूरत बताई। राजकीय महाविद्यालय देवगढ़ के प्राचार्य रुक्य (राष्ट्रीय) के विभागाध्क्ष डॉ. पुखराज देपाल ने शैक्षिक स्वायत्तता पर शिक्षकों को स्वयं सहित समाज, राष्ट्र के सम्मान को बरकरार रखने के लिए लडने् वाला योद्धा बताया। उन्होंने रुक्टा (राष्ट्रीय) को भी इससे जोड़ते हुए राष्ट्रीय स्तर पर रुक्टा की ओर से शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को रेखांकित किया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे एस.एन. शर्मा ने रुक्टा को शैक्षिक गुणवत्ता और सामाजिक उत्थान के लिए सतत प्रयासरत रह कर काम करने वाला बताते हुए सदस्यों को साधुवाद दिया। उन्होंने वैचारिक मंच, मंथन के मंच से शैक्षिक अराजकता के माहौल को दूर करने व शिक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए जाने की आवश्यकता जताई। गर्ल्स कॉलेज प्राचार्या गोष्ठी की संयोजक डॉ. रेनू शर्मा ने शिक्षा में स्वायत्तता की अवधारणा को परिभाषित करते हुए हायर एजुकेशन के प्रतिमानों को रेखांकित किया। रुक्टा (राष्ट्रीय) के महामंत्री डॉ. नारायण लाल गुप्ता ने उच्च शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं और हितों से सरोकार रखने वाली होने के साथ ही रोजगारपरक होना जरूरी बताया।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए राजकीय महाविद्यालय अजमेर के प्राचार्य एस. के. देव ने शैक्षिक व्यवस्था को शासन केंद्रित होने की बजाय समाज केंद्रित होने की जरूरत बताई। गोष्ठी का संचालन डॉ. किसना राम दहिया, डॉ. विमलेश शर्मा ने किया। गोष्ठी में प्रदेश को तकरीबन डेढ़ दर्जन महाविद्यालयों सहित 2 विश्वविद्यालयों के लगभग तीन सौ संभागियों ने भाग लिया। इस दौरान आयोजित 2 तकनीकी सत्रों में 26 शोध-पत्रों का भी वाचन भी किया गया।

माध्यमिक परीक्षा प्रणाली: समीक्षा एवं समुन्नयन

'माध्यमिक परीक्षा प्रणाली: समीक्षा एवं समुन्नयन' विषय पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर एवं शैक्षिक मंथन संस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में नीट सभागार मा. शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर में आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रो.वासुदेव देवनानी, स्कूली शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) को शैक्षिक मंथन संस्थान के सचिव महेन्द्र कपूर के नेतृत्व में सौंपी गई। इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्र शर्मा, सह सम्पादक भरत शर्मा, डॉ. ओम प्रकाश पारीक, नौरंग सहाय भारती एवं आलोक चतुर्वेदी भी रहे। इस रिपोर्ट पर प्रो. देवनानी ने संस्थान के सदस्यों से विस्तार से चर्चा की और आवश्यक कार्यवाही हेतु सहमति व्यक्त की ।

रिपोर्ट में प्रायोगिक, सैद्धान्तिक परीक्षा एवं सत्रांक, प्रश्नपत्र निर्माण एवं उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन, परीक्षा प्रणाली एवं सहशैक्षिक गतिविधियाँ, परीक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष, सतत् एवं समग्र मूल्यांकन विषय पर उन्नयन हेतु सुझाव दिये गये।

प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक परीक्षा एवं सत्रांक से सम्बन्धित सुझाव जिनमें सैद्धान्तिक परीक्षा के साथ ही प्रश्न-पत्र में प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित प्रश्न भी सम्मिलित हों जिससे जिस विद्यार्थी ने प्रायोगिक कार्य उचित प्रकार से किया होगा वही उनके उत्तर दे सकेगा। इससे प्रायोगिक परीक्षा की विश्वसनीयता बढ़ेगी। कोचिंग प्रवृत्ति के दुष्प्रभाव के कारण कुछ बालक स्कूल में प्रवेश तो लेते हैं लेकिन विद्यालय में आते नहीं इसलिये प्रायोगिक कार्य भी नहीं करते हैं अत: प्रशासन द्वारा समुचित निरीक्षण की व्यवस्था हो। विद्यालयों में प्रायोगिक विषयों की सीटे संसाधनों के अनुरूप हों उसी अनुपात में प्रवेश दिया जाए तथा नियमित प्रायोगिक कक्षा पर बल दिया जाए। विद्यालय में 20 बालकों के एक साथ प्रायोगिक परीक्षा की व्यवस्था हो तथा वहाँ सी.सी.टी.वी. कैमरे स्थापित हों जिससे प्रशासन प्रायोगिक कक्षाओं के स्तर एवं व्यवस्था की देखरेख कर सकें। इससे प्रायोगिक परीक्षाओं में पारदर्शिता आयेगी व विश्वसनीयता बढ़ेगी। बाह्य परीक्षक जो प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये बुलाये जाते हैं उनका उस विद्यालय से जुड़ाव नहीं होता तथा न ही उनके उत्तम चरित्र का ज्ञान होता, अत: स्थानीय स्तर पर ऐसे बाह्य परीक्षक लगायें जिनका चरित्र उत्तम हो तथा समाज में ईमानदारी के लिये प्रतिष्ठित हों। इससे अनुचित प्रकार से अंक देने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये नोडल स्तर पर सुसज्जित लैब बनाये जावें एवं ऐसे केन्द्रों पर समुचित देखरेख में परीक्षायें सम्पन्न हों।

प्रश्न-पत्र निर्माण एवं उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन से सम्बन्धित सुझाव जिनमें प्रश्न-पत्र परीक्षा का एक साधन है इसलिये वह ऐसा होना चाहिये जिससे सभी प्रकार के व्यक्तिगत विभिन्नता वाले बालकों की बौद्धिक उपलब्धियों की जाँच हो सके। इसमें साधारण एवं असाधारण प्रतिभाओं का सही मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिये। सर्वप्रथम प्रश्न-पत्र की डिजाइन तैयार की जानी चाहिये, जिसमें यह निश्चित हो कि पाठ्यक्रम के किस भाग को कितना भार दिया जाना अपेक्षित है इसी के साथ ज्ञान, स्मरण एवं समझ इत्यादि के लिये भी अलग-अलग अंकभार दिया जाना चाहिये। भिन्न-भिन्न कौशल की जाँच के लिये भी अंकभार निर्धारित हो। प्रश्न-पत्र निर्माण से पहले ब्लूप्रिन्ट आवश्यक रूप से बनाना चाहिये जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर कुल कितने प्रश्न होंगे, उसमें बहुविकल्पीय, अतिलघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक तथा निबन्धात्मक प्रश्न कितने-कितने होंगे यह सभी निर्धारण होना चाहिये। प्रश्न-पत्र में प्रश्न दुविधापूर्ण तथा द्विअर्थीय नहीं होने चाहिये, ब्लूप्रिन्ट के अनुसार कठिनता का स्तर हो, बहुविकल्प वाले प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर समानता लिये हुये न हो तथा विद्यार्थी भली भांति समझकर उत्तर दे सकें ऐसे प्रश्न हो। प्रश्नों के द्वारा पाठ्यक्रम की विषयवस्तु प्रमाणित होनी चाहिये।

परीक्षा प्रणाली को प्राचीन काल से संदर्भित करते हुये बताया गया कि केवल मात्र स्मरण शक्ति व मानसिक योग्यता का ही मूल्यांकन नहीं होना चाहिये अपितु मूल्यांकन में शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का भी समावेश होना चाहिये। वर्तमान में प्रचलित परीक्षा प्रणाली के सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुये बताया कि परीक्षा प्रणाली में केवल सूचनाओं का ही परीक्षण नहीं होना चाहिये अपितु संपूर्ण चरित्र की परीक्षा होनी चाहिये। हमें आज की परीक्षा-प्रणाली में उपनिषद् साहित्य से सीख लेनी चाहिये जिसमें प्रश्नों के माध्यम से जिज्ञासा उत्पन्न कर व्यक्ति में ज्ञान भरा जाता था तथा वह ज्ञान प्राचीन काल में आचरण में समाहित हो जाता था, अतएव व्यक्ति का उस समय सर्वाङ्गीण विकास होता था। मूल्यांकन में मूल्यांकनकर्ता शिक्षक का भी मूल्यांकन होना चाहिये। इसको रेखांकित करते हुये उन्होंने बताया कि मूल्यवान व्यक्तित्व ही मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उच्च शिक्षा की स्थिति पर संगोष्ठी

शैक्षिक मंथन संस्थान एवं रुक्टा राष्ट्रीय जयपुर विभाग द्वारा नई शिक्षा नीति पर प्रांतीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कैलाश सोढ़ानी, मुख्य वक्ता संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा डॉ. नाथूलाल सुमन थे। अध्यक्षता रुक्टा (रा.) के अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय सिंह ने की। कुलपति प्रो. सोढ़ानी ने कहा कि उच्च शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम निर्माण व परिवर्तन की हमें पूर्ण स्वतंत्रता है। उच्च शिक्षण संस्थाएँ वित्त के अभाव में अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पा रही हैं।

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का प्रान्तीय शैक्षिक सम्मेलन कोटा में सम्पन्न

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का दो दिवसीय प्रदेश स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन स्वामी विवेकानद विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय महावीर नगर तृतीय, कोटा में माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं संघ के संरक्षक श्रद्धेय जयदेव पाठक की स्मृति में आयोजित व्याख्यान माला में ध्वजारोहण के साथ शुरु हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी व अध्यक्षता कोटा सांसद ओमकृष्ण बिरला ने की।

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए शिक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि शिक्षकों का सम्मान सर्वोपरि है। पहली बार राज्य सरकार द्वारा ब्लॉक एवं जिला स्तर पर अच्छे कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित करने का निर्णय किया गया। राज्य में शिक्षा की गुणवत्ता का सुधार आप सभी की मेहनत से संभव हुआ है तथा बोर्ड परीक्षा परिणामों में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा 15 लाख छात्रों का नामांकन का लक्ष्य पूर्ण होना शिक्षकों की मेहनत को दर्शाता है। शिक्षा हमें दृष्टि एवं संस्कृति देती है। हमें बालकों को सुनागरिक, देशभक्त एवं सुसंस्कारित बनाना है। यही शिक्षा का कर्तव्य है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कोटा बून्दी सांसद ओमकृष्ण बिरला ने कहा कि समाज व राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की बड़ी भूमिका है। पानी, बिजली एवं अन्य सुविधाएँ नहीं होते हुए भी शिक्षक गाँवों में रहकर छात्रों को गुणवत्ता की शिक्षा देते हैं। उन्होंने कहा कि गुरु व शिष्य को सम्मान सरकारी विद्यालय में मिल सकता है निजी में नहीं। जयदेव पाठक स्मृति व्याख्यान माला में मुख्य प्रवक्ता मा. राजेन्द्र शर्मा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य ने बताया कि श्रद्धेय जयदेव पाठक का जीवन बड़ा ही संघर्षमय रहा है। उन्होंने उनकी जीवनी व कार्यशैली का वर्णन करते हुए महान् सपूत के संगठन के निर्माता मितव्ययी, स्पष्ट वक्ता एवं सरल स्वभाव के व्यक्तित्व वाले महान व्यक्ति बताया।

समारोप सत्र के मुख्य अतिथि कोटा उत्तर के विधायक प्रहलाद गुंजल, विशिष्ट अतिथि कोटा नगर विकास न्यास के अध्यक्ष राम कुमार मेहता व अध्यक्षता कोटा नगर निगम के महापौर महेश विजय ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि कोटा उत्तर के विधायक प्रहलाद गुंजल ने कहा कि शिक्षक के सामने ज्ञान की बात करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। नर से नारायण बनाने की शक्ति व कला अध्यापक के पास ही है। शिक्षक समाज की परिस्थितियाँ एवं हालात एवं समाज में व्यापक चुनौतियों को समझता है एवं उसके समाधान के रास्ते ढूँढता है। वह शिक्षक है जो समाज एवं देश का निर्माण कार्य करता है तथा अपनी जिम्मेदारी निष्ठा से निभाता है। अच्छी पीढ़ी का निर्माण भी शिक्षक ही कर सकता है।

समारोप के विशिष्ट अतिथि कोटा नगर विकास न्यास के अध्यक्ष रामकुमार मेहता ने कहा कि शिक्षकों की श्रम एवं मेहनत का ही परिणाम है जो सरकारी विद्यालय में छात्र नामांकन में वृद्धि हो रही है। समारोह के अध्यक्ष कोटा नगर निगम के महापौर महेश विजय ने कहा कि सारे विकास के बावजूद एक कमी निरंतर बढ़ती जा रही है उसको केवल शिक्षक ही सुधार सकता है। सारी कमियाँ सुधर जाये लेकिन एक कमी चरित्र निर्माण की बाकी रह गई तो देश तरक्की नहीं कर रहा है। चरित्र निर्माण कार्य सिर्फ शिक्षक ही कर सकता है। शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष प्रहलाद शर्मा व प्रदेश महामंत्री देवलाल गोचर ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मण्डल संयुक्त मंत्री ओमप्रकाश मीणा व दिनेश स्वर्णकार ने किया।

KRMSS Organized a State Executive Meeting in Hubli

The Karnatak Rajya Mahavidyalaya Shaikshik Sangh (R)(KRMSS) affiliated to ABRSM New Delhi, organized a state executive Meeting of College and University Teachers of Karnataka to discuss the issues of Higher Education and Problems of Teachers in Karnataka. The meeting unanimously resolved to send a representation to MHRD and State Higher Education Ministry detailing the issues related to teachers, teaching and students.

The priority given to Higher education is comparatively less, hence, there is slow progress in General Enrollment Ratio for Higher education. Infrastructure facilities and research facilities should be extended to all the colleges. The government should solve long pending issues of pay and arrears of teachers.

The Meeting also decided to organize Round Table meets on Examinations reforms and workshops on the pedagogical practices in coordination with subject forums. Various programs like 'Kayaka Sankalpa Divas' 'Samarasya Divas on Dr. Ambedkarjayanti' and Guruvnandana to award the best teachers will be conducted throughout the year by KRMSS.

The President of KRMSS Dr. Raghu Akamanchi announced that a national level conference on Higher Education would be held in Bangalore in the month of February 2017. It is decided to invite MHRD Minister and the Minister of Higher Education in Karnataka as guests.

The Meeting was presided over by Dr. Raghu Akamanchi. Prof Rajanna the secretary of KRMSS welcomed the gathering and Dr. Naduvinamath proposed vote of thanks. Prof. Narayana Upadhye, Dr. Kotresh, Dr. G.K Badiger, Prof. Awate and Shashidharayya spoke on various issues. Prof. Veerayya, Prof. Meese, Prof. Prasanna Pandhari, Dr. Dalapati, Dr. Jagatap, Dr. Tallur, Prof. B.M. Badiger, Prof. B N Shadadalli and others participated in the discussion. More than 35college and university teachers from across Karnataka state participated in the meeting held at R H Kulakarni Hall at KLE Technological University, Hubli.